



2011



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

३८

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

[illegible]

५ न
वृज ५

पवना ४ नेत्र साग्व दृजा ४ काम बांग भवजा ४ गगन सप्त न सवजा ॥ १९ ॥ पूर्व वाक्पुनिकाया ४ मेवा ४ मेवि
यकि किग ४ दजिनस्थ पुनिकाया ४ वजपा निखर्ग हाया ॥ २० ॥ पश्चिम सूर्य पनिकाया ४ ला के खे नम ४ ग्राय
सर्दी निवतल विष्कं मि ४ समा कर ४ स्य उरु न ॥ २१ ॥ पूर्व द्वा नयमान क ४ दजिन दाने प्रह्ला न क ४ पश्चि
म द्वा ने प्रह्ला न क ४ उरु न दाने विद्या न क ४ ॥ २२ ॥ गगन को न अचर अलन को ॥ नर्वि नाज नेत्र सूर्य
निजंद सु बाय वेस्य मद्वा वनः ॥ २३ ॥ ये ४ नक्षत्र गगन वाफादि विदिग धिगं धि नाह व वक्तु पृथिवी मत्त स र वं पुव
ज क वच ॥ २४ ॥ ॥ किग वजसत्त काय स्य नक्षत्र गगन वाफ गगन समापं ॥ ॥ शुभ ॥ ॥ यध माणादि ॥
ॐ नमो वक्षय ॥ शुभ वत मा धर्मय ॥ नायिने नमो सुदाय ॥ मरु ल मे नम ॥ ॥ यदवा सो निम नो वन कनक
मन मलि नेय चय क्रापा ना नथ रूजंग स निमनि किन ॥ धस सर्वाध का ना ४ के ला ॥ मि विला से प्र मूदिन
हृदया मे च विद्या धने दा रु मा ज दान रूतं मुनि वल वचन ॥ गुमा या नि सर्व आया ता ॥ पु का अस् न स न नना

सिधगं सर्वनाग ॥ १ ॥ कृष्णसुकिन्ननंशोदागत्रुहसिहनागकुवमादिदवाशपूजापचपचात्रेस्तुतुवननमीतमदि
तिन्नंरुयुरुहकुहेवाचयामिपममिरसीनसाः तमहापानसुजनमावक्ष्यतमधर्मायनमासथाय ॥ ॐ नमो
श्रीमंशनाय ॥ ४ ॥ अथतजधनसिमानइदोतदमक ४ यल १ ॥ वलाकविजयिवीनागुचनार्कूलि
लाज्वर ॥ १ ॥ विदधपुतुसिका १ पातुहलकमत्रानन ४ पाशालयनवजवनस्यकननमरुमूर ४ ॥ २ ॥
हकुनितनंगप्रभवेननेवजपानिहि १ इदोतदमकेविनेविजवीरुत्सनेपिहि ॥ ३ ॥ उशालयलि ४ स्व
कनन ४ पुस्तवजकाटिहि १ पुष्पागयमहाकननागगदर्थकने ४ पत्रे ॥ ४ ॥ हस्तुष्पागयमदिने ४ कीध
विग्रहत्रपिहि १ वधकल्पकनेनाथे १ साईपुनविग्रहे ॥ ५ ॥ पुष्पागयमहासवधरुगवनंनथगतं ॥ कनोडलिप
गहल्लोडमाहस्थिनोगुत ॥ ६ ॥ मदिनायममाथाय ॥ नकपायमविहा ॥ मायागानाहिसंवाधियथारिह
वामरु ॥ ७ ॥ अहानयंकमगना ॥ कगवाकनचनसा ॥ हिनायवसल ॥ नोमनननरुलापय ॥ ८ ॥ युकासय

धन
नमः
३

सर्वथा रगवागमस्तु रगगुणुत्त॥ ४ महासमयकत्वरु ७२ दियसमयवित्तन॥ ७॥ रगवान् रूपा नकायस्यः महापुष्यसमीपान
मङ्गरी रूपा नसत्त्वस्तु नमूर्तिः ८ स्वयत्वरु ७३ ॥ गतिनाथमूपा नाथमहाधमसमासिवा ९ आदिमध्यांतकरा ती नाम
संगतिमूर्त्तमां १० ॥ मादिनेलाषिगावृधे लपियं नहनागतिः ११ सुत्पत्यन्नेच संवधे याहाखरुपून १२ ॥ माया जान
महातये याचस्मि संप्रगीयत ॥ महावज्रधनेह धी नपुमये मरुध निरिह १३ ॥ अहचे नाधयिष्यामि निर्णीतचहटाग
१४ यथा रगवान् महनाथ सर्वमेव द्युष्टधुके १५ ॥ पुकासमिष्यस्ताना यथासमयविणायक १६ ॥ असुरलकनासाय
अगखरुनहानय १७ ॥ अवमध्यागु म्हावज्रपातिन अगत १८ ॥ लोजलिपुनरुत्तापक कायस्थितीग्रु १९ ॥
अगव २० ॥ रूपा नमथा मङ्ग २१ ॥ अथमकेमनिरगवान् सर्वथा दिपदोहम २२ ॥ निर्लमयीयतास्ती तां स्वजिह्वा स्वम
खां कृतं २३ ॥ स्मिगसंदर्भलोकानामपायकयस्वधन २४ ॥ लोलासकनेतचतुमालाती सासन २५ ॥ तिलाकमापून
यत्वरुमा मधु नमागीना २६ ॥ पुणराखरुगुष्टुडवज्रपाती महावले २७ ॥ साधुवज्रधन २८ ॥ मा साधुवज्रपातिय २९ ॥ यत्वरु

[illegible]

[illegible]

सगमथावबुदगः १॥ १००॥ महावेनाचनवृद्धामहामे निमहामनिः ॥ महासुनयानमः ॥ १ ॥
दगपात्रमिनापाकादगपात्रमिनासयः ॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥
हमिपुर्लिष्टिः १॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥ दगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥
अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥
नथाकानीअनन्यवाकः १ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥
१॥ ४ ॥ सर्वगममोदगतिस्तथागतमनाजवः ॥ जिनाजिनातिदिग्यिचक्रवर्हीमहावलः ॥ ५ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥
गलगमगपतिवसिमहानलवाः ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥
नवादिचवगुः सगपात्रमिनागुद्विदहपात्रमिनानयः ॥ २ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥
काननः १॥ १० ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥ अगवविम्वार्थकनादसाकानवसिमहान ॥ ३ ॥

धन
१२
१

विद्याचरनसंपन्नः १२ गंगा सोवत्पन्नः १३ निर्नमानि नहंका नः १४ यद्यनं वा १५ १२ ॥ संज्ञानपात्रका टिप्पणः १६
१७ ॥ स्थिरः केवलः पद्मानिष्ठः १८ ॥ सत्त्वविदाः निः १९ ॥ सद्भिर्भीषमनाकुलस्य नलाका लोककः २०
२१ ॥ धर्मिग्वजाधर्मी नागा २२ ॥ यो मा २३ ॥ पदगा कः २४ ॥ १५ ॥ सिद्धार्थः मिथिः २५ ॥ सर्वसकलवर्जितः २६ ॥ निर्विक
२७ ॥ आरुधा २८ ॥ मेधा २९ ॥ पनायामः ३० ॥ १५ ॥ पूर्यवान् पूर्यमानो ह्यनहता कसं महत् ३१ ॥ हानवो सद्यो ह हानी सला
३२ ॥ यद्यसं हः ३३ ॥ १५ ॥ गगनविग्वनायागिध्वान ३४ ॥ यो धियापतिपुत्रात्मवेद्याधुतलः ३५ ॥ पनमाधमिकामधुक् ३६
३७ ॥ पचकायात्मकावधः ३८ ॥ पचहानात्मकाविधुः ३९ ॥ पचवृक्षसमूहः ४० ॥ पचरु नसंगः ४१ ॥ १६ ॥ जनकसर्वव
४२ ॥ ज्ञानावधुः ४३ ॥ पनावनः ४४ ॥ पुहृरुवयानिधमोय निरुगवाथा ४५ ॥ १७ ॥ घनेकग्ननावज्जुत्मासधागागाजग
४६ ॥ गगनाहवः ४७ ॥ खयलः ४८ ॥ पुहृरु नानलामहा ४९ ॥ २० ॥ वनाचनो महादिफि हानन्याकिवनाचनः ५० ॥ जगत्
५१ ॥ निपाहाना लोमहानः ५२ ॥ पुहृरु सनः ५३ ॥ २१ ॥ विद्यानागायमः ५४ ॥ मरु नागा महाथः ५५ ॥ महाह्री पाहृगवावि

५

वदन्निवियत्यति २२ ॥ सर्ववृद्ध सारा ॥ १ ॥ गदातदसावन ॥ विष्णुन पिब ॥ अनाचपुष्पा मा न्यामहा ॥ २३ ॥
कुलधर्मधनामंती गहासमयमंशुक ॥ नत्तुयमपनत्तु ॥ २४ ॥ अमाद्यपात्माविजयी वजपा
॥ २५ ॥ महाग्रह ॥ वजाकुम्भमहाग्रहवज्रहेनवहिकन ॥ २६ ॥ अविष्णुधर्म ॥ अतुहानमथा ॥ पचविति ॥ २७ ॥ क्रोधना
॥ २८ ॥ विष्णुधर्म ॥ २९ ॥ पञ्चगुणवति ॥ ३० ॥ कनककालहस्त ॥ ३१ ॥ १ ॥ ममोक्तविष्णुना ॥ अवशवलाभय
कन ॥ ३२ ॥ विष्णुधर्म ॥ ३३ ॥ अमाद्यपात्माविजयी वजपा ॥ ३४ ॥ अचलेकजगत्तपागजव
र्मपताडधुक ॥ ३५ ॥ ३ ॥ हाहाकनामहापाताहीहीकनातयानक ॥ ३६ ॥ अहमसमहापावजसामा महावन ॥ ३७ ॥ ४ ॥ वजसखासनास
त्वावजनामहासूत्र ॥ ३८ ॥ वज्रवज्रमहामाहावज्रहेकालइदुति ॥ ३९ ॥ ५ ॥ वज्रसाममधुनादगुगर्ग ॥ ४० ॥ तिकुन ॥ ४१ ॥ दिग्बवजधनावजि
लकवजीलनेग्रह ॥ ४२ ॥ ६ ॥ वज्रसालाकलागावज्रनासिनानरु ॥ ४३ ॥ ७ ॥ वज्रनामाद
नानवजनामेकविष्णु ॥ ४४ ॥ वज्रकातिनरुनरावजमालदीनचुवि ॥ ४५ ॥ ८ ॥ वज्रनामाद
नानवजनामेकविष्णु ॥ ४६ ॥ वज्रकातिनरुनरावजमालदीनचुवि ॥ ४७ ॥ ९ ॥ वज्रनामाद

[illegible]

[illegible]

॥ २२ ॥ वानदः अनिरायः ॥ सुदृढः विवृद्धः उमाः सर्वः ॥ सर्वः ॥ २२ ॥ निहः नयेद्यमनतिनाः कानवद्वनूपः ॥
तिर्विकल्पा निनासः ॥ सुदृढः सर्वः ॥ २२ ॥ अनादिनिधनावधः आदिव्यानिनन्वयः ॥ हानेकचहनेम
लः ॥ हानमूकिसुखागः ॥ २३ ॥ वागीश्वरः सनावादिः नादिनावातिदिपुगवः ॥ वननावनवधः ॥ आदिसिंह
पनाजिः ॥ २४ ॥ समनदग्रीपामायः राजानाति सुदग्नः शाया माक्षुपुलादि कीर्तनासनकनयति ॥ २५ ॥
महारीषधनः ॥ अष्टगनहर्षनिवृत्तः ॥ असखलखधनः ॥ केमया धिनहासिपुः ॥ २६ ॥ प्रेलाकृतिलक
कातः ॥ योमानकयमदलः ॥ दगदिगया सपर्यताः धर्मधनमहाकुयः ॥ २७ ॥ अयच्छुतिकविपुला मेणीक नृपम
लः ॥ पञ्चतिर्लखनः ॥ योमाननत्तकृता महाविभुः ॥ २८ ॥ सर्ववृद्धा महाराजः ॥ सर्ववृद्धा सखधकः ॥ सर्ववृद्धमहा
योगः ॥ सर्वधकः ॥ २९ ॥ वज्रनत्तालिषकः ॥ योसर्वनत्ताधिपः ॥ सर्वलोकः ॥ वज्रनपतिः ॥ सर्ववज्रधनाधिपः
॥ ३० ॥ सर्ववृद्धमहाविहः ॥ सर्ववृद्धमनागतीः ॥ सर्ववृद्धसनाकायः ॥ सर्ववृद्धसनसूतिः ॥ ३१ ॥ वज्रसूयः महा

कलाकवजं विमलपराविनागमिमहात्मविश्वरूपं तपः ३३ ॥ सर्ववशपर्यकावधसंगो न धर्म्यक
वधपुनरवर्ग्यमानहर्वहृत्तनकागधक ॥ ३४ ॥ अथमायाधनानां विद्याधनमहानवजं किममहाखे
रुविगुधपनमाकन ३५ ॥ इत्येवमुक्तमेहमानवजधर्ममहायुध ॥ शिवाक्षिण्यजगलीयवजवधिर्यथैक ॥
३६ ॥ सर्वपानमिगपुनिसर्वरुमिविरुत्तन ॥ विगुधधर्मननात्मासम्यक्ज्ञानइहन्पु ३७ ॥ मायाजान
महायागः सर्वतज्ञापियं पन ॥ अथैववजपर्यकानि विद्याधनकायधक ३८ ॥ समन्तर ३९ समन्ति ४
किनिगर्लजगत्पति ४० सर्वगैलौ बुद्धमहागर्लविश्वनिमाचकधक ४१ ॥ सर्वलवस्वलावाग् ४२ ॥ सर्वलव
स्वलावधक ४३ ॥ अतुत्पादधर्मविश्वार्थ ४४ ॥ सर्वधर्मस्वलावधक ४५ ॥ किमिगसुपुसनात्मासमेकसर्ववधविधक ४६ ॥ पु
न ४७ ॥ सर्ववद्वानाज्ञानविहसुपुलास्वन ४८ ॥ ४९ ॥ पुनर्व ५० ॥ पुनगमधवाचलात्रिगत ५१ ॥ ५२ ॥ अर्थसाधक ५३ ॥ पन
सर्वपायविश्वधक ५४ ॥ सर्वस्वलाहमानाथ ५५ ॥ सर्वहस्वलावधक ५६ ॥ ५७ ॥ किमसमनसूनक ५८ ॥ अज्ञाननिपुनपुर्त ५९ ॥ धर्म्य

[illegible]

सर्वनिर्यासकः ॥ १३ ॥ दादगमगवाहानाः दादगमकागमधकः ॥ चतुःसंख्येनयाकानः चतुःसंख्येनयाववा ॥
धकः ॥ १४ ॥ दादगमकागमसंख्येनयाथः ॥ पाठगमकागमकविविधः ॥ विगमकागमसंख्येनयाववा ॥ १५ ॥ अम
सर्वनिमानः ॥ कायकागमिविलवकः ॥ सर्वकनारिसमयः ॥ सर्वचित्ताकः ॥ अर्थवित् ॥ १६ ॥ नागायाननकापा
यजगदधीधिलवकः ॥ यानतिमयनिर्याकः ॥ दमानरुनसिद्धः ॥ १७ ॥ केगधनुविगुधात्माधर्मधनु
जयंकनः ॥ गद्यादधिसमूही ॥ योगकागमनिर्याकः ॥ १८ ॥ केगधनुविगुधात्माधर्मधनु
लकनूनाः ॥ अमाधजदेगर्थकः ॥ १९ ॥ सर्वसंख्येनयाविना ॥ विनानाथानिनाधकः ॥ सर्वसत्त्वमनावित्त्वमः ॥
सर्वसत्त्वमनागनी ॥ २० ॥ सर्वसत्त्वमनाकः ॥ सुचित्समनाकः ॥ सर्वसत्त्वमनानस्यः ॥ सर्वसत्त्वमनानति
॥ २१ ॥ सिद्धो गविजमापः ॥ सर्वशक्तिविवर्जितः ॥ निःसदिग्धमनिस्यः ॥ सर्वाधनिगुनात्मकः ॥ २२
पदस्यार्थवित्कातः ॥ सर्वकनविलवकः ॥ चकनारिसंख्येनयाववा ॥ २३ ॥ अनेगकायकाया

म ॥ १ ॥ कायकापि विरायक ॥ २ ॥ श्री गुरु नृप सदा श्री नृत्त कं तुर्महामनि ॥ २८ ॥ समता हान गम थचतु विग नि ॥
 ॥ सर्वं संयुध धा धवा वृधवा धिन नृत्तन ॥ अनङ्ग का मय्यानिर्महाम नृत्तल यय ॥ १ ॥ सर्वमद्रा
 र्थ जनका मद्रा विरनन नृत्त ॥ पंचाङ्गनी महाम संन्या विरगु न्य ॥ २ ॥ सर्वकाननिनाका नः
 पाद गम का ड विर धका ॥ अकल १ कनता निरुग्वतु धि नका दिधक ॥ ३ ॥ सर्वश्चानक ला रिह ॥ समापि कुलः
 गम विरु समपि काय को मागु ॥ सर्वमहा ग काय नाट ॥ ४ ॥ निमान काये का ॥ ५ ॥ अधनिर्मा तव धक ॥ दग दिरि
 ग्वनिमाना ज ॥ भवजगदर्थ कृत् ॥ ६ ॥ दवातिदवादि वद ॥ सुनेडा दानवाधिप ॥ ७ ॥ मनड ॥ मूनगुन ॥ पुमार्थ ॥
 पुम ॥ थग्व न ॥ ८ ॥ उक्ति ॥ नवका तातः ॥ कमास्त ॥ गगन ॥ ९ ॥ पुल्या न दग दि ग ला कः ॥ धमो दानपति महान ॥
 १० ॥ मे ग्री सना हस नृ ॥ कव नोर्वमवर्मित ॥ ११ ॥ धन ॥ धनवान ॥ किम हानन ते जह ॥ १२ ॥ माना निमान जिह्वीन ॥
 ग्वठ मीन नृ योन कृत् ॥ सर्वमाल चमूजना ॥ सर्वधलाक ॥ १३ ॥ वय ॥ पूरति वायव्यः ॥ मोतति यचनि ह्यग ॥ १४ ॥ अचनि

यत्तन्मामान्या नमस्य ४ पनमगुन ४० १०० ॥ ऐलाकेककुमगतिः वासिपर्यन्तविकुम ४० ॥ वीथ्यः १० ॥ अजियपूतः
खगहिरूः ४ पनसूति ४० ११ ॥ वाधिसत्तामहासत्ताः लाकानिगामहर्षिक ४० ॥ पुष्पापानमिगानिष्टः ४ पुष्पागता
समागतः ४० १२ ॥ आत्मवित्तनविसर्वः सवाधैर्योग्यगवः ४० ॥ सर्वापिमा मतिकोकाः रुपाहनाधिपः ४ पन ४० १३
॥ धर्मदानपतिः ४० ॥ कुचमुदार्थदगक ४० ॥ पद्यपात्यनमागताः निर्यातिगययायताः ४० १४ ॥ पनमाधविगुदय
कुलाकगुरुगामहान् ॥ सर्वसपत्नः ४० ॥ गीमानसह्याः ४० ॥ मगोवनः ४० १५ ॥ रुपादकानहानगमथापचदग
४० १६ ॥ नमस्तुवनदवजागुः ४० ॥ रुपाकानिनमस्तु ४० ॥ नमस्तुगुनतागरः ४० ॥ वृधवाधिनमस्तु ४० १७ ॥ वृधवागनम
स्तु ४० ॥ वृधकायनमानम ४० ॥ वृधपितिनमस्तु ४० ॥ वृधमाहनमानम ४० १८ ॥ वृधस्तननमस्तु ४० ॥ वृधहासत
मानम ४० ॥ वृधवावनमस्तु ४० ॥ वृधलावनमानम ४० १९ ॥ वृधवाहनमस्तु ४० ॥ नमस्तुवृधसंखवः ४० ॥ गगता
हवनमस्तु ४० ॥ नमस्तु ४० ॥ नमस्तु ४० ॥ २० ॥ मायागतनमस्तु ४० ॥ नमस्तुवृधनाक ४० ॥ नमस्तु सर्वसत्तया ४०

90

[illegible]

9

[illegible]

बुध
११

पयिष्यन्ति नाम धयमा प्रमपि गमयन्ति वा यथा के १ यावत्तु वृकगवे मपि ग्रहकृता धम नयिष्यन्ति १ प्रपुध
पदिपमा ल्य विल्यपवर्ध्नी वल्लवध्व नद्यध्व यथा कालि १ पूजयिष्यन्ति १ कपलिति वि ॥ मयपूननवदवर्षग
का मुधारुविषयानि ॥ यवखनपूनमरुग्रीसत्वा सुस्यपलितिकायू हान सुविनिविक्तकाज्ञानाया कथमगता
माहके समस्तवृद्धायेना मा स्तान्नगि प्रग्रायानि धनयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति १ कपा मपि आ यविवर्धयिष्यन्ति
१ तस्म नर्हि मरुग्रीदीर्घायुष्य कापार्थयिष्यु का मा १ कृतपूजावाकृत्त ३ हिमावा नस्यापलितिकायू सुथा गत
स्याना माया सतगकं ॥ गमयन्ति लिखिष्यन्ति लिखा पयिष्यन्ति कला मपि मग्नाना नृससाहसि मयि १ ० कुं नः
मा रगवत अयलितिकायू हान सुविनिविक्तकाज्ञानाया कथमगताया हं कस्यैव वृद्धाय कथयिष्यन्ति १ प्रपुध
माहापून अयलितिकपुत्र अयलितिका यूपल्लहान सहातापविक्तुं सर्वस्वा नपनिगुधधुर्मकगग न समुद्रक
स शवविगुध मदानमपलितिका ने स्ताहा १ १ ॥ १० मं मरुग्रीसु था गत सा मा स्तान्नगि कयक विनिविक्तका

११

[illegible]

कृष्ण
१२

वि नं कुं नमो रग वरु अ प ति मि ना य ह न सु वि नि मि त्त र न न जा ना ना या रु थ ग ना यार् ह न स म य कृ व द्वा य ॥ १ ॥ अ ॥
ॐ पृ ॥ २ ॥ महा पृ ॥ अ प ति मि त्त र पृ ॥ अ प ति मि ना य पृ ॥ ह न स र ना प वि न ॥ १ ॥ सर्व स क्ता न प ति गु ध ध र्म त
ग ग न स मृ ज न स्तु ता व वि गु ढ म हा न य प ति वा न स्ता हा ॥ २ ॥ न न त्व त्प न १ स म य म फ स क ना व द्वा का टि ना
म क म न नै क स न न १ ० ० ० म प ति मि ना य १ मृ त्त ल पि न ॥ १ ॥ नमो रग वरु अ प ति मि ना य ह न सु वि नि मि त्त र
न न जा ना ना या रु थ ग ना यार् ह न स म य कृ व द्वा य ॥ १ ॥ अ ॥ ॐ पृ ॥ २ ॥ महा पृ ॥ अ प ति मि त्त र पृ ॥ अ प ति मि ना य पृ ॥ ह
न स र ना प वि न ॥ १ ॥ सर्व स क्ता न प ति गु ध ध र्म त ग ग न स मृ ज न स्तु ता व वि गु ढ म हा न य प ति वा न स्ता हा ॥ १ ॥ न न
त्व त्प न १ स म य न प च व क ना व द्वा का टि ना म क म न नै क स न न १ ० ० ० म । ति मि ना य १ मृ त्त ल पि न ॥ १ ॥ नमो र
ग वरु अ प ति मि ना य ह न सु वि नि मि त्त र न न जा ना ना या रु थ ग ना यार् ह न स म य कृ व द्वा य ॥ १ ॥ अ ॥ ॐ पृ ॥ २ ॥
हा पृ ॥ अ प ति मि त्त र पृ ॥ अ प ति मि ना य पृ ॥ ह न स र ना प वि न ॥ १ ॥ सर्व स क्ता न प ति गु ध ध र्म त ग ग न स

मर्गनस्त्रावविगुहमहानयपनिवानस्त्राहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ पच, पचा। गतिनावृधकादिनामकमन
नेकसनेननदमपनिमिनायसुखंलपिना ॥ २ ॥ नमा हगवतश्चपनिमिनाय हानसुविनिश्चितकयागाजायानथाग
गायाहकसम्यक्वृधाय ॥ ३ ॥ पत्त २ महापुत्त ४ पनिमिनाय ४ पनिमिनाय ४ पत्त हानसेलानापचिना ॥
॥ सर्वसस्त्रानपनिमिनायसुखंलपिना गगनसमृद्धकसलवविगुहमहानयपनिवानस्त्राहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ स
मयतश्चत्तानिगतीनावृधकादिनामकमननेकसनेननदमपनिमिनायसुखंलपिना ॥ २ ॥ नमा हगवतश्चपनिमि
नाय हानसुविनिश्चितकयागाजायानथागगायाहकसम्यक्वृधाय ॥ ३ ॥ पत्त २ महापुत्त ४ पनिमिनाय ४
४ पनिमिनाय ४ पत्त हानसेलानापचिना ॥ ४ ॥ सर्वसस्त्रानपनिमिनायसुखंलपिना गगनसमृद्धकसलवविगुहमहान
यपनिवानस्त्राहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ समयनपचविगतिनावृधकादिनामकमननेकसनेननदमपनिमि
नायसुखंलपिना ॥ २ ॥ नमा हगवतश्चपनिमिनाय हानसुविनिश्चितकयागाजायानथागगायाहकसम्यक्वृधाय

अष्ट
१३

नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपलिमि नाय पू ॥ हानसरा ना पवि न ॥ ॐ सर्व संस्कार नपत्रिगु ॥
 धर्म नग ग ॥ समूह न स्वरा वविगु ॥ महानय पत्रिवा न स्वाहा ॥ १० ॥ न नखलू पू न ४ समय दग ग म नदिवा
 लू का पमानां वध कारि नां मक मक ने क ख न न ॥ १० दमप त्रिमि का य सू कुं ला वि न ॥ ॐ न मा रुग व न अपत्रि
 मि नाय हानसू विनिश्चि त न ना नाया ह न सम्य क व धा य ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अ
 पत्रिमि नाय पू ॥ हानसं रा ना पवि न ॥ ॐ सर्व संस्कार नपत्रिगु ॥ धर्म नग ग ॥ समूह न स्वरा वविगु ॥ महान
 य पत्रिवा न स्वाहा ॥ ११ ॥ य ॥ दमप त्रिमि नाय पू ॥ सू ॥ लिखि षं मि लि खा प वि षं ति सग ना य पा र्व खग
 ना म्पा र वि ष कि ॥ ॐ न मा रुग व न अपलि मि नाय ॥ न सू वि निश्चि त न ना नाया ह न सम्य क
 व धा य ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपत्रिमि नाय पू ॥ हानसरा ना पवि न ॥ ॐ सर्व सं
 नप त्रिगु ॥ धर्म नग ग न समूह न स्वरा वविगु ॥ महानय पत्रिवा न स्वाहा ॥ १२ ॥ य ॥ दमप त्रिमि नाय

४सू३। लिखिष्यंति लिखपयिष्यंति सतकदाचिन्तकषूपपद्यंते नतिर्योग्यनि नयमला कनचरुत्तपपहो नकदा
चिन्तयन्ति न स्युः के॥ यद्ययजमपपद्यंते नय नयमानो जातिस्मनारुविष्कि॥ ॐ नमो गवत अपनिमिनाय ह्रीं नसूवि
निश्चिन्तकज्ञानायाय सुत्तगगाया ह्रीं नसमकवक्षय॥ नयथा॥ ॐ पू॥ २ महापू॥ अपनिमिषत्त अपनिमिनाय पू॥
॥ ह्रीं नसलाना पवि॥ ॐ सर्वसंस्कानपनिगुडधर्मनगग॥ समरुत स्वलावविगुडमहानयपनिवानसाहा॥ १३
॥ य॥ ४०० दमपनिमिनाय ४सू३ लिखिष्यंति लिखपयिष्यंति॥ कनचरु नयि कि धर्मनाजिकासहसा निपुनिकापिना निल
विषा कि॥ ॐ नमो गवत अपनिमिनाय ह्रीं नसूवि निश्चिन्तकज्ञानायाय सुत्तगगाया ह्रीं नसमकवक्षय॥ नयथा॥ पू॥
महापू॥ अपनिमिनाय पू॥ ह्रीं नसलाना पवि॥ ॐ सर्वसंस्कानपनिगुडधर्मनगग॥ समरुत स्वलावविगुडमहान
यपनिवानसाहा॥ १३॥ य॥ ४०० दमपनिमिनाय ४सू३ लिखिष्यंति लिखपयिष्यंति पनस्य पंचानंत र्यानि कर्माव
न॥ पनिगुयगच्छंति॥ ॐ नमो गवत अपनिमिनाय ह्रीं नसूवि निश्चिन्तकज्ञानायाय सुत्तगगाया ह्रीं नसमकवक्षय॥ न

[illegible]

[illegible]

१३
१५

पदगवेत्तु तावदति य चरु विषयं नि निर्या (अनिग कानो म गय कि नाद कि (अ क र्त्तु पट नि पु रि ष्ठ मि ॥ न सर्वे ॥
अ नू क ना या स म्म क्ते वा पि म ति सं हा त्प न्क ॥ ॐ न मा र्ग व रु अ प नि मि त्त य ह्म न सु वि नि श्रु त रु जा ना ना य स क
था ग ना या र्ह न स म्म क्ते व ध य ॥ न य धा ॥ ॐ प ॥ २ म हा प ॥ अ प नि मि त्त य ह्म न सु वि नि श्रु त रु जा ना ना य स क
ना य चि त्त ॥ ॐ वे सै सं स्का न य नि सु र ध म्म न ग ग त्त स म्म क्ते स्व ता व वि ग्म म हा न य प नि वा न स्वा हा ॥ १०
॥ य १ ॥ १० दं म य नि मि त्त य १ सु र ति रि ष्ठ य नि रि ता प यि ष्ठ नि क र्त्तु मि त्त रु को म क्ते वा चि द पि पु रि ल्य ष्ठ न
॥ ॐ न मा र्ग व रु अ प नि मि त्त य ह्म न सु वि नि श्रु त रु जा ना ना य स क था ग ना या र्ह न स म्म क्ते व ध य ॥ न य धा
॥ ॐ प ॥ २ म हा प ॥ अ प नि मि त्त य ह्म न सु वि नि श्रु त रु जा ना ना य चि त्त ॥ ॐ सर्व सं स्का न य नि सु र ध म्म न ग
ग त्त स म्म क्ते स्व ता व वि ग्म म हा न य प नि वा न स्वा हा ॥ २१ ॥ य १ ॥ १० दं म य नि मि त्त य १ सु र ति रि ष्ठ य नि रि ता प यि ष्ठ नि क र्त्तु मि त्त रु को म क्ते वा चि द पि पु रि ल्य ष्ठ न
य १ सु दि ग्ध य १ क म पि का र्त्त य दा न दा सं मि ॥ न न पि सा ह सु म हा सा ह सु ता क धा रु स फ न त्त म ये प ति प ॥ १

१३

कृत्वा दानं दया रु स्य पृथक् सस्क धस्य प्र मा न गन मि तु न त्व मप नि मि ता य ४ सु दय पृथक् स्के धस्य प्र मा न गन मि तु
 ॐ नमो रू गवत ऋ प नि मि ता य हान सु वि नि श्चि त क र्ण ना गाय स क था ग ना या ह न क स म्प क व ध य ॥ ॐ पृथक् २ महा
 पृथक् ऋ प नि मि त पृथक् ऋ प नि मि ता य पृथक् हान सं ल ना प चि त ॥ ॐ सर्व स्को र्प न सु ध ध र्म न ग ग न स म्प क के ख ल व
 वि गृ ध्म महा न य प नि वा न स्वा हा ॥ २२ ॥ य ४ रु दं म प नि मि ता य म् रु ध र्म न क स पृथक् पि षा नि क न स क ल स मा फे
 सु ध र्म पि नि क र व नि ॥ ॐ नमो रू गवत ऋ प नि मि ता य हान सु वि नि श्चि त क र्ण ना गाय स क था ग ना या ह न क स म्प क व ध य
 ॥ ॐ पृथक् २ महा पृथक् ऋ प नि मि त पृथक् ऋ प नि मि ता य पृथक् हान सं ल ना या प चि त ॥ ॐ सर्व सं स्का न प नि प नि सु ह
 ध र्म न ग ग स म्प र्ग क ख ल व वि क स महा न य प नि वा न स्वा हा ॥ २३ ॥ य था वि प श्चि ति वि ग्व रू व क क रू क न क म नि
 का स्य प ग म् म नि पु रू ति ना क था ग ना नां स म्प क व ध य स फ न त्व म य प नि पू कृ त्वा या व र न स पृथक् स्के ध स्य प्र
 मा न स रू ग न मि तु न त्व प नि मि ता य ४ सु दय पृथक् स्के ध स्य प्र मा न स रू ग न मि तु ॥ ॐ नमो रू गवत ऋ प नि मि ता य हान सु वि

● 2010年10月10日

92

निमित्तं न जानाया यत्तथा गता याहं कसंसेम कंबु धाय ॥ नमः ॥ ॐ पुनः २ महापुत्र अपनिमित्तं न पुनः अपनिमित्तं न पुनः
हानसहनापचिन्ते ॥ ॐ सर्वसंस्कारानि गच्छन् धर्मगतं स मुक्तं स्वतः वच्छेदं न हानयपनिमित्तं न स्वाहा ॥ २६ ॥
यथासम्यक् न पर्वतः जायते सफ न तत्रागि कृत्वा न दद्यात् सपुत्रः स्वस्य पुमान् गच्छेत् यीतुं ॥ न त्वपनिमित्तं
युः ४ सुष्ठु मस्य पुत्रः स्वस्य पुमान् गच्छेत् यीतुं ॥ यथा न त्वा नो महासमुद्र उदकं पतियुः रुवेयं तु के क विन्द गत
यितुं ॥ न त्वपनिमित्तं युः ४ सुष्ठु मस्य पुमान् गच्छेत् यीतुं ॥ ॐ नमो रुगवत अपनिमित्तं न पुनः अपनिमित्तं न पुनः
गताय स तथा गताया हं कसंसेम कंबु धाय ॥ नमः ॥ ॐ पुनः २ महापुत्र अपनिमित्तं न पुनः अपनिमित्तं न पुनः
पचिन्ते ॥ ॐ सर्वसंस्कारानि गच्छन् धर्मगतं स मुक्तं स्वतः वच्छेदं न हानयपनिमित्तं न स्वाहा ॥ २५ ॥ यः ४ सुष्ठु मस्य पुत्रः
यायः ४ सुष्ठु मस्य पुत्रः स्वस्य पुमान् गच्छेत् यीतुं ॥ न त्वपनिमित्तं युः ४ सुष्ठु मस्य पुमान् गच्छेत् यीतुं ॥ ॐ नमो रुगवत अपनिमित्तं न पुनः
यं वरु विष्णुं किं ॥ ॐ नमो रुगवत अपनिमित्तं न पुनः अपनिमित्तं न पुनः

ॐ पृथ्वी महापृथ्वी अथ निमित्तपृथ्वी अथ निमित्तपृथ्वी ह्यनसंलाना पचित ॥ ॐ सर्वे संस्कारा पप्रिसुद्धधर्मैकगतासमृद्धनस
सत्तावविगुह्यमहानयपनिवा न स्वाहा ॥ २६ ॥ अथ एतावत्संस्कारा मन्त्रायां ॐ मागध अथ एतावत्संस्कारा ॥ ॐ ॥ दानवतनस
सूक्तवृद्ध दानवलाधिगता नलसिंहा दानवतस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ २७ ॥ गो लवननस
सूक्तवृद्धा गो नवनाधिगता नलसिंहा गो नवनस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ २८ ॥ गो नवननसमृद्धनव
द्धा गो नवि ननाधिगता नलसिंहा गो नवतस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ २९ ॥ वीर्यवनतसमृद्धनव
वीर्यवलाधिगता नलसिंहा वीर्यवनस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ ३० ॥ अथ नवलतसमृद्धनव
अथ नवललाधिगता नलसिंहा अथ नवलस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ ३१ ॥ अथ नवलतसमृद्धनव
अथ नवललाधिगता नलसिंहा अथ नवलस्य च गुह्यमकि सद्धा का नृनेकस्य पुत्रपुविगमकं ॥ ३२ ॥ ॐ नमो भगवते अथ निमि
तायः ह्यतस्त्विनिश्चितं नमो नमो यस्तथा गताया हं न सस्य कवृद्धाया न यथा ॐ पृथ्वी महापृथ्वी अथ निमित्तपृथ्वी अथ नि

५५
१७

मिगपुत्र अ पात्रमिनाय पुत्र हन संता नापचिन् ॥ कुं सर्वसंस्कान पत्रिगुह धर्मीक गगन म मरुत स्वलो व विरुद्ध माहा नय
पत्रिवात्र स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ दमवाचरुगवाना लमनासु चरिहृता धिस लो महास लो मावसवा वीर पवम दममा नुवा सुनगरु
किन्नग शर्वचलाकारुग ॥ वना लघि कम सन नु विनि ॥ अथ न पत्रिमिना नाम धान लो माहा यान सना फे ॥
जधर्माद्यादि ॥ १२ ॥ ॐ न मा रंगवती आर्य पक्षा पाल मिनाये ॥ न वं मया यथ नम कसित्स मय रंगवानुग्रव
स्वा मिह न किस्म ॥ १३ ॥ न वने इ नाथ पिह दसा नाम मरुता रि ऊ सद्य न माह प लिपु र्हे नाह ना रि ऊ सह म श्वो धिस
लो नाच महास लो नाम महास वाह नु ना पपु र्हे दग रि वा धिस ल्व सन सह सु ॥ साह सर्वत्र विनिव र्हे नि ये न नु ल
नाया स म ल्व वा ॥ १४ ॥ नय थ ॥ म र्हे र्गो याच वू मा लरु तेन मे ये ये न व र्हे स र्हे पति हाने ल व अ नि रि क धू न न व ॥
न वप म र्हे दग रि वा धिस ल्व गन सह सु ॥ अथ स ल्व म र्हे र्गो याच वू मा लरु तेन मे ये ये न व र्हे स र्हे पति हाने ल व अ नि रि क धू न न व ॥
त्रि कु म्पा न न र्था गन विहान रु ना प संक्राम इ प स वूम व हि द्वा विहान रि गो रु रु था गन स्य र्द ग ना य प य पा

१७

सनाया ॥ अथ यथा त्रिभिर्नद निपुत्रः ॥ सुकादि हाना त्रिभुवय नरुग न विह नरु नाप संका नरुग व नरुग नाय
व न नाय पय पा स नाय ॥ अथ यथा न पिपुत्र मे द्राय निपुत्रः ॥ अथ यथा न पिमहा मे स नाय नः ॥ अथ यथा न
पिमहा काय पशा अथ यथा न पिमहा कायाय नः ॥ अथ यथा न पिमहा को विलः ॥ सर्व एव न च न च म हा मुव का ॥
सु क स्व के ला विहा न रा त्रिभुवय नरुग व न विहा नरु नाप संका नाउ प संका मु कान नरु ॥ अथ यथा नरुग
नरुको ना त्रिभुवय नरुग व क संत्रिपा न विदि चा सुको दिहा ना त्रिभुवय नरुग व हिहा त्रिहा न सी को के पुत्र फ न वा स न
नो यो व न ॥ निरुव च नरुग वा न ग न न वा य म न ग न न द निपुत्र मा म नु य न र्म ॥ क न र्म ल द नो पुत्र क र्म म वा ग न
नरुग न विहा ल द न स्थि न ॥ ल व म क अथ यथा अथ न द नो य पुत्रा नरुग व क म न द वा च न ॥ सर्व एव न नरुग व न र्म
॥ श्री य क मा ल र्म मा म नु य न र्म ॥ म र्म विल त्व म र्म र्म ॥ सर्व एव न नरुग व न र्म ॥ नरुग न र्म
द र्म नाय पय पा स ना ॥ ल व म क म र्म र्म ॥ क मा ल र्म नरुग व क म न द वा च न ॥ ल व म न र्म ग व न र्म म न र्म ग न ॥

१८

सर्वप्रथम नमः सागर ४ स्वकादिहनात्रिक्रमयेन नथागतविहनास्तनापसंक्रान्त उपसंक्रान्त स्थिता रागाव
 नादगनाय पर्युपासनाय ॥ नत्क साधना कथा हिरुगवन्त यथा हनथागत सादगनि नवद नया पर्युपासनेन च
 यदयहं रगवस्तथागत मपसंक्रमासिदं सनाय च नयाय पर्युपासनाय न सर्वसत्त्वानामर्थयसच हगवस्तथाग
 नादपूर्वादि नवा ४ पर्युपासितवा ४ न वदपु ४ न वदित नवा ४ पर्युपासितवा यथा हं पस्यामि ॥ यथा हं वन्दे ॥ यथा
 हं पर्युपास्य ॥ न वं नथागतो दृष्टा त्वनि न वदि ४ पर्युपासित ग्व ॥ अहं च रगवन्त सर्वसत्त्वाना कृता ४ नथागत पस्या
 मी ॥ न गवा नाह ॥ कथं मरुगी ४ नथागतो दृष्टा यावत् पर्युपासी न व ४ मरुशी नाह ॥ नथना का ने नथागत पस्या
 मि ॥ अवि कल्या का ने ना नूपनं रुया जत ॥ न वं मरुत्या दा को ने नथागत पस्यामि ॥ यावद जा वा का ने नथा पस्या
 मि ॥ न च नथागत समुदा ग कृति न वं नथागत पस्यामि ॥ नथ ना ह व नि विर व नि ॥ न वं नथागत पस्यामि न नथ
 नादग स्था न पुदग स्था न न वं नथागत पस्यामि ॥ नथ ना अति नां गत प्रस्तु ना न वं नथागत पस्यामि न नथा

१९

गद्ययपुलविना नाद्ययपुलविना ॥ एवं तथागतं पञ्चमि ॥ नृकथनासं किञ्चन ॥ नद्यवदायने ॥ एवं तथागतं प
स्यासि ॥ नृकथना उत्पद्यते न नित्रधुन ॥ एवं तथागतं पस्यामि ॥ एवं तथागतं हृदयवति ॥ वदिनः पद्यवासित
ञ्च ॥ एवं मूके रंगवानमरुशीयं कुमारं नृकथनमेकदवाचन ॥ एवं पञ्चत्वं मरुशीः किंप्रसक्तिः मरुशीनाह ॥ एवं तपस्य
नृहृत्गवत् किञ्चित्पस्यामि ॥ एवं समहृत्गतं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि ॥ न नित्राद्यपस्यामि ॥ आथाय प्याय
नद्वीयपुत्रा मरुशीयं कुमारं नृकथनमेकदवाचन ॥ इत्येकत्रकात् नृकथनमेकदवाचन ॥ एवं पञ्चत्वं पस्यामि ॥ एवं पञ्चत्वं पस्यामि
चरुसर्वसत्त्वानामतिके महामेघी पद्य पस्थितानचने काचित्पस्यामि ॥ सत्त्वानि निवेद्य भवासर्वसत्त्वानि निवेद्य
यथासिपुत्रिपुत्रानचनकाचित्पस्यामि ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि
जनयाददत्तावयागना ॥ एवं मूके मरुशीः कुमारं नृकथनमेकदवाचन ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि
नद्वीयपुत्रयथा कथयाने सर्वसत्त्वपनिनिवेद्य ॥ यथासिपुत्रिपुत्रानचनकाचित्पस्यामि ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि ॥ एवं तन्मन्त्रकस्य विधर्मस्यात्पादं पस्यामि

भक्त
पुस्तक
१६

अथ नामं रदक गगन नदी पूर्व सन्नाह ॥ एवं सन्नाह ॥ कथं महं सत्त्व धा नानुत्तवं वा कुर्यात् पूर्वस्ति म्म स च हृदक गगन नदी पूर्व
पत्रिक लम्बाय च के कस्मिन् वधु उगंगान दिवात्र को समावधु एगव का रवयु न के कश्चन था गगो गगन दिवात्र को समो
कलां सिद्धि स चा विदिवधु धर्मो दग यमान च के कया धर्मो दग नया याव का गगन दिवात्र को समेव धो र्ग वा नोहं ४ सत्त्वा
विनिग सा वन ४ सत्त्वा ने के के सत्त्व गत च के कया धर्मो दग नया विनयत् ॥ च कमपि कृत्वा ने व सत्त्व धा को नून त्व म्वा पूर्व
म्या म्हा मने ॥ नत्क साद गो ४ सत्त्व विविक स्वात्स स्वात्स च हृदक गगन नदी पूर्व सत्त्व धा गो नो वान त्व म्वा पूर्व त्व म्वा यने
च वमू के श्राम्पा न गगन नदी गो प्रणाम श्रुती यकू मा लरु नमने द वा चत् ॥ यदि मश्रुती ४ सत्त्व विविक स्वात्स स्वात्स स्वात्स धा गो न
वान त्वे न पूर्व त्वं वा य सहा यन ॥ नत्क सा दानि के धि महि सर्वे धर्मो दग यिषा सि ॥ च वमू के मश्रुती ४ कू मानरु न ४ गाय म्
कं सा नदी पूर्व मने द वा चत् ॥ यदा गो व हृदक सा नदी पूर्व नृप न विरुत्का गति सत्त्वा त्वा न क स्य वा धर्मो द
ग यिषा न ॥ नत्क सा द गो सत्त्वा हि हृदक गगन नदी पूर्व नृप न क नया सर्व धर्मो नृप न वि ४ ॥ अथ व नृग वा नम श्रुति मश्रुती

[illegible]

अनली
२०

समयमहती ४ पुष्पातमिनां तावयसि कनका कूगल मूलनसि समय उपचयंग चतुपचयं वा ॥ मशग्री नाह ॥ नमलग वस्तुसि
समयकि ॥ क्रि लुगल मूलनपचयंग चतुपचयं वा ॥ नातोप पुष्पातमिनां तावयति ॥ यस्य कस्यचिधर्मस्यापचयं वा अत्र पचयं
दाहवति ॥ नमलग वस्तु पुष्पातमिनां तावना दाहिवति ॥ या कस्यचिधर्मस्यापचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा
पुष्पातमिनां तावना या नेवपथ अत्र धर्मी नृणांति ॥ नापि वृध धर्मी नृणांति ॥ नत्कस्माच्चिना सुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
वनान कस्यचिधर्मस्यापचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा अत्र पचयं वा
तिनति वृध धर्मी नृणांति ॥ नत्कस्माच्चिना सुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
पत्रगतक ४ पूर्ण वापानि वानगुको नृणांति ॥ नमलग वस्तु पुष्पातमिनां तावना या नेवपथ अत्र धर्मी नृणांति ॥ नापि वृध धर्मी नृणांति ॥ नत्कस्माच्चिना सुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
वासालग वस्तु पुष्पातमिनां तावना या नेवपथ अत्र धर्मी नृणांति ॥ नापि वृध धर्मी नृणांति ॥ नत्कस्माच्चिना सुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
वा वस्तु नृणांति ॥ नमलग वस्तु पुष्पातमिनां तावना या नेवपथ अत्र धर्मी नृणांति ॥ नापि वृध धर्मी नृणांति ॥ नत्कस्माच्चिना सुथाहिरेगवपुष्पातमिनां

२०

[illegible]

अनन्त

प्रज्ञा

२९

ब्रह्माहमस्मीति नाह ॥ नत्की पुनः ४८ गवत्तु न्यताया अय नायां नही न ता वा अ ह्य य न ॥ एग वानाह ॥ साधू साधु मंशगी न व म व
नत्संशया र्थथा कथ य सिन पुन मशगी न नूतना यो वृद्ध धर्मा ॥ मंशगी नाह ॥ पुन मंशगी न व न नूतना वृद्ध धर्मा ॥ नत्क साध
का सु थ हि एग वरु धर्मा न संविद्यते ॥ ना प स ह्य न न न नूतना वृद्ध धर्मा ॥ पुन न प न एग व न सो प्र ह्य पा न मि
ता ल व ना मा न वृद्ध धर्मा अ मा ना ध न ता ये स म्ब रु न प थ न धर्मा ॥ पु न ना य स म्ब रु न न वृद्ध धर्मा ॥ न मि थ्री न स म्भ न मि थि
पुनं ता व न एग व न पु ह्य पा न मि ता ल व ना प्र ह्य पा न क मि ध र्मा चि क य न न वि ज्ञा नि त्य ॥ एग वानाह ॥ नत्स मंशगी वृद्ध धर्मा
मि नं य सि ॥ मंशगी नाह ॥ ना एग व न चि न य य म ह एग व न वृद्ध धर्मा ॥ प नि मि थि मि थि म्भ य न एग व न पु ह्य पा न मि ता ल व न
क स्य चि न्द र्ज सा वि क ल न प र्प पा ह्ने ना ॥ न म प थ न धर्मा ॥ म मा व क धर्मा ॥ म प थ क वृद्ध धर्मा ॥ म स म्भ क वृद्ध धर्मा ॥ न
॥ नत्क साध का सु भ व न धर्मा मु ह्य पा न मि ता ल व ना या ग म नू मू के ४ कू स प्ठा ना प र्प य ह्ये ता ध र्मा ॥ प थ न ध र्मा न्वा नि दि
एग न् ॥ मंशगी धर्मा न्वा नि दि एग न् ॥ न् ॥ मंशगी ध र्मा न्वा नि दि एग न् ॥ स म्भ क वृद्ध धर्मा न्वा नि दि एग न् ॥ न म क क न या ध र्मा न स म नू प र्प

२९

[illegible]

३२२ किं नृपुंसापात्रमिति निदिगच्छेत्त्वा विमाय किं नो दुगाय किं न स नो समापत्स्य क॥ एवं मूकं मंशुश ४ कुमालहं गलगवन्म १५
 वाचं नृ॥ प्रतिल किं नृगवन् रुयसा माय पापु ह्य कनमिका विनिर्दग ४॥ प्रतिल तु नृ मंशुश निनि रगवा नस्या वाचं नृ॥ नरु
 शा नाह ॥ मखासा रगवन् प्रहृपा लमि ना ला व ना व दि न वा ॥ यान क स्य वि ध र्म सा ध्या ल व ना य पु न्य प सि न्ना ॥ न त्क सा ४
 त्वा सु धा हि रगवन् नि न म्भ ना ॥ सर्व ध र्मा नृ वं ला व ना रगवन् प्रहृपा लमि ना ला व ना ॥ पुन नृप न रगवन् सो प्रहृपा लमि ना ला व
 न ना या न क वि ध र्म सं कि ण क म्वा य व दाय न वा स म नृ स कि नृ वं ला व ना रगवन् प्रहृपा न मि ना ला व ना ॥ सा वि खा ल ग व न् प्र
 हृपा न मि ना ला व ना ॥ अथ त्वत्सु रगवान् मंशुश यं कुमालहं न मा म कु य न म् ॥ किं य क स्य मा म श्वा सु धा ग ना ४॥ प र्यु पा सि ना ४
 मंशुश नाह ॥ या व द्ध रगवन् मा या पु नृ त्व सा चि रु चे न सि का ति नृ ४॥ ४० य न्मा म मा रगवन् न थ ग ना ४ प र्यु पा सि ना ४॥ रगवा ना ह
 न त्व मंशुश ४ वृद्ध ध र्म स सि न्ना ४ मंशुश नाह ॥ व शि त्वा नृ ४ रगवन् ध र्म उ प ल ख न या न वृद्ध ध र्म स सि न्ना ४॥ रगवा ना ह ॥ क स्य
 पु न मंशुश न न वृद्ध ध र्मा ४ मंशुश नाह ॥ रगवन् नृ व ना व द न वृद्ध ध र्मा ४ ति ना म न स वि ष क ना प ल स न कू न ४ पु न न न र्वा म्

२३

विष्णुकि॥ रगवानाह॥ पाफा नमंशुती नसऊना॥ मरुतीनाह॥ नयथा गावदहं रगवत्सऊने वनकिं कथाहमसऊनामन
पाप्मामि॥ रगवानाह॥ नकिं निष॥ रीती मरुती वाधि म॥ सुमंशुतीनाह॥ रगवाने वगावदाधि म॥ निष॥ ४ कथं पुनरह
तिरव॥ सीमि हनका निपुमानि कृत्य॥ रगवानाह॥ हनकाटि त्रिनिमरुती ४ कथं नदधि वचन॥ मरुतीनाह॥ हनका
त्रिनि रगवत्सऊनायसे नदधि वचन॥ रगवानाह॥ किं सन्धाय मंशुती नवदधि मरुतीनाह॥ असे नद रगवत्सऊनाय ४ तेय
सऊनामनि नावसंका मनि रुने वसऊनाम असेकाय ४॥ अथ खलु शाय्या नसा नद निपुत्रा रगवत्सऊनाय नदवावत्॥ किं यथा
रु रगवत्सऊनायिसत्ता महासत्ता रविष्णुकि वाधमय ४ मंषु ह्यापान मिना निर्दग श्रुत्वा धिमात्रु कनाय सिध कि नसऊ
मायत्सऊने॥ अथ खलु मेरु वाधिसत्ता महासत्ता रगवत्सऊनाय नदवावत्॥ आसति हनकायै सत्ता वत्सऊनायिसत्ता महासत्ता रविष्णु
कि वाधमय ४ मंषु ह्यापान मिना निर्दग श्रुत्वा अधिमात्रु कनाय सिध कि नसऊनाय समापत्सऊने॥ नत्क समाह्वना ने धैव रगवत्स
नमावाधियेषाधमा मन्वाधना॥ अथ खलु मरुती ४ कृमात्सऊनाय नदवावत्॥ वक्ष्यंते रगवत्सऊनायिसत्ता महासत्ता ४

१२३
 १२४
 १२५
 १२६
 १२७
 १२८
 १२९
 १३०
 १३१
 १३२
 १३३
 १३४
 १३५
 १३६
 १३७
 १३८
 १३९
 १४०
 १४१
 १४२
 १४३
 १४४
 १४५
 १४६
 १४७
 १४८
 १४९
 १५०
 १५१
 १५२
 १५३
 १५४
 १५५
 १५६
 १५७
 १५८
 १५९
 १६०
 १६१
 १६२
 १६३
 १६४
 १६५
 १६६
 १६७
 १६८
 १६९
 १७०
 १७१
 १७२
 १७३
 १७४
 १७५
 १७६
 १७७
 १७८
 १७९
 १८०
 १८१
 १८२
 १८३
 १८४
 १८५
 १८६
 १८७
 १८८
 १८९
 १९०
 १९१
 १९२
 १९३
 १९४
 १९५
 १९६
 १९७
 १९८
 १९९
 २००

२३

वृधवित्तय० अना नालमिहिरदकगभनदतिपू० ॥ अविहृफिकपदविहृफिकमिति॥ हृदकगभनदतिपू० नकृकविहृपाये
उं संस्तु न त्वं न वाया वद संस्तु न त्वं न वा न कृका च विहृफिक नद विहृफिकं ॥ सर्वधर्मा हिरदकगभनदतिपू० विहृफिकं ॥ न का
स्मादनास्तथा हि सर्वधर्माः संप्रादुर्वा नासि ॥ यस्मिंस्तथा विहृपा ननु ॥ यः पामि ज्ञान कर्मा पुस्त ना अचि न्य पुस्त ना स य वा न्य
पस्त नास्त पस्त नास्त ॥ न त्क स्मादना न्नद चि न्य मि नित्द क गभनदतिपू० अहृद पद मत् ॥ य पवि न्य सम न्न गं ना ने व न स्वर्ग
गामिना ना पाय गम मि नान पति निर्वा स गम मि त ॥ न त्क स्मादना न्नद चि न्य गम ना गम न न पुस्त पस्त ॥ या व न्न पति निर्वा स गम
ना गम न न पुस्त पस्त ॥ य पिरदकगभनदतिपू० व न्तु पुस्त पति विहृपा वस्त ॥ न त्क स्मादना न्नद चि न्य गम ना गम न न पुस्त पस्त
दस्य मत् ॥ इ गुम्बे व न ॥ अमृ न हिरु त्रित्यं यति विहृपा वस्त ॥ उत्पन्न मधिवचनं क न स मि त्प धि स मा रा य हृद क मा न
दति पू० व न्तु न ला क दति ॥ ती मा र वति ॥ न त्क स्मादना न्नद चि न्य गम ना गम न न पुस्त पस्त ॥ अकार हृदकगभनदतिपू० विहृपा
हृमि गृहा द या पति र्गु न ॥ अगभनदगभनदतिपू० त्क न ह नि य द्वा द य पति र्गु क ॥ का ल्य का हृदकगभनदतिपू० विहृपा ना ह ॥

[illegible]

[illegible]

२७
 पुस्तक नानाधा किं हि स वाधवा नापि वाधि। वाधिमहि संवृद्धं ॥ अत्र धनि पूत्र आह ॥ नमः शीला वगाधर्मा धनुन हि संवृद्ध ॥ मर
 २७ श्री आह ॥ नरद कथमत्र धनि पूत्र हगवगाधर्मा धनुन हि संवृद्ध ॥ नरक स्यात्तु कथं हि नरक मत्र धनि पूत्र धर्मा धनुन वरुग वा
 सकृत् पूत्र कूलर हि हृत्तु जीवीय्यं ॥ मंत्र पूत्रा नमिना निदगाय ॥ वाधिम धननाय सिष्य कि न स क सिष्य कि न संक्रा समाप
 क ॥ मूला च पुनिय हिष्य कि न न सान दती पूत्रय न मदान पनमो हविष्य कि ॥ महा दान गमा वि सिद्ध दान पनय स्रगा न दमी पूत्र गीत
 संपना १ पनम विगि पूजी ला १ श्री लयुन संप अया दाय ॥ मंत्र पूत्रा नमिना निदगाय ॥ वाधिम धननाय सिष्य कि न स क सिष्य कि न स
 न्ना समाप त्याप स्रक ॥ न न सान द नि पूत्र प न मया द्वा न्ना पनम ॥ विर्य ॥ पनमि द्वा ने १ पनमया १ य निसमया प्रहृया समया
 समत्या गमा हविष्य कि ॥ न न अत्र ध नि पूत्र वा धिस स्र मस स्र १ या व स्र वा कान व ना पन न सर्व हृत्तु न न समना द्वा गमा हवि
 ष्य कि ॥ मूला मंत्र पूत्रा नमिनि दगाय ॥ वाधिम धननाय सिष्य कि न स क सिष्य कि न स क समाप त्या क ॥ पुन न पन रंग
 न मरुगीय कुमाल हृत्तु न म न द वा च ॥ किं पुन हं मरु १ न द स प न च स्र नरु नां स न्ना स्र वा धिम हि संवा ॥ मरु श्री नाह

२७

[illegible]

२६ नाह ॥ तेन हृदयक गभनद्विपुत्रता गभनमहा नागय र्ह य ॥ एवं मुके आ यथा सा नद्विपुत्रा मंरु श्री ये वृमान हत म नद वी चर
 वृ ४०० निमरु श्री कस्मिन् दधिवचन मंरु श्री नाह ॥ यूप पु न ४ हृदक सा नद्विपुत्र अह ॥ अ नू त्या द ह्ये न मरु श्री न धिवनं ॥ य र ना
 म नि ॥ मंरु श्री नाह ॥ एवं म वरु द क गभनद्विपुत्र य सो न द व च न अ त्म नी क ह्ये न द धिवचनं वृ ४०० नि ॥ अ पि तु हृदक गभनद्वि
 पृ ४ अप दा धिवचन मे न न य दि द मू च न वृ ४०० नि न म हृदक गभनद्विपुत्र स क न य म्ना रि वि हा द धि तु वृ ४०० नि ॥ वा ग पि ल
 द क गभनद्विपुत्र न स क ता नि नू प यि तु मि यं व गी नि क व र हृदक गभनद्विपुत्र यः य व म्ब द हि ॥ ०० दं स न्ध म हृदक गभनद्विपु
 यं व द म्ब वि नि ना रि कृ त्ति र्प र्ह न ॥ श्री आ य व ह्ये न द धिवचन ॥ सा नद्विपुत्र अह ॥ अ धि चि रु च नि गी नि मंरु श्री न वं व द मि
 मंरु श्री नाह ॥ तथा हि हृदक गभनद्विपुत्र वा धि क नी ॥ एवं मुके आ यथा सा नद्विपुत्रा मंरु श्री ये वृमान हत म नद
 वी चर ॥ सो ध सा धू मरु श्री य स्वं य था द न क्रि आ य व स क थ य मि ॥ मंरु श्री नाह ॥ एवं म न हृदक गभनद्विपुत्र य थ वं द हि
 श्री ना य वा मि न् चार्ह न क्क स्मा ध गी ल थ हि हृदक गभनद्विपुत्र श्री ना म अ थ वा ४ अ य क ह नो चा प्र ल क य र्ह ह मी वा ॥

ननहदकगाननपुत्रपय्यायनकीनाग्रवानवास्मार्हन् ॥ अथ त्वनलगवानमंरुगीयकूमात्तुनमनदवाचन ॥ त्यामंरुगी
पय्यायावाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषत्तुत्वा ॥ अथादनुत्तनांसमस्तुवाधिमहितवाधुं ॥ मंरुगीनाहे ॥ त्यात्तुलग
वत्पय्यायायधधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषत्तुत्वा ॥ अथादनुत्तनांसमस्तुवाधिमहितसंवृद्धं ॥ तत्कस्मादुतास्तथाहिवाध
वननपिधममनसंविद्यननावननएनाचनअनूत्तनांसमस्तुवाधित्रितिसाज ॥ वाधिननत्तनागतनकचिद्धमं ॥ संविद्यन
नापनएकयावाधिमनुनिषीदकयावाधिसवसवत्तु ॥ यनवावाधिमहितमहितसंवृद्धं ॥ यवावाधिमहितसंवृद्धं ॥
यवावाधिमनुत्तुत्तिष्ठदिक्ता ॥ अतनलगवत्पय्यायात्तुत्वावाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषत्तुत्वा ॥ अथादनुत्तनांसमस्तुवाधिम
हितसंवृद्धं ॥ अवनूत्तनांसमस्तुवाधिमहितसंवृद्धं ॥ अथादनुत्तनांसमस्तुवाधिमहितसंवृद्धं ॥ अथादनुत्तनांसमस्तुवाधिम
हितलगवत्पय्यायात्तुत्वावाधिमनुनिषीदकयावाधिसवसवत्तु ॥ यनवावाधिमहितमहितसंवृद्धं ॥ यवावाधिमहितसंवृद्धं ॥
नेषावाधिननकय्यपकनिका ॥ अतनकय्यानामहितसंवृद्धमानावाधिनचपत्तुकीलावनासर्वधर्मपुवाधि ॥ तस्मादुतासर्वध

३५२ २७ श्रीरामायणेति प्रकृतं नैविद हि संवत्सरात् न ह्यतः यावद विदितं नृवं मत्वा वा विदुः पितृवत्स्वप्न एव वा नाना
 रितिके ॥ सुपि कान्यतानि ॥ अतिसूक्ष्मं यवत् पृथक् किं कानि नृवं मूकं लग्ना मरु शीर्य कृमान् नूनमनदवाच ॥ १ ॥
 कमरुशीर्ममनिकयवत् वनित्वा गतामनथागतं ॥ मरुगीनाह ॥ नाहिदं रगवन् नृकस्माच्च न नृमरुगवन्नेव रवे
 आगतमनथागतं ॥ गत्कस्माच्च न सुधाहिनेवं नथ नाच नथ गातुथाचे ससुधाहि रगवन् नृधना गथागतं विदुः
 पयं किं नापि सुधागतं सुधा नाविहापयति ॥ नृकस्माच्च न सुधाहि रगवन् पयमाथ नाश्रुतावानथना ॥ अथ वसुधागतं
 स्मरुहि रगवन् नृम नृवं रवे नितथागतमनथागतं ॥ अपि कुतथागतं ॥ नृकस्माच्च न सुधाहि रगवन् नृम नृवं रवे
 नथागतं नृम नृवं रवे विदुः ॥ नृकस्माच्च न सुधाहि रगवन् नृम नृवं रवे ॥ नृकस्माच्च न सुधाहि रगवन् नृम नृवं रवे
 नाह ॥ नाहिदं रगवावन् संसय ३ सचेत्काचित् सुधागतं पतिनिधिति स्यात् नथागतं त्यक्त्वा गथागतं पतिनिर्वाचंवा ॥ नृवं मूकं
 रगवान् मरुशीर्य कृमान् नूनमनदवाच ॥ नन वमरुशीर्य कृमान् नूनमनदवाच ॥ नन वमरुशीर्य कृमान् नूनमनदवाच ॥

20.

ननथगमा ॐ निसंव इर्म या ना नृत्प हि १ स्था ॥ नाधि मच सत्वं मरुती १ गगन दिवा न का प मा वृक्ष रग व नृपति
निविता ॐ नि ॥ मरुती ग्री ग्राह ॥ कचि नृत्प न र्ग व न क विख या वृक्ष रग का य दि म चि नृत्प विख या १ रग वानाह ॥ नृव मरुते म
रुती ग्राह ॥ न न हि रग व न न गगन दिवा न का प मा वृक्ष रग वा न ॥ १ पति निर्व ना १ न क स्मा १ का सुथ हि रग व न न क वि
ख या वृक्ष रग व का य दि द म चि नृत्प विख या १ न वा चि ना उत्प थ क वा नि नृत्प वा न स्मा १ रग व न वा पिस वृक्ष न ये पी न पि
पि न नृत्प ना ग न नृत्प नि न थ ग न नृत्प क १ स म क वृक्ष र विष नि नृत्प स वृक्ष नृव क ॥ न क स्मा १ का नृत्प चि नृत्प ना नृत्प ना वा
नृत्प ना ग ना वा प सृत्प ना वा ग न स्मा १ रग व न विष म म र्ग ता क स नि व स शा पु प च य कि नृत्प रग व न ता क स नि व स य र्ग म व र
नि उत्प न सृत्प ना ग ना वा व सृत्प नि नि र्ग सृत्प नि व नि ॥ नृव मरुते रग वान ॥ मरुती य क मा ल नृत्प म ते द वा च नृत्प न हि मरुती
नि द न थ ग ना चि नृत्प न थ ग न सृत्प वा ग न उत्प न नृत्प रग व न न वे व र्गि क सृत्प वा पिस र्ग स म हा स र्ग स च र्ग ना वा जि ना नृव स
॥ न क स्मा १ का सुथ हि नृत्प ना वा न र्ग सृत्प नि ॥ नृव मरुते नि क १ नृत्प ॥ न क स्मा १ का सुथ हि नृत्प चि नृत्प म चि नृत्प नि व

पुनः संमरुती नाह ॥ अचि स्या नानि शि स्या नाह गवत सर्वधर्मा सांको यान्हा सि निवा ॥ पुनिकु य निवा ॥ रुग ॥
२६ यत्वे वमरुती सु धाग गानि शि स्या ॥ नवेव पथगना अयि निशि स्या ॥ मरुती नाह ॥ पथगना अयि रगवन गद्यो
वनिशि स्या ॥ रुग व नाह ॥ एव मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ स्या हि सर्वा वि वि स्या नि ॥ मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥
माहा यत्वे वन धाग गानि शि स्या ॥ एव पथगना अयि निशि स्या ॥ न नरुग व पथगना स मयि निश्व सं न क मरुती नाह ॥
न १ निशि स्या दि रग वत सर्वधर्मा ॥ य क शि रग व नि निवा सा य मरुती नाह ॥ विह स्य न नरुग व स क मरुती नाह ॥ नाये व निशि स्या
नाद व प निवा ना य पु स्या विह स्य न नरुग व स क मरुती नाह ॥ नाये व निशि स्या नाद व प नि निवा सा य मरुती नाह ॥ रुग व नाह ॥
शि स्या ना य ना ना लं य पि नरुग व न व माह ॥ त्रि मय पथगना धर्मा ॥ य मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥
जाति ना व स्या सा सध न न १ पथगना स्या ॥ पथगना धर्मा ॥ य मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥
त रु मरुती नाह ॥ रुग व नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥ न क मरुती नाह ॥

[illegible]

ॐ ह्रीं ॥ ३ वक्तुं प्रथमं ॥ अथ खलु तस्यावस्थायावकाशं नूतनं नूतनं वि कात्र महापृथिव्या ॥ इति ॥ यो नमो नाथि ॥ इति ॥ सहसा ॥ मन्त्राणां नाम वक्तुं
२९ विमानि विमका निसफ नो चरिहृती नो याना प्रया नावा पा स कर्ग मा ना धा त्वा निग न लम्पा सिका सहसा ॥ १ ॥ षष्ठं च का मा व च ना ना
नव का निनियु न्ग ना ना विन गी विग न म ल ध र्म ष च ध र्म च रु न न त्प र्ण ॥ अथ खलु त्वा य ष्ठा य ष्ठा ना न न द उ त्ता या स ना द कां ग चि
व ल पा ॥ ए त्द द क्रि न ग न म भु लं प थि यो प रि क्ता य य र्ग वा क्ति ना र्ति सिं प त म र्ग व क्त म न द वा च क् ॥ की र्ग व त् न ह गु १ ॥ पृथ्या
स म ह न ४ ॥ पृथि वि वा न स लो क पा इ र्ण वा य ॥ न वं म क र्ग व ना य ष्ठा क्त्वा न न द म न द वा च क् ॥ अयं मान रु प र्थि य नि ई ल्म ना
म ध र्म य र्था य ४ ॥ पूर्व के न पि वृ ष्ठ र्ग व हि त्स्मि न्न व प थि प द गे लो वि न ४ ॥ अयं मान रु र्ग व न यं पृ थ्या स म ह न ४ ॥ पृथि वि वा न
न स म ह न ४ ॥ पृथि वि वा न स लो क पा इ र्ण वा य ॥ अथ त्वा य ष्ठा न ग न न द नि पृ ष्ठा र्ग व क्त म न द वा च क् ॥ अचि त्वा गि न व न्द
र ग व त् न म र्ग गी ४ ॥ क ल्म षा द्वा ना क्त्वा य य द व पु ति लो नि ॥ न त्द चि त्वा म व पु ति लो नि ॥ अथ खलु र्ग व ना म र्ग गी य क्त्वा मान रु
न मा म नु य न स ॥ न वं म क र्ग गी ४ ॥ य धा ग न द नि पृ ष्ठा र्ग व चि त्वा त्वा ॥ य ध व म र्ग गी य ४ ॥ क्त्वा मान रु र्ग व पु ति लो नि स

२९

वैकचिक्रमवप्रतिहति ॥ एवंमूकमरुग्री ४ क्रमात्तु गतगव नमनदवचरु ॥ नहि रंगवन्नचिन्त्यं प्रलानिचि
समवतवत्सवदचदचिन्त्यप्रगिताया ॥ अपि तु न त्किंचिद्यत्राचिन्त्यसर्व ॥ सहासं गवन्नचिन्त्य ४ तावाचिन्त्य
गद्यानासहा न वागद २ गद्यानिदधुं ॥ रगवा नाहा ॥ समापदसे पुनसत्वं मरुग्री नचिन्त्यं समाधि मरुग्री नाहा ॥ नाहिदं
गवत्राहलगवन्नचिन्त्यं समाधिं समापय ॥ तत्कस्माच्च नासुथाहिरगवन्नहमवाचिन्त्य ४ समाधिं ४ समापयहृ गवन्नचिन्त्य
माहिंसवदहंविन्त्य ४ ॥ समाधिं त्रिनिह गवन्नचिन्त्याचिन्त्यमन ॥ तत्कमचिन्त्यं समाधि समापत्स अपि तु त्वत् पुन
हगवन्नहृत्सपूर्वमापिकर्मिकसोवसमूदाचात्रमचिन्त्य ४ समापहृत्स ॥ नि ॥ नमहगवन्नहृत्सोवसमूदाचात्र ४ स
मूदाचात्र ॥ नि ॥ अचिन्त्यसमाधिं समापयहृत्स ॥ नयथापिनामरुगवन्नचिन्त्यसु चार्थस्य पूर्वमादिकर्मिकहृत्समासिजमान
स्य सर्वसमूदाचात्राहवनिगमकीलान्यवविधायपिति ॥ सयदापापित्तव्यधितिष्ठताहवति नदानतस्य पुननेवसम
दाचात्राहृत्सय ॥ किंमहृत्सया ॥ गमकीलान्यवविधायमिति ॥ यदिदंवालवधमसिजितत्वा ॥ अथेवपर्यवाकांशनिवा

७५*

३०

लवधनाया न दादयेन्नैव विध्वनिः पतनं मवह गवत रुक्म पूर्वमवसमूदावा नो रचिन्त्यसमाधिं समापदह मिति न दा मनमाधिं
समापन्नो न तं समाधिं विहतामि ॥ तदा न समापन्नं यत्नं हति ॥ अतः समाधिना विहर्तव्यं मिति ॥ तं कस्माच्च नार्यदा यदा अतः तस्य
माधिं नाविहतामि ॥ तदा न दा यत्नं समाधिं न पुरुषि कथा अथ खत्वा यथा न गभनद्वनी पूर्वो रगवत कम न दवा च ॥ अथ हि रगवत
महेश्वरी कगात्त रुक्म न विगमि मिति ॥ अन्यं नाचिन्त्य न समाधिं नाविहतामि नू अस्मिन् न र्गवत तस्या दचिन्त्या त्सा माधन न्य ४ गभ न क न ४
समाधिति न्ति अथ खत्त मर्हशी ४ कमान रुक्म न्ना यथा न गभनद्व नि पूर्व म न दवा च ॥ कथं त्व द न्य गभनद्व नि पूर्व म निष गभ क न्ना त्वा
अचिन्त्य ४ समाधिं ति त्रि ॥ यदप्या यथा गभनद्व नी पूर्व त्वं माहा ॥ अस्या त्सा द चिन्त्या त्सा माधन न्य ४ गभ न क न ४ समाधिति न्ति ॥ स चेह द क
गभनद्व ति पूर्व त्वं दा चिन्त्य ४ माधिं ४ संविद्य न इ प ल त्प न स्या द स्या द चिन्त्या त्सा माधन न्य ४ गभ न क न ४ समाधिं ४ गभनद्व नि पूर्व माहा ॥ अथ हि
मेहशी न चिन्त्य ४ समाधिं ४ न संविद्य न ना प ल त्प न ॥ मर्हशी नाहा ॥ तथा यत्नं त्व द क गभनद्व ति पूर्व अचिन्त्य ४ समाधिं न्ति नेत्वा रचिन्त्य ४
समाधिं न संविद्य न ना प ल त्प न ॥ अथि उरु द क गभनद्व ति पूर्व क सि ना चिन्त्य ४ समाधिं ति ॥ सर्वे सत्ता अथि उरु द क गभनद्व ति पूर्व अ

३०

[illegible]

नमनाशीनेयदातुहानमपसि कंतदातुहानमपतिष्ठितंतदातुहानेनात्यादितन्नपनिलसं नावात्यसक॥ नत्ससादकानहिक
तुहानगु भसंस्तु तवोगुनसंस्तु तवा॥ नत्ससादकानहिकतुहानेनिश्चित्य कनगु नावा अगु भावा कथं निदिग्धय ४ यस्मात्त्रिवि
त्ता तंतुहानेकनतस्तु तमस्तिनमचिन्त्य यदवहानंतुहानेम नृपनेत्या एतनापिक तस्तुनत कश्चिधस्माहिसंवृक्ष ह्य नावाना
पिकतुहानेपूर्वीकनावा आगतं नापिकतुहानमनृत्य नपूर्ववापिकतुहानमनृत्य नत्वायत्रात्यवंतना कक्षीसक्तितात्प्रात ॥ ना
पिकतुहानस्य किंचिदत्य तस्तुनसंस्तुगक तंतुहानमचिन्त्यमसदगनापिकतुहानस्य आदिसधपयवसानमूपत्य कनतु
हानमाकासं समनापिकतुहानसमेनापिकतुहानसमम्बवितम्बपत्तत्य कनतुहानसमसमनापिकतुहानेनस्यान्यतुहानंतुपनिनृप कम
पत्तत्य क ॥ नतनतुहानंतमपतिनृपं ॥ अथख नृगवां मक्षीयंकुमानरुतमनदवाचन् ॥ नपूननन मक्षीग्रीह्यनम
मकुषं ॥ मक्षीग्रीनाह ॥ एवंमवरुगवेन्नवमनतुहानमरुतसमृदा नीतमगनिगमनृत्पादिकमनिनापितंतने तदकृषा
४ ॥ अथख नृगवान् मक्षीग्रीयंकुमानरुतमामकुयनस्य ॥ ७० यमक्षीग्रीरुथागतस्तुननिर्दगमव निर्दिष्ट ४ मधिमास्य

पुष्पा १ ॥ मंथुग्रीवाह ॥ यत्तुगवत्रसंसाधर्मी ॥ अविष्णुनिमपत्रिनिर्वातधर्मी ॥ सुधिमाम् ॥ यत्तुकायात्रचत्रिनायषां नागधर्मोहा
३२ तजिनासुल्लसादनानैकजय ४ जीयनपत्रिकुयम्यागनियसंसागनात्रसंति का कानसंसात्रसंत्वा ४ कनियनेवमार्थ ॥ विनहि
नानमार्जसंहाफ्त्पादयनिने १ स्यात्ताखितस्यार्थमाहास्यनि ॥ १ वंमूकत्तुगवान्मंथुग्रीयंकुमानरुनमनदवीचत् ॥ साधुसाधुम
१ ॥ १ मूलधितान १ ॥ यंवाक् अथखत्तुगस्यास्वलाया माय्यामहाकस्यपीरुगवत्तमनदवीचत् ॥ अविष्णुन्याग १ धनितव
कुचिदस्यगहितसधर्मविनयस्याचगेहिनाया १ ॥ पुष्पात्रमिताया १ स ॥ अनात्रा अविष्मा १ ॥ ४ ॥ अह्मात्र १ ॥ पुनियुहितानावा ॥
१ वंमूकत्तुगवान्नायूष्मकन्मरुकास्यपमनदवीचत् ॥ १ ॥ हेवत्तकाग्धपपर्वदिलि १ ॥ पुष्पासकाय १ ॥ नाग १ धनि ॥ १ ॥ अस्पगमीनस्व
धर्मविनयस्यास्याचगमितानाया १ ॥ पुष्पात्रमिताया १ ॥ अनात्रा अविष्णुन्याधिमाम् १ ॥ अह्मात्र १ ॥ पुनियुहितानावा अविष्णुनि ॥ गद्यथ
पिनामकाग्धपगृहपतिर्वागृहपतिपूजावासनसहस्रमूत्यनमनित्रत्तेननष्टन १ ॥ १ ॥ खितो १ ॥ र्मनानाहमना १ ॥ रवेनेवपतित्र
नसूखित १ ॥ सोमनस्यानाहवत् ॥ विगतपर्यवस्त्रमनसिका १ ॥ १ ॥ १ ॥ वंमवकाग्धपतासंरि १ ॥ १ ॥ १ ॥ पुष्पागकापासिका नामिमा

३३

गमि नां प्रह्लापा नमि ना मजा ना म नूत्य नां प्रह्लापि निरि र्ना या वद ला ना म ॥ १० ॥ ना म वे र वि षा नि ॥ क थं व य द्रा म ॥ ११ ॥ मां म वे र ण
ग मी नां प्रह्लापा नमि ना मजा ना म नूत्य नां प्रह्लापि निरि र्ना या वद ला व न गृ नू म रु चा ष त्वा का त न गृ त्वा आ त्म न स्त र
वि षा नि सु खि ना सू म न श्व वि ग त प र्श व स्तु न म न सि का ॥ १२ ॥ च वं चं वा चं ल षि षा क ॥ अ य नू व द्द र्ग न म रू र थ ग र प य
पा स नं च य द्ना मा स मा रि त्रि य ग म्मि नां प्रह्लापा नमि ना या वद जा ना नूत्य ना या वद ला वा ग्र ना ॥ त थ थ पि नां म का प न्द वा
मु य विं ग म्म आ ल म न स्त र व न्त्वा न दि पो र्ना त्रि जा तं वा वि दां न सृ ज्म रू रं द द्वा त चि त्त्वा व ना यं पा त्रि जा तं ४ का वि द न ॥ स र्व प
त्र स्तु त्वा र वि षा ती दि ॥ १३ ॥ वं म वे का ग्ध प ना रि रु हि रु ॥ पा सि के पा सि का ॥ १४ ॥ मां ग मी नां प्रह्लापा नमि ना मजा ना नूत्या ना
या वद ला वा ग्र त्वा आ त्म न स आ न दि ना र वि षा नि ॥ य च न आ ल म न म आ न दि ना र वि षा त्प ना ग र ॥ १५ ॥ मां ग
ग रि नां प्रह्लापा नमि ना मजा ना नूत्य नां या वद ला वा ग्र त्वा नि ष्ठं त्वं न द्रु का ग्ध प ग च्छु र्हे व र प र्श दि म मा रू व न य न आ
रु म न स आ न दि ना र वि षा त्प ॥ ना ग र ॥ नि न षा त्वा आ ल म न ष्क र या चा नं दि न या च न चि त्त्वा पृ ति कां रि त वं स र्व

सहस्र
३३

पत्रिरुत्तमंगमिषाकियइरुसर्ववृद्धमपत्रिरुत्तमयापियकास्यगमिनांप्रहृपानमितायावदज्ञातावाप्तुत्तमत्रा नथा
गगनस्यैवमनस्थस्यकिप्रचनिष्पत्तिः॥अनागतमनिरुदपिकास्यपवृद्धाधिकानेनवृद्धानृणावनह्यनवो॥नक्तस्मात्सहस्र
गपयस्यमंगमिनांप्रहृपानमितायावदज्ञातावाप्तुत्तमत्रा नथा॥अथकितायकषोपधमकश्चवश्चयथापिनामकास्य
पमनिका नामनिनत्तपयश्चयथाश्रुताहवकिनिष्पत्तिरुदगकवा नास्यमनिनत्तपयकंदगतंपूर्वानुपूर्वदृष्टमन
नमनिकानेनदमतिकौनत्ततुवेमवकास्यपयं॥मंगमिनांप्रहृपानमितायावदज्ञातावाप्तुत्तमत्रा नथा॥अथ
नसंश्रानंदिताहविष्किउदग्र॥४॥पुनिस्येमनस्यज्ञातायाकास्यपयं॥४॥यनकाश्वपनवंशान्वला
विष्किउदग्र॥४॥यनकाश्वपनवंशान्वला
पूर्वसेमसि॥४॥कूमानरुता॥४॥पर्यपासितारविष्कि॥नयथापिनामकास्यपकश्चिदवपून्वा॥नयनंगमनगनंवानिग
मंमोजनयदंमोकेनचिदवकर्ष्यभगताहवत्॥अथपननका॥नयनंगमनगनंवानिग

३३

उपसंक्रमनस्य नगनस्य वर्त्तमानम् ॥ नराणां चानामनमनियकात्मानपदकामनियकात्तां प्रकृतिं चानामनियकात्तां उच्यते
ननामनियकात्तां उत्सृज्य नगनगनामनियकात्तां प्रकृतिं चानामनियकात्तां च वर्त्तमानम् ॥ सनत्कुत्सातुष्टिविन्दतु ॥
सोमनस्य ज्ञानं ४ पुनः ४ पुनः नराणां पदम् ॥ पुनः नदवकावत्तु पुनः खपनिकीर्तयस्व निसंपूर्णत्वं निसृज्य गता हवामहे दनगप
धमने नपूत्रं नगनगनामनियकात्तां चानामनियकमज्ञानपदकामनियकात्तां प्रकृतिं चानामनियकात्तां उच्यते ननाम
नियकात्तां उत्सृज्य नगनगनामनियकात्तां प्रकृतिं चानामनियकात्तां ॥ नत्कस्मादनासुथ हि संवत्सरातुष्टिं आ
त्मना हवन्त्यदयः ४ पुनः सोमनस्य ज्ञानं ४ ॥ एवं सवकास्य धर्मैर्मस्तु शीकृमात्रं न ४ पर्याप्तं नाहविष्यत्यतिष्ठेत्
पसंक्रांती हविष्यति यत्रिपुष्टं च नराणां मिमांसिनां प्रहस्यनमितां नृत्यनायकत्वा उदात्तपुतिमा माधवम् विष्णुकि ॥ उ
दात्तपुत्ती प्रामाद्य मृत्युत्सा न ४ वं वाचराविष्णु ॥ पुनः नदवकावत्तु पुनः खपनिकीर्तयस्व निसंपूर्णत्वं निसृज्य गता हवामहे दनगप
नरा नृत्यनमिति ॥ एवं सवकास्य धर्मैर्मस्तु शीकृमात्रं न ४ पर्याप्तं नाहविष्यत्यतिष्ठेत् ॥ ४० मानि नराणां गवन्तु आद्यानां कृतपुष्टानां

[illegible]

कृत्वा तन्मूलानि समदानेन तु कामेन कृत्वा पूज्यं न वा वत्सर्हिना वा ऋयं मवपुष्पापानमिनाऽभनवाऽभिमोकेया निषीगवाऽभ
नश्चिन्वा वाचयिनवा उपयकुवाऽस्वाध्यायवाऽपूर्वलयिनवाऽपर्यवाफवाऽयामनसिवर्हवाऽलावयिनवाऽयावत्पुष्पा
पधूपदिपगंधमास्यविलयपनचूर्णवीवनकुशधजघऽपनाकावेजयकिर्हिदीपदानपुर्निरिश्चयुजाहिर्यथागम
कायधवनपूजयित्वाऽसत्कर्तृवाऽसर्वसावकपक्षकवृक्षगुमिमनिउकामेन कृत्वा पूज्यं न वा कृत्वा ऋयं मवपु
ष्पापानमिनाऽभनवायावत्सत्कर्तृवाऽ० ॥ यथा मश्नुती न वेवर्त्तितं कुरुमावकाकिर्हवति ॥ यवोऽपि न मा म न वत्सपुष्पे
वा कृत्वा ऋयं मवपुष्पापानमिनाऽभनवायावत्सत्कर्तृवाऽयमश्नुती ४ कविधर्मास्तु सर्वा न नृणां दस मनसा धिमा
कु कामेन कृत्वा पूज्यं न वा कृत्वा ऋयं मवपुष्पापानमिनाऽभनवायावत्सत्कर्तृवा सर्वधर्माश्चिन्वाऽशुनी नीहि वृद्धा
स्तथा गतं न मनिदगमधिमाकु कामेन कृत्वा पूज्यं न वा कृत्वा ऋयं मवपुष्पापानमिनाऽभनवायावत्सत्कर्तृवाऽ
नत्कर्त्वा न हि सकश्चिद्दर्मश्च विद्यत उपलभ्यत याति वृक्षतय न वा अति संवृक्षतय वं स वा धर्मति मधिमाकु कामे

पृष्ठ २१

न कूल पूज न वा कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या यावत्सत्कर्तव्या न हि कचि धर्मा या न वाधि
 त्रिष्टे वमधिमाकु काम न कूल पूज न वा कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या सर्व धर्मा न विकल्पयि
 तु काम न कूल पूजा वा कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या न कस्माद्गार्हपत्य पात्रमिना कस्य
 चि धर्मा पत्रिनिष्ठा किं नय विवत स्त पय निदुर्गय ति वी विव धर्मा न सुं क्रि ग्ध क न व दाय न द्ध ० य वं स व र्दि तु काम न कूल
 पूज न वा कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या ॥ सर्व धर्मा नातिता नाग मान पश्य त्वा ० य वं स
 धिमाकु काम न कूल पूज न वा कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या ॥ न कस्माद्गार्हपत्य पात्रमिना ॥ न हि म
 न न त्पादा ॥ ति ता नाग मान पश्य त्वा ॥ न कस्माद्गार्हपत्य पात्रमिना ॥ न न त्पादा ग म व ग न ॥ हि म १२ श्री सर्व धर्मा ॥ लु वं नृ प सु सर्व धर्मा सु न
 नि १ ग स य ता ग कु काम न कूल पूज न क चो कूल रहिता वा ० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अथ वा यावत्सत्कर्तव्या ॥ य ध म १२ श्री ४ ॥
 वि पत्रि व र्दि स द ग म काल स धर्मा व क स प र्दि न ना म् व ति ॥ न कु तु काम न न दू प त्रि ष तु काम न न दू धि मा कु काम न न दू व

३०

गठकामन कृतपूजनवाकृतइहिगावाय ॐमवपुष्पापानमिना ॐगवायावत्सकुरुवां सत्तामेष्णसु निठकमनसत्तसंसा
यावास्सु॥ उकामनसर्वताकनसार्धमविदितुकामनसर्वताकानूपलधिवाववाङ्कामनकृतपूजतवाकृतइहिगावा ॐयाम
वपुष्पापानमिना ॐगवायावत्सकुरुवायावत्सर्वधर्मा नृपादमववाधु कमनकृतपूजेतवाकृतइहिगावा ॐवपुष्पापानमि
नायागिखिरुवमनपनकयागन॥ अथखलुमस्तु ॥ कृमालकृमालगवकमनदवाचन्॥ निर्जुतायालगवन्पुष्पा
पानमिनाया ॥ कृगुत्त ॥ कनसत्ता ॥ अकिद्विसमथायालगवन्पुष्पापानमिनाया ॥ समुत्तापिकाया अविनासि
कमानसकथीधर्मस्यायहिकापाननियुहिकाया निश्चकायाया निर्थीपात्रा ॥ स्वलावमज्ञानमान ॥ स्वलावमपुसा
मानायाकसगिधर्मस्यादयिकाया ॥ सर्वधर्मा मनात्मकननिदायाकनर्तियोनाया ॥ सर्वधर्मा ॐमनकलाकात्रिकाया
॥ सर्वधर्मा ॐमनानात्वंकात्रिकाया अकिनाया अकया अविनासिकायापयगनधर्मा ॥ मर्हद्वर्मा ॐपुष्पाकदध ॥ वाधि
सत्त्वधर्मा ॥ मपिचनदानीकाया ॥ नहाद्विकाया ॥ अइ ॥ कति कया नहात्रिकाया न संसर्गसंस्यायुहि कापाननिर्वाधि

३ हा *

२६

सप्रिहं कार्यं ह काया न रूढ धर्मा नापि कान विनासि काया शा न चिन्ता या न का निष्ठा न वि का निष्ठा १ सर्व धर्मा भागी
वा ला दि का या न नि जा वि का या ना के दि का या न ग भ स नि का या ना ग मि का या न नि र्ज मि का या न वि वि क का नि का या ना
वि वि क का नि का या न द्रव्य का नि का या द्रव्य का नि का या पा व द ला वा या र ग व न् न पु रू पा न मि ना या ४ के गु ना ४ के नू र्ग
सा ४ ल व मू के र ग वा न् म श्रु ति य कू मा ल रू न भ न द वा च न् ॥ न वं म वा स्यं म श्रु ती गु ना पु रू पा न मि ना या व दि न वा
या वं द ला वा नि एष क ४ ॥ अ धि तु र व त् पू न ४ म श्रु ती वा धि स त्व वा धि स त्व स मा ध्ये जि क्रि तु का म न वा धि स त्व स मा धि
नि ष्ठा द य तु का म न य तु स मा ध्ये स्ति वा सर्व वृ ध्वा र ग व क्ता दृ ग्ध के न वा च वृ द्ध ज्ञा नि ष्टु डे का म न च न वा च मा म
या नि ष्टु का म न न वा च वृ द्ध ना के र ग व ना म नू र्ना पु रू क र्त्त का म न न वा च ध र्म द ग ना या म व न धि का म ना धि मा कं का म
का म न रू हे व द्रु हा पा न मि ना या सि शि न वे जि ज्ञा या ण न ॥ अ थ त्व त् म श्रु ती ४ वृ मा ल रू ना र व नं भ न द वा च न् ॥ के ते षा र ग व न् का
के न न न पु रू पा न मि ना ॥ र ग वा ना ह ॥ अ नू त ना नि वृ द्ध ता न् म श्रु ती ४ पु रू पा न मि ना पु च न ॥ यदि द मा दि भे क त्वा न् अ नि ४ ग न न

३६

त्वात् श्रुतं नियत्वात् ॥ यावदंशवत्त्वात् ॥ यश्च लवः स एव ह्यनन्तरि मिता ॥ अनेन कात्र ॥ नमः श्री ४ प ह्यपत्तमिना लवनां वाधिसत्त्वानां प
 त्रिकांजी नद्या ॥ एतच्च वाधिसत्त्वानां महासत्त्वान्मचन ४ यः सर्वधर्मेष्वप्यभवत् ॥ अथ वमा ॥ नमः श्री वाधिसत्त्वामहासत्त्वा ॥ अचराय इ
 ना ॥ अचन ४ सर्वमानिकसुत्तमाद्वगात्र ह्युक्तं यत्तु न च नैव उच्यते अथ चन ४ नि ॥ पूनत्रपंनं नमः श्री ४ कुमातरुकात् गवत्कमन
 दवाचनं ॥ कुचनमात्तु गवत्तु वाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ जीपुमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वसंज्ञात्वात् ॥ नवंमूकं गवान्मः श्री ४ यं क
 मालं कृतमनदवाचनं ॥ अथ पात्रमिनायां चनमाना नमः श्री ४ वाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ क्रियमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वसंज्ञात्वात् ॥ अस्मि मः श्री
 नकवृहन्महासाधियजसुमा ॥ अचनमात्तु वाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ क्रियमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वसंज्ञात्वात् ॥ नवंमूकं मः श्री ४ कुमात्र
 रुकात् गवत्कमनदवाचनं ॥ कथं गवत्तु कवृह ४ समाधिवाधिसत्त्वानमहासत्त्वनावत्तु व ४ केन का ॥ नैकवृह ४ समाधित्रिगुच्यं
 गवानाह ॥ एकवृह ४ मिमः श्री ननूत्पादस्येनदमिवचनं ॥ एकवचनं समाधिसत्त्ववत्तु कामनकुलपूया ॥ वा कुलरहिगावा पूर्वमव
 यत्तु पात्रमिनापत्रिपुष्ट्या ४ नन ४ यश्च कवृत्तु समाधिसत्त्ववत्तु त्रिधुक्ति ॥ नकस्माद्वगात्रकाप्याहिमः श्री ४ ननूत्पाद ४ ॥ अप्रति

३५
३७

पाशाञ्जलिपत्रियः॥ अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः
निगयना निरुद्धा निगयना निगयना निगयना निगयना निगयना निगयना निगयना निगयना निगयना
सिंकरुवां २ सर्वधर्मा गमनसिंकरुवां ॥ अत्र पत्रम्या ॥ नायं वरुथा गतं मनसि कुर्यात् ॥ सुनाम धर्मी गुहिनो ॥ अत्र दामाधय
अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन
पुत्रपुत्रावद्वारुगवका मनसि कुर्यात् ॥ अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन
अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन
यचन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन
अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन अत्रापययसादिमिसन
पत्रिकीर्तननां समादायवर्हधमा यथायथेना समादायवर्हधमा यथायथेना समादायवर्हधमा यथायथेना समादायवर्हधमा

३७

[illegible]

बहु
२८

लि पय पाश्चत्य वलन संगल वमव मरुतीयो कश्चि धर्मदग नाम याद सिता सर्वा सा ल कनमा यरान न त्या दनसा अ हा वन सा विम
मूक्ति नगानि ना वन गभा यामि मधि रेव्या ४ वृत्त पूव ० ह स मा रि धि सि का य य म व ध र्म द ग यि ष्य ति ॥ क त्स र्व म क न सा म न द ग
यि ष्य ति ॥ य र न नू त्पा द न स म वा ता व न म व वि ना ग न स म व वि मू की न स म व नि ना ध न स म व ० म म रू ती ४ स मा धि मा ग न
क श्चि त् स पा ध र्मा द सि त सं सं क ल पू या कां क मा आ ल व नू नि दि ला इ प दि अ नू ॥ ए वं हि म रू ती ४ सं क ल पू व ० म स मा धि मा ग म
या का चि द्द ग ना स र्वा कां म ग म नू त्पा द न ल वा मे व द ग यि ष्य त्प नू प न रू ती ४ न प न न य न र्म रू ती ४ ना म स मा धि म ग म य धि स त्वा
म हा स त्वा ४ क्रि सं वा धि पा क्रि का न र्म रू ती ४ नि प र्क क्रि प म वा नू त्पा द न स म कं वा धि म रि सं ल त्पा न ॥ पू न व प न म रू ती ४ धि स त्वा म स
स त्वा ना त्म धा ना या व न ध र्म धा न नू त्पा द प सं ति ॥ ना नि ना ध ने क त्वे ना त्वे ए वं क्रि का पि म रू ती ४ धि स त्वा म हा स त्व ४ क्रि प
म नू त्पा द न स म कं वा धि म रि सं ल त्पा न ॥ ना वा न चि क य द नू त्पा द न स म कं स वा धि न सा पि क ल पू व सो वां जा कि वा धि स त्व ध र्मा ना
च वृ ति न म्हा य न च वा धि वृ त्ता यं स पार्था न ० ति ॥ ए वं मि मां म रू ती ४ जा कि न स क ल पू व स क्रि क ल पू व स क्रि प म्हा य न नू त्पा द

पांसयक वाक्षी सर्वधर्मा वृध धर्मा न्निय चवंमधिमा कृत तचावनिय न नमपहंमवेवहि कंचदाम् नूह नायांसम क्व वाक्षी ॥
अविनाहृग्य सर्ववृध धर्मा व काव्य ॥ यस्यां वृत्त पूय सवाकृत हितावा ॥ मनिर्दगं श्रुत्वा न स्याद न्यायिगत्त मा काजायितत्वं
वा ॥ एवं मूक सशरी कृमात हृता रगवक म नद वा चन् ॥ किं ह तु निया न रगवत् ॥ न नूह नां सम्यक् वाक्षि ॥ रगवा नाह ॥ नाहिदं
ग वमशरी नेवानूह नां सम्यक् वाक्षि ॥ उ विर्या ना ॥ नत्क स्माह ना न व नत्वा ना रा वा वाह तु ह तु निया ना वा ॥ न स्माह ना न गगत्ता स
र्वधर्मा ॥ न स्माह हि मशरी यं ॥ नूह ग मि नायां पृष्ठा पात मी ना या ॥ रिशु वाहि रु निवा उ पाग का वा उ पागि सि का वा ना व नि यि ष कि ॥ या व
न सति यि ष कि न न म म स न न ग ना ह म मा य प व रि ता स्र षां वा हं ग म स्मा ॥ या म शरी ॥ ४ कृत पूजा वा कृत हि ता वा ॥ नूह गं मि नायां पृष्ठा
पात मि यां न सि ष न ना सो वा क्षि स त्व सि षा मां गि रु न ॥ न य था पि ना म म शरी र्य क वि द रू न ग मा वी र य मा म द रू त्मा ष षि व
न स न मा वि ना ह य कि स र्व न म हा पृ थि वि नि सि ष ए व म व म शरी र्य क वि द्वा धि स त्वा नां म हा स त्वा नां कू ग त धर्मा ॥ ४ स र्व न पृ ष्ठा पात मि
ना य नि गृ ह्नि त वि धि वी रू टि वे ए न ना मा प ध क न वि स वा द य न्त्वा नूह नां सम्यक् वाक्षि ॥ ३ व मूक म शरी ॥ ४ कृ मा त हृता रग व क म न

अपवेत्तारुत॥ तस्याहलगवन्नवपुष्पं पुनर्वंदय सर्वधर्मा विनूधा काथा॥ तत्कस्मादगस्तथाहिनकाचित्सत्त्वापलपि १॥ उत्पादन
विनूध १॥ नापि सा केन कनचित्सत्त्वेन सकनमाह न॥ तत्कस्मादगस्तथाहिनकाचित्सत्त्वापलपि १॥ पुननपनरुगवन् ॥ अह
तस्येव वंदयं मनुत्पनाहिर्नामसाधर्मदगनारुत॥ तत्कस्मादगस्तथाहिरुगवन् अतुत्यादस्मा १॥ सर्वधर्मास्तथा धि १॥ अगनाया
नाहंतामृतयधिगमानि विद १॥ अहं दुर्मिष्वरपृथगयनधर्मा यथा न विनासिता १॥ पुननपनरुगवन् पुनर्वंदय नहं
धर्मदसियांकश्चित्सपत्रिनिर्वनपत्रिनिर्वाति ॥ पत्रिनिर्वातिदा ॥ तत्कस्मादगस्तथाहिरुगवन् तत्कन्य नूपलपित्वात्सत्यसा
पुनर्वंदय महरुगवन् पुष्प १॥ समा नवगवंदय ॥ पुननपनरुगवन् यासमाक्तिकादिमागका नां पहापानमिना ॥ अतुकाम १॥ पत्रिप
कृतकारु बंधरुगवन् साहकथा पुवरा रूपतिरुगवन् मवंदयं सचेतुत्वमिक्तुसिना कथा ॥ अतुत्मा चमानसमात्रे पय ॥ अथा
मिक्तुतिमाचविरुमृत्पादय ॥ अथामिति ॥ माहिरु पुनृषमाया पुनृषस्य पुनृषा गवर्गो पुनृषा य पुनर्वंदय धर्मदगना गका आ
गका आहंतां सचन् ॥ त्वं शपृष १॥ अतिमाधर्मादासना ॥ अतु नदचक्रि कृतय पिनामा कास्यगकृनिपदं पुनर्वंदय गका धर्मा

यह ५

५०

दगनागमउसंवा मलं लपुत्रव ०० ह सिमांधर्मवगना ०० ०० न मा द्य प्रमा नम स्व मा द्य यं ॥ न त्क सा द न त्रिहिका वि दिह
द्वयपत्रि किर्तना पत्रि कीर्ती ना ०० द्वयपत्रि किर्तना वा ॥ सं च वि च्छ सिमां यं व धर्म दगना ॥ ०० ०० न मा आ त्म सं हा ध
विना सु य द वि कु ग नि च मा सम कि कु म वं ह म्मा थ मा ध्वा ल म्ब स्व पृ थ ज न धर्म ए थ मा च ल गि या म रु ग व न ॥ ०० ०० क
म १ प रु क्त म ह म वं म न सा स त म न्नु नि का य य यं स च रु क्त पृ थ वा क्त ल र हि ना वा प नि प रु क्त क वं नि क्क त्रि वि ग म्
स्य र्ग स्यां पु नि रा न मू द मा पु नि षि त्त स्य ष थ र ह नां प रु पा न मि ना या वं द ज्ञा ना ले वा नू त्प श्रां द ग य यं ॥ ०० वं मू के रु ग
वा न म र्ग य कू मा न रु क्त म न द वा व ॥ सा धू सा धू मं र्ग जि १ स र्ग वि त्त ०० यं वा क्त वं चो रु न व द सु स क्त ल पृ थ म् वा क्त ल उ हि
०० वि त्त ग न ड क्त का म व प रु पा ल मि ना ल व यि न वा अ ल व य ०० न न थ ग न प य पा सि ड का म नि क्त ल पृ थ नं वा क्त ल र हि
ना वा ०० रु व प रु पा न मि ना ०० रु व म न्नु प न म्मा ग ना ०० थ ग न ग म्मा नि बा प द ०० ०० को मि न क्त ल पृ थ नं वा क्त ल र हि ना वा ००
व प रु पा न मि ना या सि डि नं म न्नु प न म्मा ग न ॥ अ न रु नां म म्मा क्का धि म रि तं वा क्त का म न क्त ल पृ थ न वा क्त ल र हि ना वा ०० रु व

५०

पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मनहि संस्मानया एन सर्वसमाधिको गत्रपनिष्ठादयि तु कामन कलपूत्रनदा कलइहिगावा
ॐ हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां पुष्पापानमिनायां गन ॥ यावत्सर्वो कानवनापकं सर्वहृन्पनिनिष्ठादयि तु कामन
कलपूत्रे ॥ वा कलइहिगावा ॐ हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मलावया एन ॥ कलसाङ्गा सुथाहियावत्सर्वो का
नवनापकं सर्वहृन्पनिनिष्ठादयि तु कामन कलपूत्रे ॥ वा कलइहिगावा ॐ हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मलावया एन ॥ कलसाङ्गा सुथाहियावत्सर्वो का
मन कलपूत्रे ॥ वा कलइहिगावा ॐ हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मलावया एन ॥ कलसाङ्गा सुथाहियावत्सर्वो का
कश्चिद्धर्मा यश्च सति ४ सान ना ४ कलसाङ्गा नन सत्र ला सर्वधर्मा ॥ नवमा ह्यु कामन कलपूत्रे ॥ वा कलइहिगावा ॐ
हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मलावया एन सर्वसुला वा वै धाय च न कि ॥ न कश्चित्सर्वसुला यानवा धाय च
न कि नृणां सति दिव्य कामन कलपूत्रे ॥ वा कलइहिगावा ॐ हेव पुष्पापानमिनायां गिजिन बां मलावया एन ॥ कलसाङ्गा सुथाहियावत्सर्वो का
कलसाङ्गा सुथाहिसर्वधर्मा वा धिसमाय ॥ हि सर्वधर्मा वा धिसमा सुथा वा धियथा वा धि सुथा सर्वसुला यथा

अहं
५९

च सर्वसत्त्वास्तथा च निःशब्दविद्यमानत्वात् सर्वानि न चानि निःशब्दा च वाधिया च वापि न नृणां दापि सः ॥ अगातिन
पिसादा समिदिदु कामन एव रूप प्रसवधम्मपुनने कृत एव ॥ वाक्यरहितता वा ० हेव प्रहृष्टपानमिना सिद्धि न वां
यावदलाया नृणां दया गतयदपि च मरुत्तुं स्तथागतविकृतिं न वस्तुत्थागतविकृतिं न दपि प्रहृष्टपानमिना पद
गिति ॥ कस्तु स्माह गतिर्दगता हि सा अदगं यिती प्रहृष्टपानमिना अवेव र्दिकां स्तानहमस्तु वदामि यरिक्ता वा
रिक्ता ॥ वाउपाग का वाउपासिका वा ० नृणां प्रहृष्टपानमिना नृच दुष्पदगमत्थापु मा ॥ मायमप्युद्धीष्यन्ति पर्यवा
प्यन्ति अत्र यिष्यन्ति वचयिष्यन्ति यावत्संप्रकासयिष्यन्ति ॥ वा १ एतन्न वादा यन थ सोय प्रतिपक्षेन नियन्तास्तु कृत
एव ॥ कृत रहितश्च वा ॥ अयवदिन वं न वृद्ध विषयस्ति न य ० मांगमिनां प्रहृष्टपानमिना यावदलाया लव नृत्त अथ
त्वानां यिष्यन्ति न संकु सीष्यन्ति न संकु समापत्ता ॥ उरुत्रिवाधिमायेन नियन्तास्तु रविष्यन्ति सर्व वृद्ध धम्मपुनगा
मप्यहमस्तु मृदास्तु पयामि वक्षानृणां गतविद्यता सर्वत्र हित्वा पुनिकृतामि मां मृदां स्तुपयामि ॥ समता

चावृत्तानामियेममङ्गनायनिदिपनायावत्सर्ववृद्धधर्मपनिदिष्ठाभनयाचमस्तथा मृदयामृदिनावांभिसत्त्वयानिकः कूल-
लपृष्ठावाकूलइहिनावाइहवावत्पपायगमनायभ्रवायभवत्सोपृष्ठाकवृद्धहमोवागंठमवेकमभयवा॥ अथवनरु-
सां वलायां गकादवानामिन्द्रमुयस्तिग्मज्यदवपृष्ठादिबानवन्दनचूर्तिदिबोश्चमान्दानवेष्टपृष्ठादिबोश्चगसेदिबोश्चाय-
लकूमदकृष्णुतीकेदिबोश्चवायेनिमोपृष्ठापानमिनांपृष्ठयमानाहगवेकंमस्तुग्रायंचकमालकृतं॥ अथवाकिंनन्नरिप्रा-
किनन्नवधेवोचतु॥ ७०० दकृगलमलमसोदान्नरुनस्यधर्मनत्तस्यप्रायेपून१पून४३वत्तयकृष्णंरुवमयभनयामृद-
यामृदीना४५वंचश्रकादवानामिन्द्रावावमलापगमयमपिरुगवकयागमोपस्यामहा॥ अस्यां गमीनाया४पृष्ठापानमि-
नायावदनृत्यनाया७०हजम्बुद्वीपकेषांनथात्रपा॥ कूलपृष्ठा॥ कूलइहिलनाथे॥ नावलासमागनाययावत्तेषांधर्मव-
सर्ववृद्धधर्मोपनिष्ठादयाययेयावत्तपूनर्हगतकूलपृष्ठा॥ कूलइहिल॥ चायत्तपृष्ठापानमिनानिदं॥ अथकृष्ण-
तश्चुनावलामागमिषाकिंशुत्वाचादिमायुकेअधिमूकाय्याअहिष्णकिपर्यवापस्यक्रियावदचमिषाकिः४निष्ठाके४कूल

पुष्प २
५२

पुष्प २ कूल इति हि हि श्रुतं तस्या ददता पसंहा न च वायमस्य कमिति ॥ ५ वसूकं रगवानगकुदेवानामिदममदवाच
रु ॥ ५ वं न कू को गिक सर्ववध धर्म पति निष्पत्ति कृष्णं कूलपुष्पा ॥ ५ कूल इति हि हि ॥ ५ च ड वानियता यत्त पतिको
क्रि क वा वर नू ल जा या ॥ ५ सम्यक् वा ष अथ खल मरु ॥ ५ कूमा लरु का रग व क म न द वा च न ॥ ५ अ धि ति ष्टु सुं ग न ॥ ५ म
ग मि न पुष्पा पा न मि ता नि द ग न वा कूल पुष्पा ॥ ५ कूल इति हि हि ना चार्थ ये स म न क न रा षि ना च ये वा कं ॥ ५ अथ खल मरु
ता या वृ षा नू ल व न ष षि का न म हा प धि ति च ना अरु ॥ ५ स म न क न पु च सि ना यां च म हा प धि ति ॥ ५ अथ खल मरु रग वा न स वा ना या
सिं क म क ना नू ॥ ५ स म क न द्या वि कृ त व र ग द ना मि ते ॥ ५ अथ खल मरु रग वा ना यां पि सा ह म म हा सा ह म्पि ला क षां ड म्पि हा व रा स
न स ॥ ५ हि हि मं पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि ति ष्टु न ॥ ५ रग वा ना ह ॥ ५ वं मं र गी ॥ ५ कूमा लरु का रग व क म न द वा च न
॥ ५ मा नि र ग व नू प र्व नि मि का नि त था ग न स म पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि ति ष्टु न ॥ ५ रग वा ना ह ॥ ५ वं मं र ग म र गी ने
स पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि ति ष्टु न ॥ ५ मा नि र ग व नू प र्व नि मि का नि त रि ॥ ५ र्व नि मि के ह न वं म धि ति ष्टु ना य पुष्पा पा

५२

[illegible]

[illegible]

अथ वल्लि ना सर्ववृद्धे न पि य ह्य पा न मि ना यि त्वा अनरु ना या स सा कं वा धि म हि सं वृ क्ष त स्मा न हि कृ ल पू व ह्य ग वं प ह्य
पा ल मि ना म नु म हा वि द्या म नु ॥ अनरु ना म नु ॥ अ ग स मा म नु ॥ सर्व इ ख प सं म ना म नु ॥ स ख म ध त्वा न्प ह्य पा न मि ना
या य क्ता म नु ॥ क थ थ ॥ कुं ग न ग न पा न ग न थ ॥ न सं ग न वा धि स्मा हा ॥ ० ॥ उ वं ग भ त्री पृ ण ग मि ना यां प्र ह्य पा न मि ना
या सि ङ्गि न थ वा धि स त्व न म हा स त्व न ॥ अ थ नू र ग वा न स मा धि कृ त्वा य न्ना र्था वि ना कि न ज्व ने तं वा धि स त्व न म हा स त्व नं सा
धु का न म दा न् ॥ सा धु सा धु कृ त्वा य न्ना र्था वि ना कि न ज्व ने तं वा धि स त्व न म हा स त्व नं सा च सर्व वि ति प र्ष त्स
द द म वा च नू र ग वा न्ना र्थ म ना आ र्था वि ना कि न ज्व ने तं वा धि स त्व न म हा स त्व न सा च सर्व वि ति प र्ष त्स
द द मा न्वा स न ग नू र ग भ र्व थ ना का र ग व ना ल धि न म ख न न्द्र ति ति ॥ १ ॥ अ र्थ प च विं ग ति का पु रू पा न मि ना
ना म धा न नि प त्रि स मा फ ॥ २ ॥ कुं न मा र ग व न आ र्थ पु रू पा न मि ना ये ॥ उ वं म या उ र म क सि न्म म य र ग वा डा जा
ह वि ह न ति स्मा ॥ ग ड कृ प र्व त म हा न हि रु स प ग ते न न के धा धि स त्वा का नि नि य त ग न स ह्ये ॥ ग ड सै व म्भ ला क पा न

पृष्ठ ५

नपुमरेव्यदवमानूषासनकाटिगनसहसे ४ पुमरेव्यपनिवृत्त ४॥ ग्रीनत्तगकंसिंहासननिषर्त्त ४ रगवान्धर्मदगम
निष्मा ॥ आदोकल्यानमध्वकल्यानं पर्यवसानकल्यानं सर्वसुखं ४ न कवनेपनिपू ४ पत्रिउठं पर्यवकातं वञ्च
र्यस्युकागतिस्म ४ ॥ अथ खल्वार्यावलाकिरुग्धनायाधिसत्त्वामहासत्त्व ४ ॥ उल्लायांसनादकासमूहनांगकृत्वा
दक्रिनगानूमलपृथिव्यापनिष्ठापयत रगवांसुना ४ सिप तम्यप्रहसितवदना ४ खल्वारगवकमनदवाचन ॥
दगयतु रगवंतपुष्पापात्रमिगखल्वारुनां महापू ४ यस्यांसर्वनमा ४ न सत्त्वा नां सर्वकर्मावन ॥ निरूपयिष्यन्ति ॥
नियंदाधिपनाये नरुविष्यन्ति ॥ यच्च सत्त्वामकसाधना ४ कृत्वा कणां चाविद्यनमकं सिद्धनत्रिकि ॥ अथ खल्वारगवान्धर्म
वलाकिरुग्धनायाधिसत्त्वामहासत्त्वामहाका ४ निकायेसाधका नमहागा ॥ साधसाधकलपृथयस्य सर्वसत्त्वहिनाम
सूखायपुनिपवसर्वसत्त्वार्थदीयना ४ मधिकसु नहिल्वकलपृथ ४ नरसाध्वचसूक्तमनसि कृत्वा ४ विष्यहं ॥ नपुष्पा
पात्रमिगखल्वारुनां महापू ४ यस्यां सर्वसत्त्वा ४ सर्वकर्मावनना निरूपयिष्यन्ति ॥ नियंनवं वाधिपनायः

॥ लरविषयि ॥ यसत्तामनुसाधनस्य ज्ञानं च विद्युनमनुसिद्धं त्रिनि ॥ अथापीवलाकि नृगना वाधिसत्तामहा
सत्ताएगव कमनदवाचन ॥ न न हि सुगनलापि तु सर्वसत्त्वहिनाय सुखाय च ॥ अथ खलू एगवांस्तुतामलायां सर्वस
युमाचिनां सप्तमाधिसमापयते स्म ॥ यस्यां समाहितया उत्प्लाकागम इविव नो कलादन कानि त्रिसिकादि विग्रह गगना
हृमातिनिश्चय विस्मय ॥ तेनैव तस्मिन् ४ सर्ववृद्धकृशानि स्फुगात्तु वन् ॥ यवं सत्तासु यासु लयासु फलसर्वनिर्गुन
नृत्तायां सम्यक् वाप्य ॥ यावत्तान का सत्ता ४ सर्वसत्ता समर्पिता रूवन् ॥ सर्वा निच वृद्धकृशानि विषद्विको नप विचर
दिवा निच वृद्ध न च ॥ वर्षातिगथागम पादमूल पावर्ष ॥ अथ खलू एगवान् स्फुत्ता वलायां मिमं पृष्ठापान मिमं लषरुम
नयथा ॥ वाधिसत्त्वेन महासत्त्वेन सर्व सत्त्व ४ समचित्तेन र विनवा ॥ मिमं विह न र विनवा कृत्त स्तन चिह न विनवा कृ
न वेदना च र विनवा सर्वपाप विनहिना च र विनवा ॥ दं च पृष्ठापान मिमं हिद यिमावर्हयित वं ॥ नमानत्तनयाय ॥ नम
गम मूनय न थागम पाहर्क संम कं वृक्षय ॥ नयथा ॥ कुंमन २ महामूनय स्वाहा ॥ अस्यां पृष्ठापान मिमं या नालत्मयात्

[illegible]

२६६

उत्तर
६६

अथ सूत्रनिर्णयने सप्तमः ॥ यकचित्सूत्रं अवकः मावयीसिज्जिउ कामने ०० यंभवयुहपानमिना ॥ अ
नयो ॥ उरुहि न ॥ धनमिनयो वाचमिनयो पर्यवाफयो ॥ ०० हे वं प्रहृपानमिना योउ पायको गत्य समस्त
गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमाय याग कत्रिनि यं ॥ तत्कस्य ॥ ०० ॥ पु हृपानमिना
विसृजेत सर्वधर्मा निदिच्छ ॥ यदवाधिसूत्राणि त्रिभुवां यागमा नव्यमिति ०० नू हृनायां सम्यक् बोधे मिज्जि
उ कामने ०० यंभवयुहपानमिना ॥ उ पाय को गत्य समस्त गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमाय ॥ या
ग कत्रिनि यं ॥ तत्कस्य ॥ ०० ॥ हृपानमिना यो विसृजेत ॥ सर्ववृद्धधर्मा निदिच्छ ॥ यदवाधिसूत्रे नमहा
त्रिभुवां ॥ यकचित्सूत्रं गलधर्मा ॥ वाधियका ॥ अवकधर्मा वापुत्य कवृधधर्मा वाधिसूत्रधर्मा वा वृद्धध
र्मा वा नमि का गलधर्मा वा वाधियका धर्मा अवकधर्मा पुत्य कवृद्धधर्मा वाधिसूत्रधर्मा त्वं ॥ यने पु हृपानमि
ना यो अकर्मका अन्पविष्ठा ॥ संगहं समवगतनगच्छिहगवानाह ॥ नयथा ॥ सूत्रे दानपानमिना जिनपानमि

[illegible]

[illegible]

सफर
५८

नासित्कलगतनिधिर्यसुकायगनिःसंकाफायनदाः पनहिरुपट्नायनापुत्रिकसुमनतं वन्द्यहाननासिमिरिव
मिरिवलुपापसंसाधनानां ॥ २ ॥ याज्ञाका नापमायापुविगनयसंसास नयपाथिनामायुषवीसहमानिहयदत्रमन
नयसम्बसनातां ॥ जित्वाकुभा न लाषां नमनमधागनयनसा नस्यमून नवधधर्मनागं हव नहिन कने विग्वहं नामध
या ॥ ३ ॥ जे मावत्पायजा म नूजयने समयावसिविवं गजयवनर्षयूना निपुवनगुननिधिर्यसुचासिद्वनन ॥
जेनदं ने न लषगि हवद्वि वधकनहानं ॥ त्रि ॥ गिनिषवदरहसिद्धिकायसुगतमनूमनं कुक्कु कुन्दं मूनिदु ॥
॥ १ ॥ गभलवत्पाद्विज्ञानां न व प नि निहिनजी नय संसुकायस्यायूनां सहसा धिगियवपूत्त्वकिं सुगयूव हव ॥ व
धत्वं यन नत्वा चल वनगुनि नाइर्षत्रयां फमगुं नवदगभसितानं कन कमूनिमधिध्वसु माहाभकानां ॥ १ ॥ वा नानसां
वृत्तिषद्विदियकिमहिन विषावं गिज्ञातायसात्तायू सहसा धिसयमहता विगनिर्वत्सनां संयननाधमूनविह
वजननिधिसात्रीका हानदिप्या कं वन्द्यवन्दनियमूनिवनवृषरकास्यपनाकनाथं ॥ ७ ॥ याज्ञाक ४ श्रीविभास ४ कपि

नवनगमसुनाजडवेगयसोसिदयन कंकगकमिहदांसर्वसकेकचरुजिणागुरुमनसूत्रचिमपिसदानरुनायवधिस्त
वन्दगमसुसिहसूननननमिकेवृद्धमादिनवधा ॥ १ ॥ जातिविपुषगपुनपवनमहितककुमलागहिल्वारधत्वेयः
कनिष्ठाकमिगुननिधिआगवृक्षसमले ॥ अष्टावद्यायगानिकुपितरुगवतलधियंगमायुर्वन्दमेययनाथंनुविः
नपूनवनावरुिनेकंमनिडं ॥ ८ ॥ मुक्तावेसफवृद्धासकनसूपगगंसफसफार्कलासामययचाष्टममठुनपूनगतरु
विकलाकनाथं ॥ यत्पुष्पसंयुक्तगुरुगतिरुलददहिनामेवसर्वेचित्तासंस्तपासाभूनयवचनानिवितिसपुयाकु
॥ ० ॥ ०० निसुगगावदानसफवृद्धमुक्तिसमाफ ॥ ० ॥ ०० ॥ ०० ॥ ०० नमाः सर्ववृद्धवाधिसत्ता नोमत्तामूलतानकाश्रनका
संसर्गकाः सर्वदिनाश्रिसिमानकावननदाममयंतु अफुदालम्बनमगाममसर्वदाश्रनेककस्यवयपदाश्रनंभ्रस
मगानकधर्माकखन२महाविनापहसम२ अस्तहमहावलेकर् २ महावलाकिनेहह२ वगवगाकेयधन२ रूरेमभुल
वनाग्रविक्रमकून२ उन२ सर्वगव्यहिदाल२ अश्वती२ रुद्रस्वाहा ॥ ०० ॥ ०० निसूतविद्यामकुसिधिनामधन

धनसि
२७

निसमाफला ० ॥ ॐ नमो ४ वृक्षाय ॥ ॐ नमो ४ गवतु वैत्राचनपुरुकठुनागायतथागगायार्हते सम्यक् वृक्षाय
॥ नमः ॥ ॐ ३ ॥ २ समय २ गत २ दानसमा नृप अनात्रं वन नमः जसा सवति महान्तं निला लम्बनिना कूलनिर्वा
स सर्ववृक्ष नां धिष्ठा धिष्ठि न स्वाहा ॥ ॐ ति वे लाचन नाम धन निसमाफला ॥ १ ॥ ॐ नमो ४ गवतु आर्यश्री अत्रासा
यत धगगायार्हते सम्यक् वृक्षाय ॥ नमः ॥ ॐ कंक नि २ वा क नि २ वाच नि २ वाच नि २ माच नि २ संकासय २ पतिहन २
सर्वकर्मपत्रे पत्रा निमस्वाहा ॥ ॐ ति अत्रासा नाम धन निसमाफला ॥ २ ॥ ॐ नमो ४ गवतु नल्ल कठुनागायार्हते
गगायार्हते सम्यक् वृक्षाय ॥ नमः ॥ ॐ अमिन २ अमि गारु वे अमि न सं हं व अमि न सिद्धि अमि न मिनि अमि न ग
गत कि र्ति कन सर्वा र्थ सिद्धि न सर्वकर्म क सकल प्रयक निस्वाहा ॥ ॐ ति अमि गारु सो नाम धन निसमाफला ॥ ३
ॐ नमो ४ गवतु अमाद्य सिद्धि यत धगगायार्हते सम्यक् वृक्षाय ॥ नमः ॥ ॐ सीद्ध २ सुसिद्ध पत्र मसिद्धि स्वाहा ॥ ॐ ति
अमाद्य सिद्धि नाम धन निसमाफला ॥ ४ ॥ ॐ नमो ४ श्रीमं २ नाथाय ॥ ॐ नमो ४ गवतु चन्द्रवज्रकाटाय ॥ नमः ॥

॥ हन २ कृत् २ तिष्ठ २ वध २ हन २ अमन हं हं हं हं स्वाहा ॥ ७० ॥ निज्म नर कामधन निसमाफथा ॥ ७१ ॥ ॐ नमो ॥
शीमरुनाथाय ॥ ॐ नमो अस्तपंचनाय कृमिदहनदुःखाय मरुतीपनाय चंद्रकाकिमनिवृष्टिप्रदाय देवे
पुरु कं वीरुसाय मरुतीनिवत्पदाय सर्वस्वो नाके सानि कूलपुलि कूलनक्र कूल ॐ श्री ४ धी ४ हं हं स्वा
हा ॥ ७२ ॥ निज्म नर पंचमं रुपा १ साधन नामधन निसमाफ ४ ॥ ७३ ॥ ॐ नमो श्री ४ गभ वृ सिंहाय गनय था ॥ ७४ ॥
निगु निविजय स्वाहा ॥ नमो सुवृषाय सुविगुधकाधय विगुदं मो धे पतितानूवृषय ॥ सद्धर्मपुत्राय गगनूधय
रुगवाग्रुत्तापत्रिगुद्वय ॥ अहा अहा वृषमन रुतज सं अहा अहा सागलमत्रुत्ता ॥ अहा अहा वृषमन रुतग
चत्र ३ ३ स्वतृपुण्यमि वा निइ त्वं ॥ अहा अहा कानि कस्तथा गत ४ सा के कूलन नं दु सृथी ॥ यन दगलखितं सु
यमूल मसर्वपुसत्तामनूयहार्थ ॥ गभ कत्र ४ गभ वृ निरुत्ता गत ४ सत्ताहम ४ सा कपुन पु विष्ट ४ गं मि न गभ का
वित्त सा समाधि ४ यद न वृष्टि निन वृध गभ चला गुत्ता ४ का य कथ सीव काना विहान गुत्ता द्वि पदाह माना न क सर्व

आभनति
१०

धर्माश्च कृतिश्च गुणश्च सत्त्वापि गुणश्च मनोगात्रविद्यन्त ॥ निरुद्धे निरुद्धजिह्वे नमो निरुद्धे (अवामिजि
नस्य दर्शना ॥ सततं च निरुद्धे निधीकः समुद्रपृष्ठं स्वदर्शनां धर्म ॥ स्थण्डिले निरुद्धे त्रिपुण्ड्रानिभ्रति (अकः
कफाभिजिह्वे नसा दर्शना ॥ गदक कार्त्तविरिनायक लंभ्रि (अकः कृष्णसि सूरगनसुदग ॥ ३ ॥
सुगवत्राय द्विजहाज निलं दहा हिमदर्शनकायगीतलं ॥ सत्त्वा ४ संदृष्टा सुवत्रपदर्शना ॥ यज्ञायमं कृत्स्न
कनायकं ॥ ४ ॥ दहादिमदर्शनामोमत्रपलं याहिजातागदवदसि ॥ ४ ॥ गुन्याश्च कायास्तथग्रवका
ना आकासगुणागगलं स्वरावा ॥ ५ ॥ मायामनिचुदकचन्द्रकल्यासर्वेचसत्त्वासुषि ४ स्वरा वामहाकगु
णा ४ स्वयेनायकस्य ॥ १० ॥ ०० तिगुवर्षे रायांकुलदवनास्तुति समाफशा ॥ ० ॥ ॥ ॐ माया गालसपत्र
वानय ॥ ॥ ०० ति माया गालसमकुम्भेथा ॥ ० ॥ ॥ ॐ नमो ४ मेरीसिंहाय ॐ नमो ४ श्रीमेरीयवाधिसत्त्वय
महासत्त्वय महाकार्त्तिकाय नमो रगवतं अकं मनयेन आगगायार्हेके सम्यक् वृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ अजित १ अपम

जो ००

जिन कर्महन २ महामेयी वना किते कन २ महाममसिद्धि एत २ महाम ७ न विजसमन २ अस्मा कसममसिद्धि कां धि २ महा
वाधिसा हा ॥ ॐ माहि २ महामाहि स्वाहा ॥ मति २ महामनि स्वाहा ॥ ॐ निमे दिय पु नि स्स नाम सवे ॥ ० ॥ ॐ नमो
१ श्रीमे दि ना थाय ॥ एव विद्यान सं पत्र ४ सं मा कं वृक्ष ये सर्व सत्त्वार्थ वि वि चित्ता य पृष्ठा पदिय गन्धने दी घ सं सा ना
इ ४ रवा कू न म नू र ना य सु मा कं वा धि पु नि का य ॥ ॐ आ ४ मे य य इ स्वाहा ॥ ॐ निमे दिय नाम सं न नि समा प ४ ॥
२३ ॥ ॐ नमो ४ श्री ला क ना थाय अ मा ध पा स्वा य न न ४ ॥ ए वं म मां कू न म क सिं स म य र ग वा न् पा क न क पु र्व न वि ह्य
नि स्स ॥ श्री य व ल कि न ग ४ त मा रु व ने ॥ अ ने क ग ल ग र मा न च मा का स का नि म्म क क नो ना त न वृ त्त स म य क
रु ति र स द न मा र्ज अ क्क द ग ति ति र स रु मे न व न व वि र श्च वा धि स त्व को ति नि य क स र स रु मे श प नि व न वृ त्त
न क्क रं ० य न म रु ग ल व श्च का यि कां द न प उ न धि हो र्हे ध र्म ड ग य ति र्म ॥ अ थ स त्वा यो व त्ता वि न श्च ना वा धि
वा धि स त्वो म ह स त्वो स्वा या स ना द कां ग मूर्त ना सं क्क र लो द त्रि न जा नू सं सु ले य था कां पु नि का य य न र ग वा सि ना ना

विचित्रिकातिकमरुगवन्तु। हनिगलग्रहिमिस्सुटकायसांनकात्वादवनेवाकय कनिर्वन्धनगतनतर्क
हसवाखोखामवा॥ संतपनोत्तगवन्काके मपी उयावाचिरुपी उया वा ४४ स्सुदगतिनवाट नकमपनिद्रयंग
युष्यवदानेगच्छन्ति॥ पाण्डवगुहसत्वा नाग्रहा धिम्की काना॥ यदिदंरुगवनचनम ४ पर्वदश्वत्वा नावर्तमाते
यो माह नापिये रुदमादयममाद्यपागदय ॥ अथ किउरुही पति ॥ नमिसंनिवाचायेपनि निषिष्टकिनि
षापयिषानिपर्यवापानि ॥ ननखांचसत्वा नाग्रावयिषानि ॥ आर्यापवादके ४ सधर्मपदिश्वक २ अविचिपनय
न ४ सर्वधर्म ॥ वृद्धवाधिसत्वा र्यग्रावकयशे कृद्धपदिश्वक ४॥ सर्वधिसतिमात्रोगच्छपायलो संवनमापदनकस्ये
वगावरुगवन ॥ कोपवासकायदवजन्मनिगुहातिपनिद्रयंगच्छनिवाहवन्ति ॥ ५ काहिकनन ॥ वाहाहिकनवा
गुहिकनवा ॥ चापुर्धिकतवाहननसप्राहिकनगाने ॥ अहिसूनेनवा १ दनगुनेनवा २ नासागुनेनवा ३ नागु
दकाष्टगुनेनवा ४ जिह्वासूनेनवा ५ कर्णगुनेनवा ६ हृदयगुनेनवा ७ उदनगुनेनवा ८ अर्धगुनेनवा ९ कटिगुनेनवा १०

धन ॥
१९

एतस्मिन् न वा असाग्रह निगुन न वा अ निगमि ॥ अ न ग लि र्य ह्य निगम नास्मा सत्ता कर्तृ पूरहि शो क
र्तु नो म दा स्य नि ॥ १० ॥ मानि व म कु प दा ति चि नो य ष नि ॥ अ प नि शि य न ४ अ न प न ४ अ वि के ल्य क न अ र
उ र ४ अ चि ले ग म न ४ अ क ल न ग ४ नि त्र प न स म चि नानि अ प न ४ वि त्र हि न प च क न ॥ अ न न यो ग न वृ ध
न स्य नि शो ग यि न वा ॥ दे द सा द स सा दि ग्वा वृ ध स ह्म स म् त व र्ज न का न यि षं ति ॥ अ ह य न र्म ना व क नि ष
नि प या न या व त्प र्क क नि षा त क त्वा गृ हि त्वा प यी ष्य ति ॥ कृ व र ना र ग व न न्या न्मु ध यो वा अ ष ति ॥ स्व मि र्म य
न वा प ना न व ल्या वा उ च ग्ध न हा उ ना वा ॥ ग म या नि ह्म न व र ग व न्वा ति न ना म्ना व लो की र्म य न स्या न र ग व न न वा के र्त्तु पू र
हि स न सानि य नि ष ति ॥ न य धा पी ना म स र ग क थि ले व प र्क ष द न म्ना क प र म्ना क लु नि वा शो क व र यि हा ष सि
ता यो र ग जि ला यां वा पि स्या अ त्मा न ले प य त् ॥ न च न स्य च न स्य क र्त्तु न क स्य क लु नि का या ग व र ग वा नि ॥ अ न ना ह मा क
४ ४ र्त्तु नि ल षि ना वा ॥ नो ले क सि ष ति ॥ अ पि च स ग न्ध ए व स य वं म व र ग वा नि द म दि य मी य या स द्द व यं ४ क थि र्त्तु

१०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यावत्सामागच्छन्नापि पूजयन्ति बाह्यं न वदन्ति कसंस्तुता नानासु च वेदेषु गतस्तु ॥ १ ॥ विष्णुः ॥ गच्छ यथाप
पत्स्य कुरु वितर्हि नाश्रु विष्णुः किल स समाधिं सुहृत्सु संस्तुतं गच्छन्तसो गच्छि कसंस्तुता नानासु च वेदेषु गतस्तु ॥ १ ॥ कश्चिद्विष्णुं वदन्तु ॥
वाक्यं इति वा वाचि वा विष्णुं निवाउपागका वाउपासिका वा तदन्वावा कश्चित्सत्त्व ॥ २ ॥ माघयाग हृदय मृदिग्ध उक्ता
माम्प वासं कुर्यात् ॥ सफवा नानमाघ याग हृदय मृदिग्ध उक्ता माम्प वासं कुर्यात् ॥ सफवा नानमाघ याग हृदय म
नामापयेत्पत्रिवर्त्येत् ॥ तस्य लगवन्धुवन्धुर्विगति न न संसा पुनिका कुरुवा ॥ ३ ॥ कतम विगति र्य इ न तागा अ
सकामना तस्य क ॥ उत्पन्नो असा नाग १ कम्मावस्य न ग्रीष्मं पुगमया सन्नि ॥ सिग्धम मा हृत्तु अश्रु विष्णुः ॥ वदन्तु न पि
ये अश्रु विष्णुः किमु फन्दि या र्थं पुनिल कश्चा स्य विष्णुः ॥ उत्पन्ना असा र्थं न चो नापमाय कि ॥ वग्नी नानद कृताः
दकन नागा संका किमन सा पाप हन्तुं ॥ कम्मा का असा सन्ना ता र विष्णुः कि नासना व कुरु यं र विष्णुः कि ॥ नवा वदु पितृ य
र विष्णुः कि ॥ सफवा नानमाघ याग हृदये न रस्मा द कं वा प निगपा दिग्वा दिग् उद्वेक इ न स्य व अदा क वं ॥ सही पद

धन ॥
१३

वाउपगमिष्यति ॥ न वाजाहनागजा परकुंग द्रुवति ॥ सर्वसत्त्वानां च पृथ्या रुविष्यति मनश्रूयच रुविष्यति ॥ न वा
गकुंरुय रुविष्यति ॥ उत्पन्नश्चास्य गकुंरुयं प्रसमं पास्यति ॥ न वास्य मनश्रूय रुविष्यति न च कारादरुयं
न च गेकि निरुय न यास्यति वाक्के अपह्नु ॥ अरुविष्यति नाग्निना न विषे न न गमि ॥ कानक निष्यति ॥ दवाचास्य
गगनं समितं न शवर्गु फिय रुगुगति ॥ यद्यद्यत्राप्यस्य के द्रुवतु वीतहि गश्च रुविष्यति ॥ मेधिक नूनाम
दिताय साया ॥ ८० म विगन नृगं सायुनिका क्रिग्यां ॥ आप नान दू धर्मा पति सस्य न कतमान वरे ॥ मनन का से श्री
श्रार्था वला किन गवे नाति रुग्या ॥ समुखे दर्शन दास्यति ॥ सुखे न का सं क निष्यति न रुग्या न दृष्टि रुविष्य न रुग्या विरु
पं क निष्यति न पाद विरुग्या ॥ न पयसा वरुम ये न ट १ काल क निष्यति ॥ सूर्या सुगुग्य निरुविष्यति ॥ ना ॥ ८१ मुख १
कान क निष्यति मनन का न रुग्या प्रख न रुग्या न रुग्या ॥ य द्रुवासा वरुग्या ॥ य निधि सु को पयति रुविष्यति ॥
वितरुग्या रुविष्यति ॥ कल्या मिर्दि १ दिन दिने निका लयी स्वाया निवर्त मिग्या ॥ मय मा स पना ग श्रु न क स १ संका

जो १३

XXXXX

नक्तु नक्षिष्टं विष्णुवर्धनं तच्छ्रद्धा ॥ नमो नमो भगवते धर्मपथ्ययः सर्वसत्तावल्लभा अवयवित्वं ॥ आचार्यमूर्ति नक्त
रुवा ॥ यस्यादिगतमत्तयात्सोपापगता वाधिसत्ता रवकि ॥ सत्ता नामर्थ कत्त ॥ नवाधिः प्राप्य न वाधिसत्ता नंगन नाच च्छे गे वि ॥
वाधिनूचा नयसत्ता उपायः ॥ यतो दो धर्मा सत्ता नामर्थ कत्त ॥ नैव सा पठ ॥ संवत्सरगवन् नूतानियाय च ह मिह दयं नथाग
नसं पूतनः किं रुच्यं च न सं ॥ पथमर्थय हि त्वा य सुखा या यथां चै पापका नि ॥ अथ ख स्रुगवा नार्था वत्ता किं रुच्यं वाधिस
समसत्ता मन्दवाच ॥ रावत्तं उद्ध सत्ता यस्या नं का लं मत्तया गं नथाग न पश्चिम का ल पश्चिम वाधिसत्ता रन कानां पृथु का
र्थ क निष्पत्ति ॥ अथ ख स्रुगवा नार्था वत्ता किं रुच्यं वाधिसत्ता ॥ निमिषत यना रत्ता रगवत्तं मन्दवाच ॥ नूतनगवत्तं च वाधिस
त्तन स्रुगमिदं विना रुमत्तम ॥ लं वदु जन हि ना य वरु न मत्ताय सा कानू वपा ये महाना जन का पत्ता य हि त्वा य सत्ता य ॥ ० ॥
॥ ॐ नमस्तु नगा न पुनि च्छि न ॥ नमस्तु सर्ववृद्ध वाधिसत्ता नमस्तु पृथु क वृद्धार्थ आवक संघरा र्की ना नाग न पृथु च्छे न ॥
नमस्तु सम्पत्तु र्त्ता नाना नमस्तु न दानि पूता महामत्तय ॥ नमस्तु आचार्य मेति य पु म्त्ता र्ता मह वाधिसत्ता ॥ नमस्तु सपुनि च्छि न

[illegible]

ॐ ह्रीं क्लीं १२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००१०१०२१०३१०४१०५१०६१०७१०८१०९११०११११२११३११४११५११६११७११८११९१२०१२१२२१२३१२४१२५१२६१२७१२८१२९१३०१३१३२१३३१३४१३५१३६१३७१३८१३९१४०१४१४२१४३१४४१४५१४६१४७१४८१४९१५०१५१५२१५३१५४१५५१५६१५७१५८१५९१६०१६१६२१६३१६४१६५१६६१६७१६८१६९१७०१७१७२१७३१७४१७५१७६१७७१७८१७९१८०१८१८२१८३१८४१८५१८६१८७१८८१८९१९०१९१९२१९३१९४१९५१९६१९७१९८१९९२००२०१२०२२०३२०४२०५२०६२०७२०८२०९२१०२११२१२२२१२३२१२४२१२५२१२६२१२७२१२८२१२९२१३०२१३१३२२१३३२१३४२१३५२१३६२१३७२१३८२१३९२१४०२१४१२१४२२१४३२१४४२१४५२१४६२१४७२१४८२१४९२१५०२१५१२१५२२१५३२१५४२१५५२१५६२१५७२१५८२१५९२१६०२१६१२१६२२१६३२१६४२१६५२१६६२१६७२१६८२१६९२१७०२१७१२१७२२१७३२१७४२१७५२१७६२१७७२१७८२१७९२१८०२१८१२१८२२१८३२१८४२१८५२१८६२१८७२१८८२१८९२१९०२१९१२१९२२१९३२१९४२१९५२१९६२१९७२१९८२१९९२२००२२०१२२०२२२०३२२०४२२०५२२०६२२०७२२०८२२०९२२१०२२११२२१२२२१२३२२१२४२२१२५२२१२६२२१२७२२१२८२२१२९२२१३०२२१३१२१३२२१३३२२१३४२२१३५२२१३६२२१३७२२१३८२२१३९२२१४०२२१४१२२१४२२२१४३२२१४४२२१४५२२१४६२२१४७२२१४८२२१४९२२१५०२२१५१२२१५२२२१५३२२१५४२२१५५२२१५६२२१५७२२१५८२२१५९२२१६०२२१६१२२१६२२२१६३२२१६४२२१६५२२१६६२२१६७२२१६८२२१६९२२१७०२२१७१२२१७२२२१७३२२१७४२२१७५२२१७६२२१७७२२१७८२२१७९२२१८०२२१८१२२१८२२२१८३२२१८४२२१८५२२१८६२२१८७२२१८८२२१८९२२१९०२२१९१२२१९२२२१९३२२१९४२२१९५२२१९६२२१९७२२१९८२२१९९२२२००२२२०१२२२०२२२२०३२२२०४२२२०५२२२०६२२२०७२२२०८२२२०९२२२१०२२२११२२२१२२२२१२३२२२१२४२२२१२५२२२१२६२२२१२७२२२१२८२२२१२९२२२१३०२२२१३१२२१३२२२१३३२२२१३४२२२१३५२२२१३६२२२१३७२२२१३८२२२१३९२२२१४०२२२१४१२२२१४२२२२१४३२२२१४४२२२१४५२२२१४६२२२१४७२२२१४८२२२१४९२२२१५०२२२१५१२२२१५२२२२१५३२२२१५४२२२१५५२२२१५६२२२१५७२२२१५८२२२१५९२२२१६०२२२१६१२२२१६२२२२१६३२२२१६४२२२१६५२२२१६६२२२१६७२२२१६८२२२१६९२२२१७०२२२१७१२२२१७२२२२१७३२२२१७४२२२१७५२२२१७६२२२१७७२२२१७८२२२१७९२२२१८०२२२१८१२२२१८२२२२१८३२२२१८४२२२१८५२२२१८६२२२१८७२२२१८८२२२१८९२२२१९०२२२१९१२२२१९२२२१९३२२२१९४२२२१९५२२२१९६२२२१९७२२२१९८२२२१९९२२२२००२२२२०१२२२२०२२२२२०३२२२२०४२२२२०५२२२२०६२२२२०७२२२२०८२२२२०९२२२२१०२२२२११२२२२१२२२२१२३२२२२१२४२२२२१२५२२२२१२६२२२२१२७२२२२१२८२२२२१२९२२२२१३०२२२२१३१२२२१३२२२२१३३२२२२१३४२२२२१३५२२२२१३६२२२२१३७२२२२१३८२२२२१३९२२२२१४०२२२२१४१२२२१४२२२२१४३२२२२१४४२२२१४५२२२१४६२२२१४७२२२१४८२२२१४९२

धनसी
१६

वहसे साहा ॥ ॐ ग्रासो किकि ॥ ॐ ॥ इह दूसाहा ॥ नियतानियत बदन मीमांसु रसा मय हगं वक्त मर्म ॥ ॐ ॥ गवत ॥ पत्रिज
यकू रसाहा ॥ ॐ पमह सा मसाहा ॥ ॐ वृद्ध धर्म संया मसाहा ॥ ॐ ॥ पाठ गामिद सा मनु स कर्मा नितव कि द्विः
कात्र जापन पक्ष न न र्याति विजय धमनि ॥ सर्व कर्मा वन विग्रही च कसा ति ॥ अर्गु नू धू पन सिमा वंधू ॥ रसाद क
नगं पख ना किल फाये ॥ सर्व क न प्रसू कं वं धयित वं सर्व व्या धिषू न के समू द क म्वा प निज पदा न व ॥ कारवा
दह द नंग मु त न का सु न उ द न स न व ॥ गम द कं विरव नाग नं ॥ लिंक या ॥ उद क न वा ॥ चक्षु ना कै ग ॥ अ न सु य ॥ क
व ॥ वं धमि न व ॥ सिमा वं धमि न व ॥ ॐ ॥ सर्व न क ॥ उ कं ना द क न वा ॥ रसा क न वा स र्ग ह प्र य च नं ॥ कि क सू य कं ॥ सर्व
जा ने प सा न सू कं ॥ सो र्धे कि ना र न सा ह लिं ग म त ग र ह म ध पि य ति य न ॥ चक्षु ना ज ग ॥ अ द क प न ॥ व द क व ह हि म ह
कार नि क ॥ ॐ ॥ स्व न म ह म हा ह ग ग त स र ग कं ॥ क न २ कि नि २ कू न २ ध न २ ह न २ व न २ स न २ क न २ क न २ कि नि २ कू न २
म म हा वि रु ध वि ष न नि बा सि न म हा का नू ति कं ॥ स फू प नि वा न म नू ॥ ॐ ॥ ग न ग हा प वि न त त म कू ग मा ना ध न सर्व ह सि

गं ६

[illegible]

अनन्त
१७

नसिमाव श्वहा रणाद केन गंधपतदिना कि लकये ४ सर्वज्ञेषु सूत्र कं व श्वयिन वं ॥ सर्ववाधिषूषु नते स मुद के वाप
त्रिजपादा न वं ॥ का खेदं छ द न स मु न न शं सूय न उ द न सूत्र व ॥ अ द के विष ना स न मि हिं क मा ॥ उ द के न व ॥ च रे नो ॥ ७ ॥
न सू व ॥ वं ध यि न वं ॥ द न सू तं क ल वि न द न व स सि मा व ॥ प च न गी क सू त्र मे क वि स ति वा ना त्प त्रि ज प च तु पू र्व दि न कि
ल के पू च तु दि ग त्रि र णा न वं ॥ सि मा व ॥ श्व व त्ति ॥ सर्व न श्वा सू त्र क ना द के न वा ॥ र म कि न वा स र्व श र्ष प क्त्र जि क
सू त्र क ॥ सर्व जी न पू ॥ ग तु सू त्र कं ॥ स ये कि ना नू क ला ह लि न ग ल य सै ह भू म ध पि प नि य तं ॥ च रु त्रा ग ॥ अ द कं प ला सी द
कै म ध ॥ अ द कं वा ॥ स र्व क ति के स र वि वा द ण र वा न श्व क कं प त्रि ज प मू र व प ह न ये क वं ॥ प त्र वि र व य ना र्थे ना क्श प द वा
न श्वा सू त्र क ल गं स म्प यि त्वा ७ वि नां सू चि व स्रु पा वि न न म ह किं पू ज्ञां कृ त्वा वा च यि न वं ॥ म हा सा नि र व त्ति ॥ न न वा द के न
स क ष्य स र्व स त्वा नां न श्वा क ना र व नि स र्व पू प ड वा प स ॥ ४ ॥ प सा म कि ॥ मू दि का च उ नू ति न क ह द य ॥ क वि ग ति वा ना च
त्रि ज प क र्त्त वं स व नि र्वा न या मि त्र प यि ष्य ति ॥ ग न न गाय न म ह न गाय म् ॥ हा म न स र्व स त्वा न म् च न द न हा म न स र्व ग ह

१७

नन का॥ जया विजया अथ नातिमानां कृतिगुणानां कृति॥ वा नृत्ति अथ यणानि नृत्ति यपातिगन्धपिपयगतं वक्राविष्ट
काकी॥ सामनाजिसूनन्दा चरि॥ यथासं हवता इष्टा नृगनृयनात्यत्रिजपमन्त्रि कृत्वा गितसिवात्र यिक्तं॥ वा न
नागत्रनात्रि॥ विलम्बस्वयं पत्रं सोलाग्निकसं॥ अलम्बिपसमनं पृथक् केन नमसिनां वृद्ध न सर्वत्र का कृत्वा
वनिविषाग्निनां कृमि विषकृतं नापयन्॥ उत्पन्ना अपि न पीजा जनयिष्यन्ति॥ श्राद्धं युगमयिष्यन्ति॥ ग्रहा युगमयिष्य
न्ति वा नमोपासनिस्तु नृनं वा नि॥ कन विनया सर्वकर्म कलशा न्याय्य वत्ता किनश्च न हृदयं पत्रमसिद्ध समाधि नवे
तानि कर्माणि कुरु॥ अथ साधयिष्युमिच्छन्निधि॥ पृष्ठ १॥ केवर्ष केवर्ष सुनिमामाति त्वार्या वत्ता किनश्च नृजना
मरुदधनि॥ अथ च कर्म कुरुयन्निवासा॥ पृष्ठ २॥ पतिवगधनं सर्वत्र का न विरुषितं कृत्वा पाषाणिकेन चित्त कलेनः
चित्रायितव्यं॥ ततः साधकतनया श्रुताः पतिवगधनं सर्वत्र का न विरुषितं कृत्वा पाषाणिकेन चित्त कलेनः
४ स्त्रायितव्यं॥ अथ वृषहा नाशुषि रूपा कननानि॥ वनिमा नृसन्धि नवजिह्व॥ अथ वृषपदहता विद्या अथ वृषह

अ न ॥
१८

सुजापयित्वां ॥ अहं नाशयितुं न वादि ॥ कुलं जिना वा विष्णु लस्मापि नाशयितुं विवमुद्रा वृत्ता हस्तापादा न वं ॥ न न ॥
॥ शिमाया अगु न अस्मा न कृति न पस्य कि ॥ न दृष्ट्वा च पुहिषा कि या वत्त्वया मया च यो व नो कि न ॥ न जग च्छुति
॥ सर्वा साप नि सां प नि पू न य कि ॥ म न ॥ गिला ह न मा प नि ग प अजी ॥ अ म पि ला ॥ न त्वे अ न हि नं ह व नि ॥ अ क ल
॥ कु म नि अ यं मा ह ह न य ह न म स्या धि प्र ति नं र न ॥ य दि च्छु ति न ल क मा ल्ये व सा ध क ॥ ॥ ६० दं म व
व ह ग वा ना ह म ना न्यो व सो कि न ॥ न नो वा धि रं त्व म हा स त्व स च रि ह व स व वा धि स त्वा स च वा धि गु वा वा स का
यि के द व पू या सं द व ना नू वा सून ग नू उ ग न्ध वा यै ला का र ग व नो ला धि नं म म्प न दि नि मि ॥ ॥ ६० ति म्प या अ मो ध
पा स ना म ह द यं म ह म्प न म्प नो म धा न नि प नि स मा फ ॥ ॥ २५ ॥ कुं न म ॥ ४ ग्रा ला क ना धा मे ॥ ४ कुं न म ॥ ४
व स र्प ना मे ॥ ४ ता स द र्प ना मे ॥ ४ का ग विं ना म्प न लो क वि न सं क म्प स र्प स त्वा ना य सा नि कू नू प रि कू नू न
आ कू नू सि धि कू नू ॥ ४ ४ जी ॥ ४ ह ह स्वा हा ॥ नू य व स म र्प ना म धा न नि प नि स मा फ ॥ ४ ॥ २५ ॥ कुं न म ॥ ४ ला क

ग ६

काद्युसखंगमावा ५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ सर्वथा साधनं गुरुवे नमः ॥ सर्वस्वनां पापमात्रविनाशकः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सर्व कर्मा वन नानि मम गवति सह सावर्हिः ॥ सर्ववृद्धवला कि न चरु आग्रजिह्वा म ना विह्व न विरगा धनित्वा न यथा ॥ ॐ सूत्रं प
सूत्रं नरं न संकृतं न रं न रं न रं ॥ सर्ववृद्धा धिष्ठिते स्वाहा ॥ ॐ सर्ववृद्धा वना कि न स्वाहा ॥ ॐ धर्मधनु ग क स्वाहा ॥ ॐ अरुणवर्गव
वधर्मवर्गव धनि स्वाहा ॥ आयुसहस्रवर्षा नाम धन भी समापरा ॥ २५ ॥ ॐ नमो लोकनां थाया ॥ ॐ मनिपञ्चरू ॥ कानध
नयागं वन कमलधरा जपमाना वरुनियया कर्मगंधीनः कलपूत्रा रुदयया च कचिरूपवीधं अनुगमना नयानिहि
म कटसूत्रं त्वं मं कुक्षी तं धं ॐ मनिपञ्चरू कागुषगु रुलयदपातु वो लोकनां थ ॥ ॐ ॥ मय्या मोहं दुकां लं ऊपयः
ग्री क इष पापया च न कालित्वं दुःखं भगवतु न गतिगारुष आषा ननासाः उदका धर्म कामा अरुयसूखरु लदायिना
नपि सिद्धिगु कृष्णमन्त्र निलरु नि कमनि मय्यर्त्तु च दुःखलवा ॥ म ॥ निपय्या म्भाने नि सिद्धि न कि न ना सज्जिका
पञ्चसंस्तु पाथिग म्भानि सुकलग्न निधिहमपम विकारां ॥ एवं सा नायमाश्च न वचन ति ना ना न क वाल कर्मा
सर्वं लोकनां थं सूत्रं न रं न रं नि ना पातु वाजे न रं ॥ ति ॥ पमपमासू धि न नृप न हि नं हान दि फी प की धम्य

अत्र लि
६२

एताना न का लो ग क ल न नू दि ना पा प म का धो मा ऋं म र्हे श्री हू न दी पं र व ति न व गु न ला धि ता सर्व ला का लो का ना ला क
ना थं प न म गु ल क नं गा न लि त स वा धं ॥ प ॥ म ग ह्रियं स म कं सक ल स मू दि ता मि श्र ता गु ष्ठा ला क या या वा ॥ ३३ ॥ मा
ना सु रु न सु ख रु सं गु हि मा धं य क धं ॥ या व ह्ना ना म य वि नि र व स मू दि ता वा क्त वा न कु न रा क श्चि त् दि र्घ सु धि न म नू ह
द य धि ना पा तु वा ध म् चि त् ॥ मे ॥ इ हं ग ना न य क च्छ क थ स ह ण ना ह ण ला क वा ॥ इ ह वा धि य हा त्रे य न वि क
त न ला सर्व क थ पु सा नं ॥ वे धा ना वे ध ना थ श्रु ति न न रं गं का यं सि धि च का यं ॥ त नू वा श्र म ना यी य ष क्त क थि ता मि श्र
वि कृ म शि त् ॥ इ ॥ स म्प क्क वू ष मा ना त य स क ल ह ना ला क ना थ पु रा वा य तू ष्ण य थ मा ना पं ह सि त द द या ग न य गा मा ऋ
ला हा श्रा य क ल्या न ह तु क थि त न न र ना यां त या न वि ण षा ला या ना मा नि ना ला श्र नू ल स रु न ना गु ष्ठा ना द ह द वा ॥ ३४ ॥ ति
पु थ मा हू न ॥ ६० ॥ न स फ मि श्र न न स य क ष ७ क्त न स व स मा फ ॥ ३५ ॥ ॐ न मा स्तु कं ना थ य ॥ न म स्तु वा धि स स्ता य म हा
स ला य गा धि नि ॥ आ र्प्य वि ला कि न ग म य म ह र्वा ना म सृ ग्मि य ॥ ६ ॥ प म ग्री रु धि ता ग म य स द्ध म् व न दाय ने ॥ न म व स क ना य

६२

उवनहृदि कनायक ॥ सर्वदा जगदाश्व सर्वानानायाय च ॥ सतसहस्रायकातिनश्रुश्रवण ॥ ३१ ॥ वडवाम्ब
पर्यन्तगसिदिगमननायचः सर्वधर्मान् नूपायधर्मप्रियायसूदये ॥ ३२ ॥ सर्वसत्त्वमहद्विषसंसारकनायच ॥
मत्स्यायमृगजन्तुनामाश्वसनकलाय ॥ ३३ ॥ ह्यननागधर्ममांगयधर्मार्थप्रियदायिन ॥ नक्षत्रां रूषिनां जायससु
भग्युदायच ॥ ३४ ॥ सर्वननकरुमिनां संगावकनायच ॥ ह्यनग्रीसंपुत्रमाय ह्यनलक्ष्मिपदायच ॥ ३५ ॥ सामने
४ सासूत्रदेयलाके ४ संप्रजिनायच ॥ नमस्कृताय तत्कायवदिताय नमस्तदा ॥ ३६ ॥ अथ यदानदहायपात्रमिगाप
पदसिनसूर्यनाचनदिफायधर्मदीपकनाय ॥ ३७ ॥ कामरूपाय गभर्वसूत्रपायसूत्रविनहमनागवित्रहायपत्रमा
र्थवियोगविनुत ॥ ३८ ॥ अथिगमहीनधर्मायसमूखदगंशायच ॥ सर्वसमाधिफायस्वर्गतिकनायच ॥ ३९ ॥ सं
विह्वलितग्रायमूनिपुत्रवगत्रयि ॥ वध्ववध्ववधनां समागूनकात्रायच ॥ ४० ॥ सर्वलवानूपायसमूयवि
नकाति ॥ वध्वपत्रिजनाद्यायचिनामनिसूयि ॥ ४१ ॥ निर्वानमाग्रे सकनगंदर्गनपदायचरुतप्रतपिवादिः

कनाथाय ॥ नमहंरगवक्षुःशुक्ललोकिनगवनायन ॥ पमरुतमहसायसुपज्ञादकनायवा ॥ १ ॥ पमसायपम
शीपत्रिवृतसमूहया ॥ संगुहपमहसायगगदागमदायिन ॥ २ ॥ एथिवितननायसगुधपचचरुष ॥ जिननत्वकी
त्रिजयचिकामतिविरुषि ॥ ३ ॥ ॐ नमहंरगवक्षुःशुक्ललोकिनगवनायन ॥ महसायज
गहर्लुपा ॥ दायमहात्म ॥ १ ॥ एथिवितननायसगुहपमधनायवा ॥ पमशीपत्रिवृतायसूचननकनायवा ॥
२ ॥ धर्मधनायनाथायदगहूमिश्रनायवा ॥ सुनिर्दतिमहायानसंप्रसिद्धतायसर्वदा ॥ ३ ॥ ॐ आर्यावलोकित
गवनायउमामहंरगवक्षुःशुक्ललोकिनगवनायन ॥ ३८ ॥ ॐ नमो ॥ समकुहडाय ॥ अथखनसमकुहडावोधिसखमहसख ॥ गान
वलोकाधनुपनयनानहिलापनहिलापवृद्धरुपनमानन ॥ समाकलाकस्यप्रसन्नानहिलागयमानारुयस्यामा
माययागमथाहिर्गितनप्रतिष्ठानमकार्षिन् ॥ १ ॥ यावकिचिद्गदिसीलोकसर्वहियधगगाननसिंहा ॥ गानरुवद
मिसर्विअस्पष्टान्कायगुवाचमननप्रसन्न ॥ २ ॥ ॐ नमो ॥ कायप्रनामसर्वजिनाकनामिप्रनामसर्वजिना

धननि
६५

हि मय नमननः रडचनिपुनि। धनवसन ॥ १ ॥ ५ क न गी नमयं वरु न वरु सगान निषर्तु कुमध ॥ एवं मस गधम
न धनुः सर्व धि म्च म्पूजित हिं ॥ २ ॥ १० च नृयं व र्त्तिसमृडा सर्व स्व नाग समृड नृग हिं ॥ सर्व जि न नृग ना
नृन नान सान सगान सव सि अहा सर्वान ॥ ३ ॥ ११ पृषव न हिं च मात्य व न हिं वाय विन पत च्छ व न हिं ॥ दि
प व न हिं च प्र व न हिं पुन न नृ जि नान क नो मि ॥ ४ ॥ १२ व मु व न हिं च रा न व न हिं च र्त्त पट हिं ॥ च म नृ साम हिं
सर्व वि जि। वि पृह व न हिं पुन न नृ नि नां क नो मि ॥ ५ ॥ १३ या च नृ नृ नृ पु ग उ दा ना ना न धि म्च मि सर्व जि ना
ना ॥ रडचनि अ धि म्कि व न न व च मि पु ग या मि जि न स र्वाना ॥ ६ ॥ १४ य च नृ नृ म यि पा प ह व या ना ग मु द व मु
मा ह व स्य न ॥ का य मु वा व म न न न थे व य नि द ग या मि अरु सर्व ॥ ७ ॥ १५ य च द ग दि जि पु ल ग ग स्य जे रू अ जे रू प स्य क
जि ना ना ॥ व ध स गान थ सर्व जि ना नां न नृ मा द धि मि अरु सर्व ॥ ८ ॥ १६ य च द ग दि गी ला क पु दि पा वा धि वि रू
स म नृ पा फा ॥ ना व रू सर्वि अ धि मि ना था च क नृ नृ नृ व ल न ये ॥ ९ ॥ १७ य पि च नि र्ब दि द ग मु का मा सान

६५

[illegible]

[illegible]

६५

शपमद्राः सुप्रनक्रिञ्चिक्रियवृद्धाः वृद्धसूगानतिषर्कूमः पश्चिमवापिचरिचनमा ॥ २९ ॥ अवंमस्य
षनसर्वदिग्मसूगानपथ्यपश्चिमध्वमा ॥ ३० ॥ वृद्धसमूहपिङ्गुसमूहानाहनिचानिकः कस्यसमूहः ॥ ३० ॥ अकस्व
नागसमूहद्रुतसूवर्जिना नखनागविगुप्तिः ॥ सर्वजगत्स्ययथागयद्याषां वृद्धसमूहसूतिमा मत्रनित्यं ॥ ३१ ॥ तेष्वच
यद्याषनरुषः सर्वरूपध्वगगानजिनानां चकनयापनिवर्हयमानाः वृद्धिवलनं अह्यविनायं ॥ ३२ ॥ अकज्ज
नञ्जनागतसर्वानकस्यषवगअह्यविनायं यपिचकस्यरूपध्वमानाः साकनकादिप्रविष्टचनयं ॥ ३३ ॥ यचरूपध्वग
नत्रसिंहः ॥ ताद्रूपध्वमचकनन ॥ तेष्वचगमिगमाहानिनिर्णयः मायगतनविमात्रवन्न ॥ ३४ ॥ यचरूपध्वसू
प्रविष्टा ॥ स्नाननिर्हचकनजागमचवमगाषनसर्वदिग्मसूदाहनिग्रुविष्टजिनानां ॥ ३५ ॥ यचञ्जनाग
नसाकयदिपातं वृद्धिचकनचकपुर्तिः यपिचदगनिनिष्ठप्रसादिगुनरूपसंप्रपसंकुमिनाथान् ॥ ३६ ॥ अद्वि
लनसमकजवनः ॥ यानवलनसमकमुखन ॥ चर्यविलनसमकगुणः ॥ मेषीवलनसमकगगन ॥ ३७ ॥ पृथ

ਅਨੰਦ

11

[illegible]

वयाः अनाश्रुत्वा तत्र निष्कृत्यैव कर्म उक्तं गुणवत्तमं त्रिषु नावत्तमं त्रिषु ममपनिधत्तं ॥ ५७ ॥ यश्च दगदिसिञ्जुश्च न क
नत्त अलको न देशजिना नो ॥ दिवच मानूष सोख विमिष्य न कृत्वा न रूपमवस्थ ददया ॥ ५८ ॥ यश्च लूमपनिनामनना
जं अल्वसुर्जनपदमधिमुक्तिं ॥ वाधिवनामपार्थयमानाः अग्रविगिहृत् वदिमूषा ॥ ५९ ॥ वद्विं न न हवन्ति अपाया
वद्विं न न हवन्ति कुमिता ॥ क्षिप्रसपथ नितं अमिगारं पसासमूहचत्रिपुनिधत्तं ॥ ६० ॥ लोहसूत्रसृजिवतु नषां स्वागतु
नच्छमानूषजन्मशायाहगसोहि समकलद सुपितथं न विनिर्भरवन्ति ॥ ६१ ॥ पापकूपके अतनूत्रिपानि यत अरु
नवणातकानि ॥ सा लूमूहचत्रिहत्तमान ॥ क्षिप्रपत्रिक्रम नति असाषा ॥ ६२ ॥ हानुनूपतुलनकृत्यः वस्तु तुल्य
रुतातुनूपन ॥ निथि कमानगत हिनधुषा ॥ प्रजितरु निवसर्वयित्ताके ॥ ६३ ॥ क्षिप्रसगच्छा निवाधि क्रमदुःखत्वे निषि
दनि सत्वहिनाय ॥ वधिय वाधिपुवर्हयि चक्रं धर्मि पात्रसेन्यकसर्व ॥ ६४ ॥ या लूमूहचत्रिपुनिधत्तं धनयि वाधे
यिदगयिगावावृधिविज्ञान निया ॥ शुविपाकाधिविधि ॥ धमकाज्जनतथ ॥ ६५ ॥ मरुगीनिधत्तं ननु सून ॥ सा च समकल

उम क स्मि नुम पर ग वा ना की व ना कि न ग व ल स र ह ग म न पा न न क प व ग सि र व न स ना ना न त व रु स ह म स मा धि व व कि र्त्त
ज म न र स र्व र्त्त का के ना रा स ॥ ना ना न त म य वि मा न र मि प द ग वि ह नि स्म ॥ अ न के श्व द व ना ग य र्त्त स न ग नृ त्ति अ न
म ह न ग म न र्त्ता म न र्त्ता क नि नि य न ग न स ह मु १ सा र्त्त य नृ प नृ रा ग वा न पू न र्त्त न स र्त्ता ग नृ क ना मा नि रु १ प्र जि ना
अ र्त्ति ना अ प चा यि ना य नि वृ त्त ध र्म्म द म य नि स्म ॥ आ दी क र्त्ता न म ध क र्त्ता न प र्त्त व सा न क र्त्ता न स र्त्त स व र्त्त न क व ल य
नि र्त्त प नि रु र्त्त व र्त्त स र्त्त स प का नि स्म ॥ अ थ र व त्त्त व मा या द वा १ आ र्त्ता व लो कि न ग न र्त्त न व कि स्म ॥ ह र ग व र्त्त १
कि न क न नि य १ अ प नि र्त्त न ल न १ अ नृ पा द स र्त्त प नि र्त्ति न र व स र्त्ता ग न स म र्त्त ह न स र्त्त वि मू क वि र्त्त स वि मू क प ह र्त्त
१ अ ग न यो म हा ना ग र्त्त व ना व सि प न म पा न मि ना य प्र प नि र्त्त पृ १ पृ १ ह न स र्त्त १ उ नि र्त्त व का ना न १ प न हि न
य त्त्त १ म हा क नृ ना त द ह द य १ प र्त्ता प न म स र्त्त व त्त्त १ स र्त्त प द १ स र्त्ता ह प स र्त्त य सा अ न क स र्त्ता ह न १ ॥ कृ ग स र्त्त न
प नि र्त्त १ स र्त्ता त्म १ १ यि र्त्त व न क र्त्ता व १ ॥ वे ग न लो ग वि ग न द्वा वि ग न मा हा वि म स र्त्ता ह न ॥ १ वि द्य पा न ग १ १

धनलि
६६

उरिहृष्टाफः नारगधपनिहृलहृदाधिगत्सहापुनखननधनः अजात्यनयभनालहृगागभु (गंतां) सर्वहृदरह
कुयविपातुनवगुगमूर्तिननागकगः चान्ननजनाधनः अजासापापागधमूर्दीशाभ्रमिताहृजिनपुकात्रमिहृ
लिनयांमपुहृकाचनानादिपठिगगमराहृएविपुननगाउतिहृदिनलाषीषहृपुहृतिनमनिकयहृपविगार्दका
यहापगहृमिप्रतिस्तिगहृपगपनमिनापुनहृअषहृसिलहृअधिन्दगीलसिंहविकाननमहृसिहृविकममहृगंतिननाद
हृसिहृनाहृविग्वनादहृकामल्ललिनगमयहृवृखलनगनिहृदतिगवहृसूनाहृगमिहृननाहृहृअचचदालकतेतिनकहृ
विष्टितनानविवाकापनम्माहृनिननहृउतुगमनामिकहृकनसाकातिगीवहृदिद्यीगापपमृतिमृरगार्सनखहृजास
वनवहृहृसहृचकासकाठपानिहृकपानिधिहालतिहृगउअपुविगुगभनहृवृअगमिहृनसवनहृहृपयनमपियगमहृप
मनियोकगोहृियाहृगाम्नादकाचनवहृनमनियकमनाककमलकनकमनाहृवहृकमलसमृवहृकमनासुनहृकपन
मृखहृकमलहृसहृकमलुनूकहृसहृकहृजिनधनहृविहृलधनहृअधनहृपधधनहृपुविनधनहृपूर्वाहिनाखिहृअमि

६६

[illegible]

नमिना पूज्यो ॥ ॐ सर्वविघ्नसर्वपापविशोधनिहानावलाकिनीपुनिधियानमिना पूजं कीर्तं हूँ ॥ सर्वविघ्नसर्वपापयगधना
पायं पा नमिना पूज ॥ ॐ सर्वविघ्नतत्र कवया कर्षनिहं हूँ ॥ ॐ सर्वविघ्नतत्र कउर्ध्वग निहं हूँ ॥ ॐ सर्वविघ्न
सर्वपायगधमाच निहं हूँ ॥ ॐ सर्वविघ्नसर्वपायगतिग्रहत्रिगंधनिस्वाहा ॥ ॐ मेघो ह नेत्राय स्वाहा ॥ ॐ श्रमोघे दसि त्रिहं ॥ ॐ
सर्वपायवज्रह नर सर्वपापविशोधनिहं ॥ ॐ सर्वपापकमाह निघातनमतिहं ॥ ॐ गन्धहसिनिहं ॥ ॐ गन्धधमहं ॥ ॐ गगन
चनहं ॥ ॐ ह्यानकेतु हानावर्हिहं ॥ ॐ श्रमक श्रमकेपुल श्रमि तव तिहं ॥ ॐ चरु क क किनी स्वाहा ॥ ॐ हृदयतिरुदनन स्वा
हा ॥ ॐ ह्याननिमहा हानि स्वाहा ॥ ॐ वज्रग हं हूँ ॥ ॐ श्रुयं कर्मावननविशोधनिस्वाहा ॥ ॐ निलेनकट स्वाहा ॥ ॐ समनहं
हं हूँ ॥ ॐ गृह्वज्रसमयहं ॥ ॐ वज्रकालानना कीर्तं ॥ ॐ श्रुषिषि उमां हं हूँ ॥ ॐ वज्रकालानन कीर्तं हूँ ॥ ॐ
वज्राननादहयचमधनज हं हूँ ॥ ॐ वज्रहृदयवज्र २ सर्वान स्वाहा ॥ हूँ २ हं हूँ ॥ ॐ जये हूँ ॥ ॐ वज्रगध हं ॥ ॐ वज्रपा
ज कीर्तं ॥ ॐ वज्रपाका पटमिनिच ॥ ॐ श्री वज्रकाटि नूटमट ॥ ॐ वज्रसिन नूटमट ॥ ॐ वज्रकर्म हं ॥ ॐ वज्रवध वं ॥ ॐ व

अनंती
२०

ॐ सर्वविद् ॥ ॐ सर्वविद् कायकचित् रूपनामनवजवधनकनामि ॥ ॐ सर्वतथागतपूजापहनायातमानतिव्य
नयामि ॥ सवनतथागतवजसत्त्वं अहिषिकधिष्ठितसमां ॥ ॐ सर्वविद् सर्वतथागतवजकर्मो यो न माने निष्ठा मया
मि ॐ सर्वतथागतवजकर्मो नूयामां ॥ ॐ सर्वविद् एष पूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॐ सर्ववित् एष पूजामद्य स
मुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् आलाकपूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् गभपूजामद्य समुद्ररुत्तनं
समयहं ॥ ॐ सर्वविद् वा ॥ ॐ पूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् पूजाहागभनाया वनिकि ठासीमानरु
नपूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् वस्तानका नपूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् वज्रमद्य स
मुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् महावज्ररुत्तनं वधानपात्रमिता पूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् अत्र
रुत्तनपूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ महावा ॥ ॐ गदानगिनेपात्रमिता पूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥
ॐ सर्वविद् नूरुत्तनमहावज्ररुत्तनं पात्रमिता पूजामद्य समुद्ररुत्तनं समयहं ॥ ॐ सर्वविद् संसानपनिर्वहं एषामानरु

२०

नमो हविर्ग्यानमिना पूजामद्य समुद्र रु लन समयहं ॥ ॐ सर्व विदु नरु न सोख विहान धन पात्र मिना पूजामद्य समुद्र रु लन
समयहं ॥ सर्व विदु नरु ना कृग कृद महा प्रहा पात्र मिना पूजामद्य समुद्र रु लन समयहं ॥ ॐ सर्व विदु सर्व पायग न्धना स
निवजग र्त्वा पात्र मिना पूजामद्य समुद्र रु लन समयहं ॥ ॐ सर्व विदु द काय निद्या न न पत्र मद्य समुद्र रु लन सम
यहं ॥ ॐ सर्व विदु वा क निर्या क न पूजामद्य समुद्र रु लन समयहं ॥ ॐ सर्व विदु चिह्नि यी क या मि पूजामद्य समुद्र रु ल
न समयहं ॥ ॐ सर्व विदु तिष्ठ वज्र द टा मरु व ह द य म प्र य च्छ वि धि त सर्व सि धि कै र्दं रु रु रु रु रु ॥ ॐ वं मु छि व ॥ ॐ स
र्व विदु न्द्रु रु रु रु रु ॥ ॐ सर्व विदु ॥ अध २ सर्व पाप न पन य हं ॥ सर्व विदु सर्व पाप वि ॥ अध नि र्दं रु रु ॥ ॐ सर्व विदु सर्व वि
न वि ॥ अध न म् ४ रु रु ॥ ॐ म न २ महा म न य स्वाहा ॥ ॐ न नारु ग व ते सर्व इ र्ज नि ष त्रि ॥ अध न ना ग म न्ध ग ना
या ह न सम्य क वृ द्धा य ॥ न य धा ॥ ॐ अध २ सर्व पाप वि ॥ अध न गु ढ वि सु द्ध सर्व क र्मा वि न न वी ष ध न स्वाहा ॥ ॐ सर्व विदु
वज्र चक्र ॥ ॐ समयहं ॥ ॐ पु नि कृ व ज हं ॥ ॐ पु नि गृ ह्ण त्व मि ति महा व ने ति ॥ ॐ व ग स त्व म य रु म च रु द्वा य मि स

[illegible]

১৭

[illegible]

वज्रकर्म्मकृत्स्नं ॥ अ० अ० अ० क० पि० २ ह० हि० वि० नि० वि० नृ० प० नृ० स्या० य० मा० य० स्वाहा ॥ सर्वरुतल्यकनकनृत्वाहा ॥ ह० सि०
वि० नि० वि० पा० ज्ञ० य० स्वाहा ॐ स्व० स्व० म० प० व० स्वाहा ॐ क० व० ज्ञ० य० स्वाहा ॥ ॐ ह० ह० ह० शि० व० स्वाहा ॐ उ० ह० व० म० ॥ स्वाहा ॥ ॐ सूर्यो० य०
ग्रहा० वि० प० य० स्वाहा ॐ च० ज्ञ० य० न० क० वि० प० न० य० स्वाहा ॥ अ० (अ० पृ० वि० वि० स्वाहा ॥ ॐ अ० स० न० त्व० ४ स्वाहा ॐ ना० ग० त्व० ४ स्वाहा ॐ सर्व० यो०
(ग० वि० रु० म० त्या० द० यामि० समू० द० रु० तन० सम० य० ॥ असमाचनसमिन्नसानधर्मिन० ४ क० नृ० ॥ त्म० का० ४ ग० ग० इ० व० हान० य० ४ असमन्तसर्व०
नसिद्धिदायिन० ॥ असमाचसमेवनायधर्मि० ४ न० ग० ॥ समाप० न० न० वि० य० ॥ गु० नृ० क० न० ॥ क० नि० क० य० सि० नि० का० रू० द० स० त्व० ४ गु० व०
सिद्धिदायकं ॥ वि० ग० न० ॥ प० न० ॥ अ० स० स० क० सिद्धि० पू० ग० न० मा० म० क० र्त्वा० न० व० ग० त० धि० ग० प्र० ति० क्ष० न० सिद्धि० व० त० नि० त्रा० ध० ४ ध० र्म० नो० ज० ग० नो० र्थ० सा०
ध० न० य० त्रा० ४ समि० ति० नि० स० ग० न० वि० त्रा० च० नि० म० हा० द० पा० त्म० ना० नि० त्रा० ॥ ना० नि० त्रा० ॥ अ० त्म० क० नृ० ना० ॥ चा० नि० का० य० ना० ॥ वज्र० ग० ति० ला० क० व० न०
नसिद्धिदायका० ४ अ० मि० ग० म० न० ॥ स० मा० फि० त० म० ना० ४ स० ग० न० ग० न० ॥ अ० ह० म० ध० र्म० ना० नि० स० मा० ग० सिद्धि० व० न० दो० द० नृ० म० ॥ व० न० द० न० न०
सू० ग० नि० ग० ना० स० दा० स० क० व० ना० नि० त्रा० क० व० न० सिद्धि० द० य० का० सू० ग० ना० नि० ज० ग० ति० ना० ना० व० ना० ॥ ॐ (ग० ध० न० २ ॐ क० क० नि० ति० ॥ ॐ न० त्व० ॐ

हं ॐ अमन् २ अमन् १ हं व अमिन् वि कान् गमिन् सर्वं कन्यं कनि स्वाहा ॥ ॐ कं कनि २ नाचनि २ विनाचनि २ सर्वं कर्म
वत्तनानि सर्वं सत्तानाच स्वाहा ॥ ॐ नत् २ महानत् नत् सत् वे नत् किन ॥ नत् माना वि उद्ध ला द्य २ सर्वं पाप न द् रुद्र ॥ न
माद्या मयुति हन हन सर्वा वत् ॥ विभा गनि हन २ रुद्र ॥ ग ४ इ वे रुद्र ॥ एग व न वज्र य ३ इ हि सम य सं ॥ वज्र समय रुद्र ॥ ॐ पुनि
च वज्र रुद्र ॥ ॐ वज्र समय रुद्र ॥ ॐ वज्र साहा सा पा द्य समय रुद्र ॥ ॐ वज्र द ग्ध हा ४ ॥ ॐ वज्र अतिषि के आ ४ ॥ ॐ नत्ता हिषि के यो ॥ प म म
जा हिषि के ही ४ ॐ वज्र मूजा हिषि के अ ४ ॥ प म मूजा हिषि के को ॥ कर्म मूजा हिषि के अ ४ ॥ वज्रा हिषि के रुद्र ॥ यो को अ ४ ॥ ॐ वज्र क
र्मा हिषि च अ ४ ॥ ॐ वज्र चक्रा हिषि के यो ॥ ॐ वज्र चक्रा धिपनि स्व मसि हिषि के ॥ ॐ ॐ ॐ रुद्र यो अ ४ ॥ ॐ वज्र धा त्वे च नी नृति
विषे रुद्र ॥ ॐ नत्त क्षनि त्वा हिषि के ॥ ॐ वज्र न था गता हिषि के ॐ ॥ ॐ नत्त क्षनि त्वा हिषि के यो ॥ ॐ प म क्षनि त्वा हिषि के को ॥ ॐ
कर्म क्षनि त्वा हिषि च अ ४ ॥ ॐ सर्वं न था गत ३ क्षा हिषि च रुद्र ॥ ॐ वज्र ३ क्षा हिषि च रुद्र ॐ नत्त ३ क्षा हिषि च अ ॥ अ ४ ॥ प म ३ क्षा
हिषि च रुद्र ॥ ॐ समा या ग हिषि के रुद्र ॥ ॐ वज्रा हिषि के रुद्र ॥ ॐ वे ४ ॐ ४ ॐ ४ वि ४ ॐ ज ॐ वज्र समय रुद्र ॥ ॐ व ४ ॐ पुनि

५७९

24

[illegible]

24

[illegible]

॥ ॐ वज्र २ महावज्रिणी यस्वाहा ॥ आर्य सर्वपापदहननाम ध्यान तिसमाप १ ॥ ॥ ॐ नमो वज्रसूत्रस्य ॥ वज्रसमाप २ ॥ ॐ
वज्रसमाप ३ यद्वा ॥ ॐ वज्रसमाप ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ नमस्तु यवसादि पूर्व कं पुरुषानामिह वज्रयर्थं समासि नालवयन ४ ॥ ॐ पिच २
पुरुषवधनिजाल २ स्याद्वद निधिति २ वृधिवधनिस्वाहा ॥ आर्य वज्रसूत्रस्य नाम ध्यान तिसमाप ३ ॥ ॥ ॐ नमो रोगवज्र
सूत्रस्य पुनः ४ ॥ नमो यग धगगायार्ह के सम्यक् वृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ कृतिनि २ ॥ अमिगाव सुनि अयि विविनि नियी निनिस्वा
आर्य पुरुषविवधनि नाम ध्यान तिसमाप ४ ॥ ॥ ॐ नमो सधर्मपुत्रिकाय ॥ नमो नत्वनयाय ॥ नमः १ ॥ पुरुषवत्तादिसर्व
धगगा नमो नमः १ ॥ नमो साव सुनयग धगगायार्ह के सम्यक् वृद्धाय नमः ॥ अने १ ॥ अने धने अमनममन चिरुचत्रि ॥ स
मसमिगा विगा नमः १ ॥ मूक मूक यत्तम अविस्मयसमाप यजम अजिमसाक समिते धनति आलाकलसाप एषां ३ निनिधित्व
विद्वत्क कननि अत्पुन ननिविष् अरुक् एतया निविगु धिउकले अनठपनठ सुकति असमसमावृध विविलीकिने ध
र्मपनिजिपु एव गिनि सद्यनिर्व निद्याप निर्यालय विरगाधनि ॥ म कुसकु जयेन नूतकीग ए अजयवनगावकू सव

२दह२पच२मथ२सर्ववृक्षानां वलनासय२चिन्द२हिन्द२तुत्र२विष्णुपय२सर्वसकृत् ॥ सर्वनामसादिनामनूपा मनूपावलन२
वन्ध२संकाचनिकाचतिम्भगतयं२गर्जय२रुज२हन२सर्वसं२सर्वमन्त्रा२सर्वजगन्सर्वनामसादिनामनूपा मनूपावलन२
सर्वपद्मवापसंगमपायास्यल२स्वाहा॥ आर्यः अमिता नामधेयः श्रीसमाफ३॥ ॥ ॐ नमो नलगयाय ॥ ॐ नमो वृद्धाय म-
कात्रनिकायतनतिष्ठतद्दयाय३॥ ॐ आ३सूगन्तवज्जुल३स्वाहा॥ आर्यः गुणवज्जनामधेयः श्रीसमाफ३॥ ॥ ॐ नमो
रुगवन्तरेषमकेयूर्यपुत्रनाजायतथागतायाहन्तसमस्तवृद्धाय॥ नमथा॥ ॐ तेषम२महारेषमसूतेषमस्वाहा॥ ॥
आर्यः तेषमनामधेयः श्रीसमाफ३॥ ॥ ॐ मनिप३रु३ ॐ नमो रुगवन्त आर्यः पत्रमगुनवेमहाकात्रनिकायम-
कमूनयेनथागतायाहन्तसमस्तवृद्धाय॥ नमथा॥ ॐ मून२महामूनयस्वाहा॥ आर्यः गकमुनिनामधेयः श्रीसमाफ३॥
॥ ॐ नमः३सफसफिनासमस्तवृद्धकदिना॥ नमथा॥ ॥ चनेद्रुचन्द्रस्वाहा३॥ आर्यः चन्द्रनामधेयः श्रीसमाफ३॥
॥ ॐ नमो नलगयाय॥ ॐ नमो समस्तवृक्षानां॥ ॐ धर्माय कयूतः जय२विजय२जयवाहिति॥ सर्वदेवि य सकृत्ति

[illegible]

و

धनसि
७८

पशु कर्हि वानच प्रिष्ठ लहिरि नन्दमूढ लवकु मन्त्री शी कागद हिरि पात कंगव का हान कदति कामपि नू काग था ॥ क
कपठ कविकात्र अग्नि कृ त्तुषव न ॥ लंग कादर्थ वि नाग हा पा निरू रू स अ न ना हू निगदं वहती तु तु जन कालि
का कव भजा ला नेल के तव तु नू पठ कु माय ॥ राम द्य १७ र द नं मूर्धन वान क पात कं ॥ धनूष द्वा प्र पू कं तु पि सानि
नर्ग निरु धा पू पू स मा ला सि ख ना नि रा ग भान धे नि का ॥ हा क रु कां ड च र्म के ल व म क च गालि का वो द ना वि ति का ॥ कां कि
मया रु सि न षा कं ॥ कं का लि का नि के म य चू र्क क मु न व हि क ग नि च न की त कं च वा ज पू न क पू न कं ॥ अ वि तु का च व स
क म य व रु कू ग रु था ॥ ए व कु म ग वि पू या द स फि न ना य का प श्च मू द क ग र न सं ॥ ध ना ज प ठ र न सं ॥ स न मू तु मा लि
का चे व न पू न ना म न ग वा ल्य च र्मा नि व स ना ना मा व नि च य म मा ॥ न स्या द्र ग म हा व वि व ज वा ना हि ना द ग म १ दि तु जां स य
क हि च वा म क पा न रू थ ना व ज य भू ला र ग व ला ति ग म हा ना ग न ना मि नि ए क व क मू क क ग के ना मु न क व र्ती का ॥
मू तु मा ल सि ना ग वा सं ग ल ना का ला सि ल सि क वा न मा ला के दि व ग न्ध मू ला गी नि ना पू न क पू ना दि व ग म्ना म रु पि नि ष था

७८

साहज ॥ १ ॥ न साहज ॥ नित नृजापत्त्यादिसमयादि किमहा नृजापत्तमञ्जवि ॥ प्रहृषा यगु खंदशे सर्वसुखविग्रहाहृ
 क हले अविहृत न विहावयत् ॥ एवं नृप तुम विजह नृक नु विहावयत् ॥ सर्वसत्तासमायुक्तमासिद्धिचदहिमे ॥
 नृकायमनु ॥ १ ॥ अं ४ काय वा कश्चिद्वज्रहं हं ॥ १ ॥ वज्रवा नाहि महाद विहं हं ॥ मूलमनु ॥ १ ॥ नितिसहासं वल हं
 यसमाफ ॥ १ ॥ ॥ ॐ नमः श्रीच पुमहा ना खनाय ॥ श्रीमत्पुत्र विनाय सर्वसत्त्वपकानि ॥ न मा विद्यापसह
 नं कायप्रिय कमूकयंकत् ॥ १ ॥ दवख काग सर्वनापायलाव नायेन वाभय हं ॥ १ ॥ लो वनं नृजीनिग कपासन ॥ सफपा
 गालपात्रै नोम धवामामहोदगिनि गकृत्वा ॥ १ ॥ पात्रत्वा नमः १ ग बाद्धद गिनिह मोठ क ॥ १ ॥ लाव विन हं वा मजान
 व ॥ १ ॥ मा लपहान नस स्रु नमवपा कायेन नमः १ म ग्नय न गवना च न मिह माहं ध का नादय १ ॥ प्रहृषा यवि लं व लास्क
 न वने चक समूची पितं कृत्वा च नृसमायमाय पुत्रव १ ॥ वज्रसत्त्व स्वय ॥ १ ॥ स्वा यं नृसत्त्व साधनाय ग क व के पुला
 निहृति नृनाम कु म्मा १ ॥ १ ॥ विश्वलोजदि नसम १ ॥ गन हीं का न वियां हं वड १ ॥ १ ॥ पन पि अण धर्म न द्या हं सप

[illegible]

24

नाग्य २३ काहिकं पाहिकं लाहिकं वाउर्हिहिकं सर्वज्ञानसन्निपादनरूपं वानिकपितिकं ॥ १ ॥ हिं कं सन्निपादनकं मा-
साधर्म्यसिक्तावत्सुनिकं ॥ २ ॥ वं सर्वज्ञानानां नाग्य २ इत्यादि रूपं वानिकपितिकं सर्वज्ञानं च गम्यते ॥ ३ ॥ अ-
यं हि नृकं रूपं सर्वज्ञानानां नाग्य २ इत्यादि रूपं वानिकपितिकं सर्वज्ञानं च गम्यते ॥ ४ ॥ अ-
गवन्निवर्तनाहि आर्यपनाजिह्वे साकमात्रमहावेद्यसर्वज्ञानरूपं वानिकपितिकं सर्वज्ञानं च गम्यते ॥ ५ ॥ अ-
नृकं रूपं सर्वज्ञानानां नाग्य २ इत्यादि रूपं वानिकपितिकं सर्वज्ञानं च गम्यते ॥ ६ ॥ अ-
मृतिमाहतिवर्तनाहि महायोगीनिका मन्त्रित्वरूपं ॥ ७ ॥ अथ यथा ॥ ८ ॥ २ ॥ २ ॥ पागमनस्त्रिस्त्रिनिधुन २ ॥ वानिक-
साधर्म्य २ ॥ त्वद्वागकपात्रधनिसमहाप्यविनसाधननसिन्मालाग्रकृत्तधनिसूक्तहन् २ ॥ यानानां सर्वज्ञाना-
सर्वपापसत्त्वानां सर्वपापनामासक्तदण्डिकाटमूहिदृष्टकलातिनिमहमूडा ॥ १ ॥ अहं नृकं रूपं महाविमहसिन्-
सहस्रबाहवगगगहमा निवर्तनाहि महायोगीनिका मन्त्रित्वरूपं ॥ २ ॥ अथ यथा ॥ ३ ॥ २ ॥ २ ॥ पागमनस्त्रिस्त्रिनिधुन २ ॥ वानिक-

[illegible]

अत्र ति
८९

नातिप्रनमिषु जिन अं वि नेनां त्वाहिताम् ॥ अथ ॥ गार्गवाननां गुह्यनिनां संदवति नामहोदया नां महामकुमहामाया
कृष्णनि ॥ नेलाक हननखये साकं र्जतपुनः ॥ गुह्यनिमियमातामाहमायाहिविष्णुगा ॥ ४८ ॥ कोनासनिविद्याप्रपद्यं गुह्य
श्वनि ॥ यथादिहसनमात्रं न विष्णुगमधस्य श्वनि ॥ सर्वद्वगभर्वगना नयसूनमा नूत्वा नू ॥ विद्याधनिपिगभाना नाक्रसा
गनूठकिन्नजान ॥ वसमानयतिरुतानि जननसु चमानिच ॥ महाविद्यीकारे विद्या ॥ ४९ ॥ जालकलिरुथ ॥ माहनसम
न ॥ श्रेव विद्योचदनादि कं ॥ वग्नकर्ष ॥ अरुनके अनेकविध कोठुरुलक्षणा कूतं विष्णुवाचसिद्धिचसाधक ॥ न
अपन वृत्तस्यानायवासा विधियत ॥ अकृगनत्वसिद्धिदविसत्यवदागह ॥ मनुनममहामायादिधैत्र्यनूपके सिद्ध ॥
॥ अतमाहगवतं शुद्ध श्वनिदवगाये ॥ वा नावृत्त उत्पन्न ॥ महसिद्धकृत् शानि श्वनूपमहासिद्ध ॥ ने नात्मादविसे
नानाहृदयकवजादकदगमपुप्रियगा शानिप्रयश्रुत्तविमूकपुष्पा वा नाचसंजायते ॥ श्रीने नात्मा ॥ न ॥ नकमूषेम
कूटकगयीनद्रुहसुत वामखहा गीदहितपायं खलोगविश्विपाप्ययं कूट ए कूटमवर्ष पञ्चगुनद्विदववची नाहा

८९

[illegible][illegible]

यश्च हृदयश्च गिरिश्च निरुद्धं ३ हृदयं नमस्कृतं स्वाहा ॥ ॐ नमो गार्गुति हृदय नाम धनसि समापः ॥ ॐ नमो
कोटाय ॥ यन्मानकं पृथक् पृथक् च न विनोक्तं नोक्तं नित्यं तत्र उक्तेषु च कुसुमं त्रयं सर्वं काटं त्रयं पूर्वं दक्षिणं पश्चि
माङ्गं त्रयं वयं वयं सानेपश्च उद्धमं तदगदिगं मालात् ॥ ॐ नमो यमवन्तं कृते नार्येदि अग्नि यवा ॐ नमो नाधिपति ॥
नेम्युत्पादिसकनमाला ॥ अगुत्तवगमासु कायवाकचिह्नं ॥ नय ॥ मानयश्च कानयश्च नृपयश्च कृत्ययश्च द्यायश्च सर्वं
त्रागयश्च ३ हृदयं हृदयं स्वाहा ॥ ॐ नमो गार्गुति हृदय नाम धनसि समापः ॥ ॐ नमो नत्तयया य ॥ नमो समं कृते नमो
प्रत्यगि अर्धं च कुवहिना जायतथा गगनार्हं समं संवृक्षय ॥ नयथा ॥ सर्वं यत्कुर्वेत्तु यश्च ॐ नमो वनवन्तं यश्च वृक्षं ववन्तं
धनयश्च ॐ नमो सिताय नकन चिह्नयादिकं चिह्नं नृपति नृपति चिह्नं गिरिश्च निरुद्धं हृदयं स्वाहा ॥ अर्धं उक्तेषु च कुव
हिनाम धनसि समापः ॥ ॐ नमो वृद्धाय ॥ लोकानि तनमस्तु एविविक्ता न वेदन ॥ यत्तु गगनं विना थय
स्ति न कुरुष्व विना न ॥ स कुरुष्व विनिमूकं न सत्तास्ति मित्रं मतं ॥ सत्ताथी चरपति विद अगमत्तं महामूना ॥ नपि सु
अस्त्वया धि मधि मर्त्यः ॥ संप्रकोप्ता मायामत्रिचिगन धर्वं न गत्र सत्य सत्रि ॥ हृदयं ॥ समं वयं पातदशवा न सुक नि ॥ क

धननी
८३

धनं नाधयस्वपुतिमिव समानता ॥ हनानि च क्षुण्णायानि तस्मिन् च रूपा कथं ॥ रूपं च विवृण्वता नयग्रहा निपात्रिणा ॥ व
दनि यं विना नास्ति वदना ना निना स्मी का ॥ न च वयस्य रावन नास्ति त्य हि म नं न व ॥ सं ह र्थ या न न न य पां मुखं द द्यु न व न्द्रि न
॥ नृ न्म ग धि ग मा र्ग व रू पा क रू वे न वा दि नि ॥ क ह र्ति से के उ क म्मा नि त्व या क वा व हा ने न ॥ प न स ना पु त्रि का लु सि दि त्ति
म का म यो ॥ न क र्मा नि त्र हा का सि पू ॥ पृ ॥ पृ ॥ नि त्तं ॥ ज त्वा नि स्तान न र्था ग पा क वा च स न स यी कं वे व हा न न ॥ प न स ना स्य
ना पु त्रि का लु सि दि स्तु हि म ना म यो ॥ न के ग कि न लो का सि पू ॥ पृ ॥ पृ ॥ प र्जे र्थे ज य नि श्व त्र क्ता न्ता कं वा च स न ल यो ॥ नृ
रू प या ने ना रू ये वि ह न न वि ना न न ॥ न स्या त्स र्ग वा न क्ता ने य त्व म् चि वा न व न ॥ त स्म ल ज न म न च न स्या त्स र्ग म न ज न
न यो न स्या वा म न्या हि वि स पं कं धि नं त्व या ॥ त स्म ल रू त वि नि मू को वा गु वा दा हा ने वे र्जि तं ॥ ग्ना ना ग न क र्ग ग द हृ त ग व का
ह न च रू पां न सं मू य न हा वा ना पा हं स द त्रि र्धा न स्त ग ना पि प न ना न द्वा र्थां गाय न क र्थ ॥ रा व ना थ क नं ना सा पा न र्थ क नं म
नं ॥ नृ थ क न रू व त्रि न्ना पि ना प्या न थ क नं ॥ उ क त्व हि प रा व स्य वि ना स मू प प द्य न ॥ पृ थ क न हि ला व स्य वि ना स मू प प द्य

८३

न विनष्टकाननभावावकार्योत्पत्तिरनयद्युत॥ नचविनष्टसमनयुत्पात्तकिर्मगतव॥ विबुद्धाद्यानबुद्धादाविगा
दंकृतसमुत्पत्तिः॥ मायुत्पादावदुत्पादः सर्वमवत्त्वयाचने॥ अनेहयाजगदिदं पत्रिकलसमूहव॥ पत्रिकलसमूहव
नत्पन्ना नृपस्यतिनित्यं समितिसमृद्धिः नेवानित्यस्य संस्मृतिः॥ स्वप्नेवसंस्मृतिः प्रोक्ता त्वत्त्वविद्रोवत् स्वयत्कृतापकृता
वात्पाकृतमहत्तुक्॥ नाकिं कत्रिषातुद्वयत्त्वयातुक् पत्रिकलसमूहव॥ यद्युत्पत्तिरसमूत्पादः नृपगामवगासदा॥ एवमस्वग
कुतास्मिन्निहितनादयुत्पादः॥ सर्वसंकल्पाहा नायुत्पादः नास्मिन्निहितना॥ यद्युत्पत्तिरसमूत्पादः नृपगामवगासदा॥ एवमस्वग
निनीसर्वगकामिन्यामायावत्त्वयायहवा॥ सर्वधर्मस्य नाथनिः स्वराक्षः प्रकाशितानत्त्वयात्पत्तिरकिंचित्तकिंचित्ति
ननाधिन॥ यथापंचरुथापैर्वापैश्चैरुथगावृद्धवानसि॥ अयं निषविता धर्ममनावमहितावता॥ निमित्तानि हि विवृण
रुवतिरुक्थंचन॥ अतिमिरुहि विवृणनेरुवतिरुक्थंचन॥ अतिमिरुमनागममात्रा नास्ति त्वयूक्थंचन॥ अनेहयाजग
हायाननसमात्कृत्यनदसिने॥ यद्यवापमययुत्पादः सुखासुखिरुत्पत्तिः॥ निमित्तवंधनायनरुमात्रा नास्ति त्वयूक्थंचन॥ अनेह

धन ॥
८८

॥ लाकारि न सुव नाम मया यं समा फ ॥ ११ ॥ ॐ नमो श्री वरुणा गिरि ॥ एवं मया ग्राम म कं सि नु म य र ग बाल ग
उ ह वा स का ये प त्रि मे ग ग त न ल सूप नि सि न स फ त त्र प वि र गै क चि र न त्र शु ह म हा म तु ल मा गे दि ह न ति स्म ॥
नृ स र वा य न वा धि स त्व द व ना ग ज स सून ग नृ ग भ र्वा सून ग न न सा द ॥ न द्रु त व र ए ग वा न वा धि स त्व मा म नु य न
स ॥ उ ऊ द्रु ध य द्रु त पू य ० मा व ज जो गी नि स र्व ज ग धि न ४ न त्वा य न ये दं ॥ सं सा न स ग त नो य क शि र ४ र वा नृ व सा
मा ह य स र्व स त्व स म नो य नि स वि दि न न र न ४ य य म व थि त्वा किं क नो का र न स म हि स र्वा नृ व स र व ॥
॥ ॐ नमो हस्त नायि ॥ ॥ न न मा न र य क नि सून व नी संपू जि ता स र्व दाः सा को ना हि न को त्रि ति ज य
नि सा मा न व ज्ञा न रु नि ॥ का नृ त्वं न स मा य न न व द्रु वि धा न सा न न हि नृ न ना न ना यि न र ग हि य न न वि ण नि ज ग
ना ति त्वं र य धं स नी ॥ १ ॥ ग्राम नृ पा नृ ल के न मः ना नो धा उ वि ना जि न ना ना ड म ल ना की ॥ ना ना पं दि नि रु
दृ र्जी न ॥ २ ॥ ना ना ह य रु ना प नः प द्य द्वा ङी न त्व ने ॥ किं न ने म धू ना हि न नि सै नै ४ म न रु वा न त्व स रू ल ॥ ३ ॥

८९

सिद्धविद्याधरगते गत्स्वर्ग्यनिनादिन॥ मुनिहिवीगनालोयसकनंमुनिषवित॥ ४ ॥ वाधिसत्त्वगत्स्वर्ग्यनिनादिन
हमिषनेत्रपि॥ ओम्पनानादितिदेवेविद्यानाजसहस्रके॥ ५ ॥ ओम्पनाउरहोम्यायेहयग्रीवादिहिरण॥ सर्वस
त्वहिनायूकाहगयनवनाकिनं॥ ६ ॥ विजलानन॥ श्रीमान्पमगर्तसनस्थिर॥ महानाथपसीयूकामेया
चक्रययानिग॥ ७ ॥ धर्मदिदंगनस्यासमहन्नायवपर्वदि॥ नतापविष्टमागमवजपानिमहावल॥ ८ ॥
पत्रमरूपयामूकापृच्छत्यवलाकिनं॥ नस्तनागसिंहग्रीगजवाद्योवसूकट॥ ९ ॥ सादंयमीमूनसत्तामग्नः
संसात्रसागत्र॥ वद्धासंसात्रके॥ पासिनागद्वयनमामन॥ १० ॥ मूचनयनसत्ताकृतनक्रुहिमहावग॥ अवमकेर्थ
लगवानपहसन्नवनाकिन॥ ११ ॥ वेवलाकुदिस॥ सर्वमेत्यासूतयाहम॥ दत्रिनकलमूद॥ यपृथसन्नमठिका
१२ ॥ तमवावमहाप्राह॥ साधुमाधुमहागप॥ नामानग॥ महलोग॥ सर्वसत्त्वैकवत्सल॥ १३ ॥ यानिसंकिन्त्यमन
आ॥ समकेसुधनयना॥ आकालमृत्पुनिन॥ १४ ॥ सुखाकनसुखावति॥ १५ ॥ अवमकेत्वागगनाथ॥ संग्रीमानवलाकि

१४॥ उवाच मधुकां वनिं वज्रपाणिपुत्रं ॥ १५ ॥ गन्तव्यं कनागवेन्दु अमिताहस्यतामिना ॥ पुत्रिधनवाम
 १५ ॥ सनाममाह्लासा कंधेमान्न ॥ १६ ॥ महाकननयापेतागनामूकसंयुता ॥ उदितादिनसंकास ॥ १७ ॥ कुवद
 नपुला ॥ १८ ॥ लसमानेष्टमास्तानासदवाहनमातृषान् ॥ कंपयति प्रमासा कान् कुसुमनयकैर्नागसोत्
 १९ ॥ ॥ लितात्यनकावाधविमोहेमोहेनिनिद्रवन् ॥ जगत्सेनकनाथाय ब्रह्मस्यार्थिना जिने ॥ १९ ॥
 कान् कान्समुत्पाते ॥ नागल्यसंकुले ॥ समनसादवनामोनि सत्त्वो नरुमाहं मदा ॥ २० ॥ नानपिष्ठा महसत्त्वा नाना
 हयमहानेकान् ॥ ननका नतिमात्राकं गयेति मुनिपूगवा ॥ २१ ॥ कनागजनिपूरा हत्वा ननसादनसाधुसा ॥ २२ ॥
 कलंतायुं नतिनिद्रसु ॥ २३ ॥ दन्वचनमकुवन् ॥ नामाकृगन्कहियसुनाकीर्तिना जिने ॥ २४ ॥ दगहमिगेनेर्ना
 २५ ॥ ॥ वाधिसत्त्वमहासत्त्वमहर्षिके ॥ सर्वपापहनप्रे ॥ मागस्य किर्तिवर्धन ॥ २६ ॥ धनधकत्रवेव आराधय प्रसिद्धन
 २७ ॥ ॥ आयुना लम्बजननं सर्वसत्त्वा सुखवहं ॥ २८ ॥ लम्बीयस्थपकवेव सर्वसत्त्वविवर्धन ॥ मेघामालम्बोसत्त्वा नाहं किर्तिम

महामुने॥ २१ ॥ उवमुक्ते धर्तृगवान्पहसन्वत्सकिन्तुदव ला कदिगसुर्वामेत्तासून वयादग्भा॥ २६ ॥ दक्षिणक-
नमद्वयप्रथलरुममतिरुं तमुवाचमहापाह साधुसाधुमहातपः॥ २७ ॥ नामानुगु वमहातगसर्वसखेकवत्सल॥ या
निसंस्तुमनजाः समस्तसुधनेश्वना॥ २८ ॥ सर्वव्याधिविनिमूकाः सर्वैर्गर्भगुणांश्चिन्ता॥ अकात्मसूनिनकाः स
खाः यानिसूखावति॥ २९ ॥ नानहसप्रवक्रमिदवसंध्यागुः अर्थम॥ अनुमादतथाधर्मं हविष्यधंसूनिर्वगा॥
३० ॥ ॥ ॐ लाचनेः सुलाचनः गानः गानाहवसर्वसत्त्वानुकंपि निसर्वसत्त्वार्थनिनिः सहस्रगुणः सहस्रमये ॥ ॐ ने
मार्तगवतः अवलाक अवलाकयमा सर्वसत्त्वशिव इहैहृदृहृदृहाहा॥ ॥ ॐ गुहः विगुहः गुधनः विगुधनः मृगगात्म
जः मेतुः हृदयः निर्मलः ॐ गमः गमः मरुपिः महापाहः प्रवनेः प्रवने हविने अपनाजितः महानेदिः विग्वत्रपिमहावने
ः कलपागी महानेः लोकधात्रि महामगमः॥ सनसूनिविगमनादिः प्रहृष्टी वृधिवर्द्धनिः ॥ ६ निदः पृष्टिदः स्वाहा॥
का ना कामत्रपि निसर्वसत्त्वहिनायुगा॥ सर्वसत्त्वगुणयुका॥ सनः अरगतिवत्सला॥ ३१ ॥ वागीश्वनिगी वा सूमासः

अनसा
८६

अमगतिनिजया ॥ यस्तु पानमिनादवी आर्यकानामनोनमा ॥ ३२ ॥ इति विंशतिखिनी पूर्वावी च गच्छी प्रियंवदा ॥
चक्षाननामहा ॥ मेत्री अजिनापितवा संस ॥ ३३ ॥ सर्वसत्त्वस्वाचहं महा माया महा श्वगा महा वनपत्रा कुम्भ ॥
महा नोडी महा चण्डी इह सत्त्वं निमूदनि ॥ ३४ ॥ अगं गगन नूपा च विजया कसनसुता ॥ विद्युत्साली क्षमी षष्ठी चङ्गी
वपि यक्ष यक्षा ॥ ३५ ॥ जं फुति सं फुति कानिका ॥ तत्रातिनिगम च नी नरु निमाहि निगंता कोता नीडा विनिमूद ॥ ३६
॥ वाष्प निवद माता चण्डिका दुष्प्रिया सिनी ॥ मागं लो गं त्रि सौ मागं वदामना जवा ॥ ३७ ॥ का पातिनी महा
गम संक्षु सत्यापना जिना ॥ सार्थका हारु पाद धनं सुमार्ग पदगती ॥ ३८ ॥ वत्र दामसा निगम फुः फु नूपा मि न कि कु मा ॥ गवनी
आगा नि सिद्धा चण्डा सिद्ध मिता ध्रुवा ॥ ३९ ॥ धन्या पूष्पा महा राग मगुरु ॥ अद्विय दर्शना ॥ हनं न द्या मि नि लि मा उग्र उग्र
महा कपा ॥ ४० ॥ सर्वार्थ साध निरुदा निरुदा सर्व दुर्ग न गम ॥ नरु या जे न व पूष्पा ग्री मलो कश्च ना लो ज नि ध ॥ ४१
ना नाना मगु ॥ सर्व सा पु नि ति ॥ नामा कल न गनं कं कि लि न ध न इ रु म ॥ ४२ ॥ नहं समुद्र नगु अं द वा ना मधि

८६

इहैर्त्तह ॥ सारागधरागधकनसं सर्वकिं श्रीखनागने ॥ ५३ ॥ सर्वव्याधिपसमनं सर्वसुखसुखावहं ॥ त्रिका संयः प। ० श्रीमानुवि
 स्नानसमाहितं ॥ ५४ ॥ अधनापिहिकानननागपीयमकाभूयात् ॥ इक्षितसुमुखं निन्दति जाधनवानुवत् ॥ ५५ ॥ जयारुव
 महाप्राह ॥ मधविचनसंगाय ॥ कधनामूचकवद्ध ॥ ववहानरुयोलेवत् ॥ ५६ ॥ गजवामिज्जायां निगंति ॥ अधदंतिनं ॥ गगु
 मसंकटइर्त्तनात्तारयसंकुन ॥ ५७ ॥ स्मन ॥ धवनामानि सर्वरया नपाहति ॥ नाका नमत्पुह वतिपापानि विपुल यग ॥ ५८ ॥
 मानुषसुहृत्तं नमः नमो कसामहात्मने ॥ यस्मिन् देवा नृत्थाय मानवः कर्हि यिं शति ॥ ५९ ॥ सदियु कालमायुष्मानुपीयचत्तरेव
 न ॥ वत्तरे ॥ सर्वसत्त्वानां सर्वसत्त्वहितं कलं ॥ ६० ॥ दवानागसुथाय कृपां सर्वकतपूतता ॥ पिभवा नास्माकता मातमां डनजस ॥
 ६१ ॥ अकिं नां निका ॥ यगा ॥ सुकं ॥ मातामहायहा ॥ चायापस्मानका ॥ श्ववयचका खादकादया ॥ ६२ ॥ वनाजश्विचका ॥ यथाय
 यचानरुचत्तसं ॥ चायामपि नतं चिकिं पुनस्तुविग्रहं ॥ ६३ ॥ इष्टसत्त्वनवाधनव्याधयानाकमंतिन ॥ सवेथ्यगते का पूजयेत्
 अवदत्त ॥ ६४ ॥ जगिसमनात्वेदिमान् कृती नैः प्रीयदतगन ॥ प्रीतिमां ॥ महावाग्मी सर्वभामुविग्रहदश ॥ कल्या ॥ मित्रसस्यवि

धननि ६७ विचित्रा विहसितः॥ सदा विनहिता वेद्यं यथोपपद्यते ॥ अर्थना नाह नानि कायाः नामाधुत नग नंदल खितं पत्रि स
 माफः॥ ॥ ॐ नमो श्री गायत्री ॥ ३ ॥ वाला का ला के ला सु प्र व न सू न गि न ग्या नू चू ठा म नि ग्री सं म स म क ना ग न हि न नः
 चिंगा न क व क र ग नि ॥ ह क्का पा नि न वा र्ग क न पू न मू क ना प र ॥ ग्नां ल मा र्ग ला नि ॥ प क्क न ध न व नू नि क्क स म मु ग्नि न स र्च य
 मि ॥ इ त्ते ध ३ ४ ख व क्षी वि नि पे ति म न नू र्ग ४ का निं ग्री क ४ किं कि म धं क ना मि त्य स रू द पि क ना न मू व य थ वि न ४ ॥ ग्नां ल र
 य ४ प न रू क न म न ४ व द्या मि च ड क्क ल क्षी मा ना का ला नि व द्ध प न ग ति ग म न स्तां य य ४ पा प ही नि न ॥ स र्व सि नू ल मा ॥ ग्नी न नू
 न व क नू ॥ नि वि श्व षं स र ग ४ ॥ त म ध ग रू ह ॥ ग्नां ह न मू प ग न न म्मा द ग ला य व स ॥ स म र्थ धि दि ति य स क ल म्मा द य ध क तिः
 म्मा ४ वि स्रं इ वि वा हं न थ पि ॥ य न ग ति धि ग हा ३ ४ क नं र् वि द ग्धं ॥ धि ग्नि ग्मां म न द ल ग्धं दि व स क ल नू वा प प नू रू ध का लं ॥ रू ध
 नं कू ल क च्छ हि म स क न सि ना सि न न हि म च त्या ॥ न ल दी प य ग ला वि प न म पि ठे हा ॥ ग ह ग क द नि ड न धि रू त्या पा ना ध र व ति
 स व नो के क क्षा त्री नू ॥ मा ना पि रू न ह ना वि नू वे रू ग ४ रू द मा या नि पू नः का ट म्भ क पि ना पि य ति दि व स म न्ता र्थ म्मा प नू क ४ ॥

ॐ ॐ

खड्गनेला कर्वा विपुलरुलमहाकृत्य कजाग्रवत्तः सर्वसार एवार्थिगार्थ विसृज्य न च न विद्विष्यात्ता तु काचिन् ॥ यायकृ गोयवद्वि
कृतिन मनहृत्तननिगमनस्यः त्यात्मापुहस्युतिहं कृत्तमयि सरुनार ४ खपागालमर्त्त ॥ वृद्ध कयावदकृत्तपुनरपेतिरावा ४ पा
निनाइखवगमस्यकवधयानपुनिधिधिकिधितिधियाकावदवानकपा ॥ ७० तिखे नूहवाहो नदतिनू निपदंवापमाकृद
नादः नाहृत्ता न्यापुषक ७० ननिजनयितुकिपुलर्यादगित्वं ॥ खरु ४ पग्धनानखामहिमनविहवापार्थ नपाफकामाः दजसज
नहृयसु नमनरुबासुकेताकृत्तनपापिययमिकमा नृयिमममहतिवद्वतलेकिलेखाः अत्वास्मृतावनाम्नापापहृनसिह
अस्यापमकात्मव ॥ ७० कृवापानरा नीकदसिममिकथं कथं गेकथं कथंः पथ्यत्तनमत्रिपत्यपि विपुलरूपे ४ किमिषमो नृपीति
मायाजा नृथ्यमान्यहृतिहिनधमे सुत्ताकालकृमावः सेदावेवायमानामथ कनरु ७० वानकगंधा नत्तांग ४ ॥ यूप्रत्याकाऊ पूजांरु
नमपिननरुयरुदवेविग्धत्वाः दवाका र्थं यदिनाकूनपननच नास्यात्तमावधकामा ॥ कत्याकालकवाकृत्तमिगजसचला
आत्तकत्तात्तहलाः सरीत्यादिषवलागटविकचट ह् ८ माद्यनहासान् ॥ मरूहिर्हि त्रलाके ४ सकनूननूदिनाकृदनिमन्दम

५३
८८

देहसुखं नद विसृज्य सुदृढं नृनि यत्र स्ति न मृत्तियुगं ॥ धूमाग्रे नाएग का हवगग न गहात्मन निगनसूत्रिगः सुकृतात्मक
नालकनेलेत्रवविगहसमविगमकगर्थाः ॥ त्वया वक्ष्यते प्रतासां लिपूटमूकयोगकनामीनि याचाः पायद्विधादिलोमकलज
लदनेवेनावियक्तकृतन ॥ दानाग्रपूर्यमात्मा हयकरं करं कासुमि लो तस्वमाताः इका लाह्यमानमनिगनन निरुद्वेष
क्राविपस्य ॥ दना का दुःखदाता कृतुनिगन नस्वामनस्य ॥ १५ प्रसावकं प्रहृष्टं पृथगिष्ये तजित कातिकोपविष्टः ॥ घाट
पागप्रहृतप्रहृतन लजितलङ्घुलवत्सुसवायां ॥ १६ ग्राह्याङ्गनाग्रहविलसदजिह्वा कस्मिन् दर्शयत् ॥ दशकं दग्धनियुक्तसर
कृत्ति कृत्तिनृकृत्तिनाम्ना चिनात्रय नषितसूट सिखितपदनामधामागियन ॥ वज्रकृतप्रहृतन पख ननन मूषा
नृत्वा नमरुतकृत्ति ॥ १७ अन्ताडासू ॥ १८ अन्ताडासू ॥ १९ अन्ताडासू ॥ २० अन्ताडासू ॥ २१ अन्ताडासू ॥ २२ अन्ताडासू ॥ २३ अन्ताडासू ॥ २४ अन्ताडासू ॥ २५ अन्ताडासू ॥ २६ अन्ताडासू ॥ २७ अन्ताडासू ॥ २८ अन्ताडासू ॥ २९ अन्ताडासू ॥ ३० अन्ताडासू ॥ ३१ अन्ताडासू ॥ ३२ अन्ताडासू ॥ ३३ अन्ताडासू ॥ ३४ अन्ताडासू ॥ ३५ अन्ताडासू ॥ ३६ अन्ताडासू ॥ ३७ अन्ताडासू ॥ ३८ अन्ताडासू ॥ ३९ अन्ताडासू ॥ ४० अन्ताडासू ॥ ४१ अन्ताडासू ॥ ४२ अन्ताडासू ॥ ४३ अन्ताडासू ॥ ४४ अन्ताडासू ॥ ४५ अन्ताडासू ॥ ४६ अन्ताडासू ॥ ४७ अन्ताडासू ॥ ४८ अन्ताडासू ॥ ४९ अन्ताडासू ॥ ५० अन्ताडासू ॥ ५१ अन्ताडासू ॥ ५२ अन्ताडासू ॥ ५३ अन्ताडासू ॥ ५४ अन्ताडासू ॥ ५५ अन्ताडासू ॥ ५६ अन्ताडासू ॥ ५७ अन्ताडासू ॥ ५८ अन्ताडासू ॥ ५९ अन्ताडासू ॥ ६० अन्ताडासू ॥ ६१ अन्ताडासू ॥ ६२ अन्ताडासू ॥ ६३ अन्ताडासू ॥ ६४ अन्ताडासू ॥ ६५ अन्ताडासू ॥ ६६ अन्ताडासू ॥ ६७ अन्ताडासू ॥ ६८ अन्ताडासू ॥ ६९ अन्ताडासू ॥ ७० अन्ताडासू ॥ ७१ अन्ताडासू ॥ ७२ अन्ताडासू ॥ ७३ अन्ताडासू ॥ ७४ अन्ताडासू ॥ ७५ अन्ताडासू ॥ ७६ अन्ताडासू ॥ ७७ अन्ताडासू ॥ ७८ अन्ताडासू ॥ ७९ अन्ताडासू ॥ ८० अन्ताडासू ॥ ८१ अन्ताडासू ॥ ८२ अन्ताडासू ॥ ८३ अन्ताडासू ॥ ८४ अन्ताडासू ॥ ८५ अन्ताडासू ॥ ८६ अन्ताडासू ॥ ८७ अन्ताडासू ॥ ८८ अन्ताडासू ॥ ८९ अन्ताडासू ॥ ९० अन्ताडासू ॥ ९१ अन्ताडासू ॥ ९२ अन्ताडासू ॥ ९३ अन्ताडासू ॥ ९४ अन्ताडासू ॥ ९५ अन्ताडासू ॥ ९६ अन्ताडासू ॥ ९७ अन्ताडासू ॥ ९८ अन्ताडासू ॥ ९९ अन्ताडासू ॥ १०० अन्ताडासू ॥

८८

[illegible]

अत्र लि
८९

यथा त्वा निनाः यकायुषिषु विष न पत्रपत्रपत्रनः कर्षत्तर्षनायि॥ त्वामा नाध्याधु वस्य वनयुवनिवहचामनस्यनचा
धीः मूर्ध्विभरु मदा न्धदिपदग नघना मूढुने का कयनाम॥ एवा कर्मा कृति ल्यपु म विनिमया पायपय्या यनाः पाशः
मा पाग पुष्पा पचिगसूत रुतं विरुमपा प्रव कः वेवाति कामे नि लो रूपन जन नाना नार्थ मसंथ रूपाः रुम विम निवा कृचा
मिकं न निके न निधिः निधना पा प्रवहि॥ चूर्ति छेद विलकः कृत्त निव स नया लय्यया रत्नमाताः इना दा त्वा रनि त्वा स्व
जन सूरुग सूरुद्व भूति वर्यमान शाल्या वेद ग्वरः ४ खतु न ग पुत्र मूखा खाग स्वाग हा नाः मीक स्वा कः ४ पुत्र मू विव नय इ न इनाः
जात निडा पुवा ५१॥ चक्र निद्वे कृवु विसू नरु कि न नात्र क ॥ लक ॥ लक गम्भीः षु का द कि मूख शमि वि ग ल नू चि न ५॥
मला वा वना य ५१॥ लख लख मयूषं मनिल मत्तु नः ४ का वरु ग्पू र्क का पं ४ लना निवी तसे नाह वनि ग वनि त्वस सा दा ग न ग म
सु कृ न्ध ५१॥ नालः ४ सूरु हि म निगी ला द रु सं के न का क ४ का का कि ग नू ना ग द ह न व न चि नाः नि थ न थ प चा न ४॥ त्वदि घा ल
पसि हि म न य म ध्वनं या नि विद्या ध न ५१॥ ख ग्ग ४ ५१॥ म पि ना न नं तु न प नि य प्रा त्स ता नि हा र्य ४॥ हा ना जा क रु ना का ४ य व म

८९

वलयवद्धमानायेनामभुनादानवनीननुपनिमत्तामादमायद्विनरु॥ काचिनादानवः ॥ अद्वनगनचनादानमंजिननुनय
सं नार्थप्रार्थयितुं नमः ॥ मदिताः सादनादवकं न्या ॥ नत्तु कृत्रांनवपि कनककमः ॥ त्रिंतीवजकिंलमाताः मूमर्त्तुपानिजा
न ॥ ६॥ ममधूनमधूदुनधुलीविमानं विनावत्पवितापनपूलनमसिदकमाधूर्यगुर्थाहृत्तापुष्पासपुष्पमनूलावतिचिन
नडना ॥ नयाशां ॥ कनपूनेसासुतंगत्वमगुननदकादगा ॥ अदकायां ॥ काकाकंदर्पदया ॥ कदकंचकृतावहविश्रकवि
या ॥ मदाकिन्याममन्द ॥ नसनिस्तसनिक्तीयासूदनिलिहृकीउत्तिल्लमनाक ॥ कनपनिनगाहफपुष्पुलावा ॥ गीवा
मग्रमनिहिविनयन ॥ ममोसिहिवन्दीगारुहृत्तुसंगधिरुट ॥ सूत्रकनिनिमनहृषा ॥ हासिगंगं ॥ गचादार्दमदा
साविनलवलपिनादामनामा ॥ मूर्ति ॥ पुनस्तद्विपानेनवतिनवतिः सूत्रमंहीहीनरीत्रपकाष्ट ॥ चूडात्रतावगंसासनगः
नसुगनवामलम्बीविगानप्रायदा ॥ लार्क ॥ कोटिपद्मनकिननापूर्यमानानुतिताके ॥ प्राटेकपादकमहनविनमद्वसूत्रदु
विष्टुत्वद्वपंरावमानाहवतिहवहया ॥ चिह्नये ॥ मलागा ॥ पण्डर्येकसकापेपहननकि ॥ अहृत्तुदार्द ॥ पुषुः ॥ वाफवामान

अनली
९०

नासवत्यरु निरु नादानाहार्य चर्य इकवयसिहासाउमनउमनकागामनासुनवनावेनानाहाना लपमदनद-
हाकेनिका लोहनागम॥ कचिल्लके कनामाप्रमगनगगनाहागरु हूतलस्थः सुसुवधन्यदुप्रहिति ननमननसिद्धि
गन्धर्वनागादिका काकोमिधमिहिनसूगनसूतानन्दनिर्मनचिकुत्रैला कवयसि॥ नेचननचिगा ॥ खलवसुलव॥ लाश
सिइननागभूतननकिननादिसागहिएमकशीमसाडदनीनात्यनदत्रिगदत्रिद्रुदनीलंनथान॥ क्रिनाधिइय
इ॥ अधिकनवभिवलका केनारुचकचिल्लद्रुपंविश्वरूपेसु टिकवद्रुपधायु कि लदादी हिन्नां सर्वद्रुहं नदिपप्रकति
सकनहयनलेकसा श्रीसाश्रंघ हिल्लदीयाउनगगग ॥ सर्वविल्लसूगबा यनु बाजायवक्रः वसिगुजनदिनमाद ॥ नात्रदि
ति बाफसाति कुइष्टवकलज निननूज ॥ धनसाहासुहनु॥ यमविहृष्टा नानपुथेमननमदः सुविश्वरव नयाकि नल्याहाना
तिनकग्रमविधिनवधः सानसंनखहनु॥ किनुमिगधसव ॥ विषमिवपुनगा इष्टवमूकीर्यवाचाः हानार्थसापिइ॥ वीहदः
मलवृगयाससु नविन्दतिव॥ कल्या ॥ नन्दसिंधूपकटगसिकलग्राहनादहिद्विः पृदिहानापदगं कनूयनकात्रिथ ॥ स

९०

[illegible]

अथ
९

सुखसुखं कश्चिदस्मात् ॥ तस्मात् ॥ अथ महाद्या ननित्रस्तु गगनापमं ॥ सुखानां विनयार्थं यउग्रनावापुष्कतं ॥ अरुहं हि त्वां न सन्निहं
यत्नालीयदाकिनं ॥ इक्षु कटपहा हिमवदनन विरुखितं ॥ चकार धर्मलिङ्गं प्राह ॥ इक्षु नाम तुल्यमध्वमं ॥ मौलागपि रूकं
रुताश्मदिनं कनूनाकृतं ॥ अथायदहा समुत्प्लुतं यस्यां ह्य कने ॥ अवविक्तु कानि ॥ विष्णु कश्चि नमस्कृतं ॥ अस्मात् सुन
छनमिहं सुवृक्षानमिहं सुवृक्षाननुपूजितं ॥ वापि सुखे गेले ॥ अथैतं सुखं रूगनियस्रं ॥ अस्याप्रवम तुल्यसर्वं वरिनाप ॥
आह ॥ वन्दमहगवस्य मय कर्षम ॥ अरुपा कनू ॥ अथ लिमकुना गानं सर्वं सुखं सुखावहं ॥ आह ॥ साधु साधु महाप्राह ॥ अथ नव
का मिध्व नलि ॥ यस्याग्रवनमात्रे न विनस्य ह्या नष्टं ॥ आयना नाजनधनं सुखं सीलगध वंदनं ॥ यस्यां केशगन वापि पुष्कं कस्यापि नि
न ॥ वरुणापि सुखं वनस्य न ह्यविष्णु कश्चि ॥ संग्रामगमु संपात अजितरु ॥ अथ गलकृतं ॥ नाकस्य सर्वपक्षि ॥ अथ का कवकि नस्य चद
वनागसुथा दद्या वापि सुखा महर्षिका ॥ न कश्चि न महासुखं यथेना ॥ अथ निप ॥ अथ नूया दानय द्यापि गानकपा प्राप्ति सीग नं ॥
तानमहासुखमय निर्दोषादववर्जितं ॥ अस्या मुक्ता ॥ अथ सर्वधर्म सुखं अथ गेले ॥ सर्वं वनं तु तं प्रत्यं सपाप न नाय संस

ले ९

यः॥ ॐ महानृणा वायु धातु तिसृ त्रिमात्र नः॥ वगपानिधय रुद्रा वाधिसुतामहर्षिकः॥ हयग्रीवा दयक्राया लाचनाया मुक्तान
नाः॥ सर्वरूप पूर्वा मुक्तिना वक्ता मुदि वीकसः॥ नागानां नापननाया सुधा वासो कृता नगः॥ नाकसां (येव नाकस्य मात्सा नूधिन लम्पना
नागक नाविगनाका यस्मिन् नूधिन लिनः॥ नस्य नक्षत्रं कनिष्ठ किमहासत्त्व स्य निरूपस लाकपा लायनः॥ गजश्च लाता नाग कायिका
॥ उक्ता विष्णुश्च धनद आदि लोयह संयुतः॥ कुमारो हनता ग (य पात्रय किं सुदवहः॥ यस्या स्यात्तु तं सत्त्व साक ७५ हस्त धारी ना
॥ यस्मिन् जगत्पूत वसन्ति नडा जपूत निरूप डवं॥ अस्या मुपा ० मात्रे ॥ त्रहस्व सर्वदा कुर्व॥ त्रहस्व १० म् सुमत नन दया यस्तु कस्यः
वीरः॥ नक्षत्र मत्स्या ॥ नामक सर्वसिद्धिदायकं॥ उत्तर किं समा सिने सयुक्ता च पुन पयन्॥ सर्वमकुत्र यच मा धातुः
ति सर्वसिद्धिदा॥ नस्य हस्त गुरु सर्वे लाक संचनाचनं॥ कु (॥ पिवगता मति यथे ना धातु यन् नत्र॥ नस्य पत्रदि मधु
उक्त यथा वाच माजित्॥ हिता य सर्वसत्त्वानां रूपयाना मूदाहनेत्॥ ० ॥ ॐ नमो रगवत्से शौर्यय हता नायिः॥ नमः
सर्वभवा कएत् क वद्ध वाधिसत्त्व कोट लाज वृध धर्मसधत्तः॥ ॐ नमो रगवत्से यन मशु नू वम हाका नूनि काय ग ॥ पुनयेन

[illegible]

अत्र नि
९३

विधिविविधरूपधारी लोः महविह न रूप सहस्रयनिवहोती ॥ मानादिदर्पद नति महाविष्णु यद्याऽनि नर्कय २ सर्वमानान्
॥ साखय २ सफ सागान् । यानय २ सर्वरक्षान् की नय २ सर्वग्रहान् ॥ माहय २ सर्वरुहान् ॥ जगय २ सर्वजकजाकसान् ॥ लग
वनि महाकनू ॥ श्री टग्धेति नैके २ मा सपत्री वानां सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ मनि २ महामनि चित्तमनि धनि यनि यधेयमम
नि वं वजम नि वज कर्त्तु नि वज न किनि हृदया मूतनी महा कु षे किं किनि रिंती नि व्या व्या युच म्मा म्मा दिन जय
न महा को धना ज मूडा ह खि न च न न यूग न ना गहन ॥ ना गहन निमनि न गगनि ॥ हृद ना ह क न विग्रह ॥ ह २
ति २ गन सहस्रानि न कपल वल सिगधे ॥ अतु कसू न नम कू २ मति मानादिपनि न कि न पा दपि ॥ विविध मान व श्रेष्ठ श्रेष्ठ कः
षनि ॥ धे का न प्रतिति ने ॥ अतु क वं स के नि ये ला को क र्षति ॥ सर्वे न था ग न गु ध ह दय ॥ महामूडा धिष्ठित महपाय माया विः
माहनि ॥ माया जाल नय वल २ विचल २ संचल २ ने ॥ अतु क न म ह न न विग सि हू न व ह न ये न ॥ महा कल पाग्नि सन्निहः विन
२ बी न ग व ल रे वी न ग न मि न प न म ७ मूडा ॥ ह २ नी ग १ ह व ह १ व जा कू ग धन नि पा ग ह ह ह धनि प्रिय ॥ वजय म महा

९३

मूर्ध्वर्मावजधनत्रयिनि॥धर्मधनुहानगर्ह॥नमः सर्वयोगिनि॥सर्वभूतपूजिते॥कात्रुभामननिर्दे॥चडासुमानिति
विश्वगर्हविश्वगकनित्रयाचड२चडावगुति॥मस्तुक्चिदमस्तुतमध्वगर्हगते॥अनू॥अनू॥दयसनिह॥अनू॥मस्तु
नूट॥इतिगतनगजसा॥कंपनाप्रिसर्वविधुविध्वंसनिह॥अनू॥खविद्यागर्हमहाम॥लपूनीनिमहाकात्रुनिकरकात्रुवत्सनाम
हामाकुनूस्थानतिमहागर्हसर्वमकुमूदविद्यागस्वार्थसंजननिचतुस्तुलापदगकानितिमहाम॥दुनसहसा॥सहस्रदुजग
नसहसाकिमाहय२नासप२वाटय२रुमय२मानय२वासय२रुजय२विध्वंसय२उत्मादय२सर्वइष्टय२इष्टानरुगवनिध
ला॥एकंरुंरुंरुंरुंरुंरुंनमस्तुनस्वाहा॥विनसंघुतिनस्वाहा॥योगिनिगतपूजितस्वाहा॥सर्वनध्वगकसमहिपूनेस्वाहा॥
सर्वनध्वगकविध्विनस्वाहा॥अपूतिहन्विध्विस्वाहा॥अपूतिहन्पुणवस्वाहा॥ॐॐलोकाकर्षतीतिस्वाहा॥ॐॐलोकाकर्षतीतिस्वाहा॥
ॐॐस्वाहा॥ॐॐस्वाहा॥ॐॐस्वाहा॥चतुश्चक्रमस्तुलस्वाहा॥त्रयिनिस्वाहा॥अनूपिनिस्वाहा॥हृदनिमूखिस्वाहा॥
वनाहमूखिस्वाहा॥रुगांरुमैखिनिस्वाहा॥मातृगतवन्दिनस्वाहा॥मातृरुनकात्रचञ्चिनिस्वाहा॥सम्भनावापिनीस्वाहा॥
महाकिलीकितिविध्विस्वाहा॥महानियस्वाहा॥विश्वधनियस्वाहा॥अकविध्विस्वाहा॥महाविध्विस्वाहा॥अनूविध्विस्वाहा॥ह

धनशा
९५

नमो किनि स्वाहा ॥ ह्रीं नमो नमो गन स्वाहा ॥ धर्मधनुर्गर्ह स्वाहा ॥ महावाधिविचित्रवज्र स्वाहा महासमय स्वाहा ॥ ॐ नमो धर्मनियः
य स्वाहा ॥ महासाहस्यप्रमोदनि य स्वाहा ॥ ११ स्वाहा ॥ १२ स्वाहा ॥ १३ स्वाहा ॥ १४ स्वाहा ॥ १५ स्वाहा ॥ १६ स्वाहा ॥ १७ स्वाहा ॥ १८ स्वाहा ॥ १९ स्वाहा ॥ २० स्वाहा ॥ २१ स्वाहा ॥ २२ स्वाहा ॥ २३ स्वाहा ॥ २४ स्वाहा ॥ २५ स्वाहा ॥ २६ स्वाहा ॥ २७ स्वाहा ॥ २८ स्वाहा ॥ २९ स्वाहा ॥ ३० स्वाहा ॥ ३१ स्वाहा ॥ ३२ स्वाहा ॥ ३३ स्वाहा ॥ ३४ स्वाहा ॥ ३५ स्वाहा ॥ ३६ स्वाहा ॥ ३७ स्वाहा ॥ ३८ स्वाहा ॥ ३९ स्वाहा ॥ ४० स्वाहा ॥ ४१ स्वाहा ॥ ४२ स्वाहा ॥ ४३ स्वाहा ॥ ४४ स्वाहा ॥ ४५ स्वाहा ॥ ४६ स्वाहा ॥ ४७ स्वाहा ॥ ४८ स्वाहा ॥ ४९ स्वाहा ॥ ५० स्वाहा ॥ ५१ स्वाहा ॥ ५२ स्वाहा ॥ ५३ स्वाहा ॥ ५४ स्वाहा ॥ ५५ स्वाहा ॥ ५६ स्वाहा ॥ ५७ स्वाहा ॥ ५८ स्वाहा ॥ ५९ स्वाहा ॥ ६० स्वाहा ॥ ६१ स्वाहा ॥ ६२ स्वाहा ॥ ६३ स्वाहा ॥ ६४ स्वाहा ॥ ६५ स्वाहा ॥ ६६ स्वाहा ॥ ६७ स्वाहा ॥ ६८ स्वाहा ॥ ६९ स्वाहा ॥ ७० स्वाहा ॥ ७१ स्वाहा ॥ ७२ स्वाहा ॥ ७३ स्वाहा ॥ ७४ स्वाहा ॥ ७५ स्वाहा ॥ ७६ स्वाहा ॥ ७७ स्वाहा ॥ ७८ स्वाहा ॥ ७९ स्वाहा ॥ ८० स्वाहा ॥ ८१ स्वाहा ॥ ८२ स्वाहा ॥ ८३ स्वाहा ॥ ८४ स्वाहा ॥ ८५ स्वाहा ॥ ८६ स्वाहा ॥ ८७ स्वाहा ॥ ८८ स्वाहा ॥ ८९ स्वाहा ॥ ९० स्वाहा ॥ ९१ स्वाहा ॥ ९२ स्वाहा ॥ ९३ स्वाहा ॥ ९४ स्वाहा ॥ ९५ स्वाहा ॥ ९६ स्वाहा ॥ ९७ स्वाहा ॥ ९८ स्वाहा ॥ ९९ स्वाहा ॥ १०० स्वाहा ॥

९६

मस्तुष्टेनमानमः॥ दानिद्रायां सुनिद्रात्वादिनात्रपदकोजिन॥ नानालसप्रकाशच नमस्तुष्टेनमानमः॥ याप्रवद्धासुखेयुद्धज
कुचद्रामलोपगुशा लब्धकाक्षिजयवजिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्यामकुवलेनवपूर्यपालमिताचखटू॥ मात्राजित्वाजिनावृद्धानमस्तु
ष्टेनमानमः॥ अपराधिवधहापिप्रक्रिफः सर्वसंकट॥ यांस्तुष्टपनिमूकासिनमास्तुष्टेनमानमः॥ ययावन्मिठक॥ यमूका
पापश्चसकगानुनगत्रनायकाहचनमस्तुष्टेनमानमः॥ याचापनाजिगाविद्यासर्ववृद्धश्रीगा॥ मृदितालखितानित्यं नमस्तुष्टे
नमानमः॥ तिरिक्तासादिगासुखिनायप्रतिगासदा॥ स्मृताकायगताहस्ता नमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्यायवनभमायश्च इतिहंतुवन्य
यं॥ पा० स्वा॥ यनंवापिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यावृक्षरत्नलवद्धेव्याकृतासंप्रकाशिता॥ महनिधननिर्वा ना नमस्तुष्टेनमानमः॥ म
हावलासं हविर्गामहागतामहापरावा॥ महागुनवर्हिद्विद्या नमस्तुष्टेनमानमः॥ पापसुखिसमयादिमातृवन्धुपुमाचनि॥ जननिवाधिसत्त्वा
त्वानांमैनेस्तुष्टेनमानमः॥ नरुनिपाधिनिक्षिपनमकुविद्यानिनि॥ कार्वाद्यदिवयागमनां नमस्तुष्टेनमानमः॥ महापात्रगानाधि
गृह्णतातिरिक्तांकथापा० अथाकृतानित्यं नमस्तुष्टेनमानमः॥ पत्रयोदिगवेव नित्यमनसिखितानि सुप्रसूकगतां हस्तानमस्तुष्टेनमानमः॥

[illegible]

भानि

९६

सिंहगङ्गा काला का सा विरहा नर ॥ गङ्गा ४ वापि सत्तगना नाचवम्मा विष्णु महेश्वर ॥ अथ निवृत्त वृत्तेऽथः यत्किञ्चन न
यके ॥ दगया मास सद्धर्मज नमः विना सनं ॥ नमि वृत्त नव दारिद्र्य सीधे वर श्वग ॥ मश्री ४ संह क धर्म श्रवण
धुप पयन ॥ नव पूर्णा निगु दुति सगधि निवहं निच आजाय प्रगया सगभ क सिंह गभ नवं ॥ सदा न था ग न चिह्न क
वे अथ निवृत्तिका ॥ मेय यं पुमूखे ४ गिरी र्गवान् पर्यय कृत ॥ विसाक स कलय र्वद्यो गिनि गन मलि ॥ न जे न्ना दग श्रव
॥ कृता दन निरत्न ॥ पद किन नय कृता ददिन गान् म ॥ सुपा र्क सौ क न प्रमं कृता गिल गि सादलं ॥ पृक्त मा मा स पाय न ४
भ क सिंह गभ दधि ॥ कृति वृक्ष नय ग्रीमान क सृका न व हव स ॥ न आ ग न स्या य साय दर्ग ॥ कृति ना मिह ॥ गभ की ४ पाप सानि
य न हं लं कि चिह्न विष्णु ॥ नम दय श सर्व पत्र मा र्थ विचाल विन् ॥ अवमूक च मेयी यर गवान् त्यरा धिन ॥ साधू मेय य न मद्यं सखा
र्थ यच पृक्त मि ॥ वचि न स कल ह्वा साव धान मति ४ नू व स ग्री नाति न काल शिम्ह ड क स पुत्रायुषि ॥ अति नि स ह्म न कान क सि
न गिजन न ॥ वेध वरां च लोक ग्व विद्या च न संयुत ४ विप ग्री नाम र गवा काल गि न ह व विन् ॥ नास्त नि सत्य धर्म न सव या मा स

९६

रावतः॥ कस्मिन्निर्वाणस्य फलवर्षसफलसंरुहकः॥ सहस्रनरनस्य यत्र हवन्मनिपूम्नवः॥ सिद्धिर्कात्रे नृनां रुचनगनकम
 नाजकः॥ वाधिसत्त्वस्य संरुवतनीदीनाधनसूधधिः॥ अयमवमिदुयनेपानेसफकोगतः॥ आयासदिर्वनकावत्सप
 उजलेः॥ सूचिः॥ ऊकाहृत्वास्मिन्ना नामनामवासंति लिङ्गः॥ अंकोऽप्यनगत्रिस्तानागन्तात्पनविनाजिगः॥ आनाग
 मधूनस्वच्छुकजिह्वकनित्तुसूस्मिन्नसगन्धैवर्षायां कंगवात्रिणा॥ हंगमसकात्रुचक्कवाकापकृतिदः॥ यद
 नागनवासोनामाधनयकिनामेका॥ ममकाहृत्वास्मिन्नसगन्धैवर्षायां कंगवात्रिणा॥ हंगमसकात्रुचक्कवाकापकृतिदः॥ यद
 समकाहृत्वास्मिन्नसगन्धैवर्षायां कंगवात्रिणा॥ हंगमसकात्रुचक्कवाकापकृतिदः॥ यद
 नकं पंचनेममयकचुहिनकस्याधिनकेगत्र॥ विगलदलसयूकप्रकलहृत्वास्मिन्नसगन्धैवर्षायां कंगवात्रिणा॥ हंगमसकात्रुचक्कवाकापकृतिदः॥ यद
 बान्प्रुः॥ नागस्यधर्मधुः॥ सर्वनरुनमलिङ्गः॥ वन्दनियं॥ यत्र साक्षिपूजितियाविगषतः॥ नानार्थसापिदनाचदवास
 नननपूच॥ अस्याप्युत्तमाय॥ पूर्वदिद्वसाययुः॥ वत्तावसूमतिनागापुष्टवृष्टिदिपोरुवत्॥ सार्यनिष्ठतिष्ठतिधार्मी-

संज्ञा हि तां ॥ ४ ॥ गुरु नमः वक्ति ॥ चतुर्धा निना नाम ति हिर्महा ॥ ४ ॥ संपादिता न्या लमनाद यन्ति ॥ तदवह मिश्र नृह नृव या ॥
ग्रासयुको धर्म नग रवन्ति ॥ ५ ॥ सिम्ह पुदाका निव ससका निव धु निरुहा नार्ध हा नादि ति नल काले विन्दु विनं गा ॥ ५ ॥
पुदात्रे सम विना ॥ ४ ॥ स्वर्ग मय च सखे सप न्ना रवन्ति ॥ वीना धन द्य ॥ ६ ॥ मृदंग वा येन ये श्व गं वादि सु दिव्य गे ॥ ४ ॥ संस्था स नाय
विन न निन साय हि ह्यु प च रिता जि ये न ॥ न का र हि नि मा लं समू द न कि ये न त्रे ना क सम स्रु ना गा ॥ ४ ॥ कू हि धि मू का ह न
षण्वा मा रूप प न्ना ॥ ४ ॥ गे न न रवन्ति ॥ पक्ष म ते श्व न न ग श्व ग ह्ये स्ता प य नि न म न न न त्वं ॥ म द कि नि ना य मू ग ले स्व व
धूरी न नि मा व हं ति य र सि सु धा ल प मू द च न कि न रा ग ॥ ५ ॥ या ५ वि क गि नी त्वा ना नि र्वा न व न द य ति ॥ न थ चे वा प क गि
न्या वा प वि श्व य य सि ता ॥ द वि सो ध र्मा धा तुं नं स क्ता ना थ मू पा ग गो ॥ द धू नी तं कृ पा वि ष्ट चि र म न न न च नृ ॥ वि न न श सि न द
प म क र्ति का या स्व य वि नृ ॥ ४ ॥ ग न श्व द्वि ज र य सा धु ना य न स दं ॥ व स कि शु म न ग न सि ग मा ॥ ४ ॥ व म ॥ ५ ॥ प न ॥ ४ ॥ न यि य प का य
न स म र्ग गार्त नृ न व वि न ॥ स्या द थ य ल्क नि ष र हं न स नि ग्र ह न म नि ॥ ४ ॥ न कि नृ ने ग्री स्व य ॥ ४ ॥ पू न नि मा र वि ष्य ति ॥ च नृ हा
न ख र्ज न नि मि नः ना कि वि रू ॥ ४ ॥ प र्व न गे ल स या न वा र्या मा स धा न वि ॥ ये य य व व पा खा ॥ ५ ॥ नृ स न कि ना ॥ नृ नृ नृ व पा षा न

॥ १ ॥ पूर्णदिशं पूर्णमना तथा कृत्वा वसेत् यः पूजायां हस्तस्वनिवदिनं ॥ अथ मया हस्तस्वनिवदिनं गवान्तरुषत ॥ गद्यपुत्रा
कं ॥ न देवपुत्रनचिह्नेन न स्मिन्नूतने प्रथमं यत्नं वेत्तुं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नाविनिष्ठा निधर्मार्थकामः मोक्ष
तकि ॥ यथा केषुचि नागमार्थानि हि चित्तप्रसादस्य सत्त्वात् तद्विद्विना ॥ गथा गथा वासधर्मो वधा नाग्रवकापिवा ॥ वक
चित्तासंबंधा वृद्धधर्माश्च निर्मना ॥ अचिन्त्यहिय सत्त्वा नाविपाके सात्महा ह ले ॥ आत्मा पूजा न नासम्यक् मूढस्य गुणान्वरुन ॥
कार्यास्तु येषु सत्त्वा नाविषय निमहा हस्त ॥ न स्मिन्नूतने चित्तप्रसादं कविना यत्नं यद्यपि पूजा कर्तव्या ॥ ० ॥ ॥ ॥ निशी स्वयम्
चेत्तु हस्तनकादं गपूजा वर्तु ॥ नामदिनिष्ठं यत्नं निष्ठं ॥ २ ॥ अथ प्राचाचमये यो हगवन्तं अद्विनिं स्मिन्नवसन्तं देवतयो
तां यद्दय ॥ ४ ॥ स्मिन्नं नामाने नागवासां यं गता ह ॥ कस्य काते हगवन्तं यथा मादि कम गयत ॥ ४ ॥ तथा गतस्य तां काले गतस्य
निसहस्रं येषु विवर्ष ॥ स्मिन्नं पुजा नामा येषु स्मिन्नं ॥ नापि मायां न दातां नाविश्वं मूनि पूगव ॥ ४ ॥ पर्वनां वा ॥ १ ॥ हस्तवर्गं कस्य पूज
न न ॥ ४ ॥ न स्मिन्नं कालं च मे प्रियं चारु नापथ मध्व ॥ ४ ॥ महाचीनं विख्यं मूर्ध्नि नाम पर्वते नामा पूजाय ॥ ४ ॥ जिघ्रसु निष्ठा ॥ ४ ॥ मर्ग
धी ॥ ४ ॥ मर्गिनी न हस्तवर्गं सवर्गं ॥ ४ ॥ सर्वविर्गं न ॥ ४ ॥ यथा हि हस्तवर्गं नामा चार्यं स्यात् स हस्तवर्गं विद्वानि निष्ठाता निर्वानं वनकाय

अनलि
लेले

नित आदेशोपकाजि न्या व्यापविश्वप्रसिद्धा ॥ द्वादसो धर्मो धातुं न संस्का नाथ मूपागते ॥ द्वादशो नं क पाविष्ठ चित्तमगत पुन
चक्रुः विज्ञाने रस्मि न दुदय म कर्त्तु का पा स्वय विदुः ॥ ज्ञानेन विदुः यस्या दुदय म न नास्य दशा व स नित्या मन गत ति
गमाः कु म्भो र्मा प न ॥ ०० नियन पुका न न मं र ग्री र्त्त न न व वि न् ॥ साय था य क्ति पि ष ॥ हं न त नित्य ह न म ति ॥ ०० नि क्ति ने श्री स्व
यं नु पु न नित्या र्त्त वि ष ति ॥ च नु हा स न त्व र्त्त न नित्यि नः ना कि द वि नु ॥ ए व ग म्भे त स मा न वा ह मा मा स धि न ॥ य द्रु य र्त्त व पा षा ॥ न
रु ॥ अ न्ते ल सि न न द्रु व पा षा ॥ च नु च द्रु हा स न त्व र्त्त न ॥ कि ल्वा च्छि ल्वा च ना च के न दि ष्ठा ता ॥ न क ग ॥ अ हा ना न्ते च उ र्त्ति र्त्त सर्व ण
ग ज ल ॥ अ न्ते न ॥ स्था प या मा स निय नं दु द म क र्त्तु ना न म म ॥ घ ना द ॥ ०० नि न न्ना म ना क र्त्तु का ल य ॥ ग ना ध र्म स या धा तु स स्य
या धा न रु ॥ अ सा ॥ अ न्ते म र्त्तु ग्री या ना ना य र्त्त ना क्त्तु य मू ल मा ॥ स्था ष्ठा ग ॥ प न्ते ना व न क्त्तु ग ॥ स च वं हि ग य ॥ ज ल ॥ अ न न क न म
व वे र्त्त स ध र्म धा ना र्त्त धा न रु नं म हा य म क द व क्त्तु य म गि त्रि ना म पु सि द्वा ॥ या र यं द्रु द स्य ग ॥ धा र्त्त ॥ सा प क्त्तु ना ह का र्त्तु ॥ स म क
रु स ना र्त्त स सं म ना का न म ॥ सु र्त्त या र्त्त सा ना स हा ना र्त्त द का त्रि ना ॥ क र्त्तु यं पु धा ना या द वि ला के त्व ग न ना ॥ या ॥ अ का
का न न स मा ना ग र्त्तु ग ॥ य न्ते म ॥ ०० ग्री ना ग र्त्तु म स्यि ला क ग ॥ य ॥ क र्त्तु ना र्त्त ग्री ष स क र्त्तु ॥ य र्त्त ग र्त्तु नि ॥ अ सु मा ना र्त्त क र्त्तु

लेले

दिचरुत्वाषाषधसंयतः॥ तत्राचक्रादिनिवर्तः॥ सधर्मश्चयनयमः॥ तत्रोगागल ॥ कृत्वाप्रागदानयैथामः॥ दत्त्वास्त्रात्वा
पत्राहृत्यसूचिवर्मुविधानविनावगादकंदगमाकेयः॥ यः पिवत्स्वर्गलियुयः॥ अष्टाकृतविनिमूकः॥ अत्रत्वाप्रागदानयैथामः॥ दत्त्वा
मित्वाकृता ननगुत्रमंरुग्रीयापूनः॥ मंरुग्रीपर्वतसंग्रीगुत्रवर्तितमाययोः॥ गयः॥ तस्मिन्नवपुदलासूचित्रनयवस
तुः॥ दत्तधृत्यविनत्वादषपदः॥ १॥ अपि मंरुग्रीः॥ पर्वतः॥ त्रिविक्वातः॥ १॥ वक्ष्येयविश्वरुवस्तथागतगणहंतम
सूत्रद्वयकालसमयमंरुग्रीः॥ निर्मात्रपुनमंरुदवनाम्रावगाचार्यः॥ तत्रलः॥ षयित्वामहाउदावस्तुधपुदगकृतः॥

॥ १॥ त्रिग्रीस्वयंरुचेत्पुद्गात्रकादगयूपकृत्वाहत्वादनानामरुतियः॥ यत्रिच्छेदः॥ ३ ॥ अथमेतद्ययवज
मिग्रामचतिगमादिकं। यदाहृतवत्तदगगल ॥ लोकहितायचविश्वरुवस्तथागतनिर्वानसंप्राप्तिः॥ १॥ हेवकल्पः
सिखिननिवर्तः॥ सुगुत्रोगतः॥ चत्वारिगः॥ सुहृन्निपुणानामायुषिस्तुः॥ कातस्वल्पकृत्कृत्वाविद्याचरत्संयुक्तः॥ अहं
सम्पत्कृत्तुः॥ १॥ अमावस्यामपगायनेद्यतिपात्वावत्वाहंतदात्राधनसूत्रधिशः॥ ततोऽनुत्तरगवान्तस्मिन्सुविज्ञानायच

अनति
१००

द क ॥ पूर्वतः गच्छेत्तु च विष्णुमित्रं ननु य ॥ सिनापविष्णुमहाहिकुसये ॥ समन्वित ॥ अर्द्धयथादगगते वाधिसत्त्वे
कैनात्मरिव हिर्यो गिरि रन्दीवीत नागनननेकग ॥ सर्वस्वपत्रिकुलि समाधि ॥ गविग्रह ॥ हव संसा न ॥ ३० ॥
वपनि ॥ अत न नामधर्मपयायेद गयामास ॥ श्रीमनुयामास ग नवाधिसत्त्वा नवाच स ॥ यकथित्कृतपुत्राश्च पुत्रम
ग्रहनश ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
काखायवसनेष्टना ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
कायासनो ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
प्राचाचरगवान कुरुक्षेत्रा मुक्तचतन ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
कगम्भनि सोहि लाकपायवसनेष्टना ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥
पाकि कात् ॥ सफटिगतिहि सुष्टनना धर्मजित क्रिन्दिमा ॥ असापर्वत गच्छेत्तु च विष्णुमित्रं ननु य ॥ सिनापविष्णुमहाहिकुसये ॥ समन्वित ॥ अर्द्धयथादगगते वाधिसत्त्वे

१००

निनासाय विन्दतः॥ गयः॥ ककुदस्य धर्मवचसा विगच्छतः॥ प्रविष्टिनासयमपि वाग्मतिनियुसिद्धाः॥ तेषां नागसदाय
वागमतिपत्रमवति॥ तस्मिन्मदितकगमनिनावयुग्मश्चुश्चते॥ नागमकेद्रिपतिमयसा केगवतिचता॥ दगनाथेच॥
नदिनादिति यहागमनुहि॥ प्रद्रिपयुग्मे कगतावचेतानिनिर्हयः॥ अथाप्यनकचेरनाकिर्हिनसि सर्वसंभवतवगवोसर्व
ताकीहिगवदगुत्तमहानतस्मिन्नेवद॥ एवीगागाभश्चेययुः स्वयं॥ सत्वानात्रक॥ अर्थयसमकालेसमाहिताः॥ प्रवतमनिदूत
चगित्रागदत्तचामतिन॥ गयः॥ उकावितनागैः सीवगंखपुवतसासमिपयसिन्मसिक्कटनगात्संगमसिचूठनवाधिसत्वनसमाधि
कृतं॥ स्वकीयंचचुजमनिमूखायदानदत्तकस्मिन्मनिकृतपर्वतात्संजाप्राईरुताः॥ तदप्यपि सवितानागमनिसिगच्छतिखातः॥
अस्मिन्नेवचगवत्सपुर्वतसमतिदूतगित्राचुयात्तदातयानदिमसमण्ण्यातिरुचुजमनिद्रुधितजलसपकादप्यपिमतिनाहिनिनिखा
ताः॥ एकोत्पत्तिरुत्तरेवत्तकर्मस्माद्विनि यकुरुती यथाद्रुसिखनचपुर्थः॥ कुरुतिथिक॥ पचमः॥ रुतिकेभंजाषष्ठागर्हयदगक॥
सफगभवत्ताभविक्कमः॥ रुक्मावति॥ तदनेनैत्रमवास्मिन्पक्कनाहकनुज॥ हिमालयाश्चैव्यावेनेषाग्रमादिकावसत्॥ अथपुनर्पुन
गात्मावाधिसत्वादयोदधिधर्माकनानामनाजावद्व॥ समतः॥ संताः॥ एताश्चसूखिनस्तसुवदवद्विद्वताः॥ दवानागश्चयकश्चअसु

[illegible]

४ सा नं नीर्थ निर्मातुं स ह कृत् न यः पयः न वा स नान्य क वि गति ॥ क सोम सा नि नं स्पति या प्रा ति वि पू ता ग्री यं ॥ ग ह व र प
 ज न न य प हा मा दि हि सु तां ॥ ति र्थ नि धा न कृ त् न वा स नान्य क वि ग ति यः ४ सा नं ले र्त् नं न य ध न धा न्या ना दि कं रु तं ॥ सा द न ग प
 हा मा दि क्रि या रि त्त्वं त्प न व न ॥ ४० ति वृ धा स दा धि मा ने सा न दा न न ग नो रु व न ॥ हा नि ति र्थः २ रि ष कं यः ४ स पा द य ति म द्रु नी ॥
 वा स नान्य क वि गं ग र व मा रु रु तं रु व न ॥ अ हा ना वृ ष ण त्मा ना न य प हा मा दि कों कि यां क ता गि त रु तं न स व रु सौ र्वा स म रु
 यं ॥ से र्व म हा सूर वं वा पि ल ग मा रु रु तं रु व न ॥ विं का म सो प न ति र्थ न क वि रु न धि ध न वि ग त्प के न दि वं स सा दी न रु ज
 न न ४ ॥ दि र्घा य व र्ण पू गार्थ मा न्ना सौ र वं च त्प न ॥ वी षा ध मी रु तं वा गा सू र व का म रु ता नि तं अ हा ना वृ ष ण त्मा ना न य प हा मा दि कों कि यां क ता गि त रु तं न स व रु सौ र्वा स म रु
 न त्प न ४ ॥ पु मा दि ति र्थ मु दि न ४ स य न ४ स सा न मा च न ॥ य न क वि ग दि व स सृ षि ति सू र व रु रु व न ॥ अ हा ना वृ च न वृ व
 न य प हा मा दि क प तं ॥ न ति पि ति रु न य स ग रु व न क त य दि ॥ कृ त् न न रु लं यं सा रु त्प न ना च न न ति र्थ मु त रु ॥ क यी य
 सा न च क विं स ति वा स ना ति र्थ मु त रु ॥ सा सो रा न सू र व रु रु व न ॥ न क व ल व न सा ना न्ना प ना ग न ना दि हि ॥ अ हा ना रु कि यां

[illegible]

धनति
१०३

[illegible]

नमः श्री ४ रूप कथं ॥ ननु दहति हर्षं हि १ सावामनिकथं ॥ ननु १ या रूप के ४ गार्ध मरुती ४ स्वर्ग हं यथो ॥ कनायितारसास
कथनितुनमूलरुदिहि १ ॥ धर्मश्रीमीश्वराचार्यगुरुमरुतीयासरु ॥ मुखसनरु नीचककथां नानाविधमिति ॥ नतोनाथो
ददो नसे सयनोथाग्रहचयत् ॥ ननु गन्धकं संपा धर्मश्रीमिदुत्सुत ॥ ६० निविष्टनयकमगयनद्विर्धकासि
कमहाधि काय रगवान् कथा काका कनिष्ठति ॥ ६१ मिश्रसमस्तयसकला मां नुस्मर्ययत् ॥ नद्यानमृतमामृतं निरु
नमः ॥ इति स्तुवानेन नाम श्रीयादविवर्गिनिपत्रमगवनि ॥ पुनरुक्तं गवकनं प्राह नागमनार्थकं कनाथं नागम
अस्ति यद्गवव्युहनाय ॥ ६२ निग्रीत्वा गत्वा थ १ ॥ प्रावाच पत्रमगवनि ॥ तिला कमाय दवित्वं गतुं वंमि कदकनं ॥
यनाथं नागना १ स्मृतमरु १ रत्नमचि नयन ॥ धर्मश्री श्रीमहाहिकुविहानविकुचन ॥ नेवासुकार्थं संच कनामा संगी
निकसचः नाकथोरुदकन द्वादशसु च ॥ विगस्य मनु मनु ॥ अंत्य सुमयमागत १ ॥ ६३ निदविवचनं ॥ त्वा प्रा कवा सं
नगलु न ॥ ननु नाकथं नखा द्वादशमना कथापुला ॥ नसे वाचरगवान् यथा कुष्ठां रथा कथा ॥ गुरु दहनदविष्टीत्यागव

शुकासिना॥ अत्र तद्वचनं तस्य न ह्यस्य सकलवति॥ इत्यमरः श्री योयसा द्विनिनिग्रयनायं यो॥ नतउत्तराय विदध्ववाष्टोम
 अनतिमतिरथावति कनकलोपुतायं नतनत॥ नत॥ यतः नतय कसिनिपनमश्वति॥ उवाच नयानास नदा कया
 नन्दषवाचनं॥ दानमूलनिपतिरदृष्टाया दृष्टस्य त्रनिवदयां मास नताशुनूव विदितागम॥ रगवत्याह नादानम
 नगुपः इति किंपूनः जीवत्यवमनवासीन॥ नज्ञानं निद्रापनां॥ अत्र निचवस्तुमं श्री नूली न॥ पनं॥ समस्तनंदान
 रुचमस्तुपचसादत्र॥ धर्मश्रीमदुत्तराय नमस्यामास नंगुनं॥ अथप्राचीनवगुनं मश्री यं पिदं वच॥ महहागमस
 प्यात्रुल्लगव नय नमार्थचित्तममकनहेरगवतनामसगितिकस्यच॥ अर्थयदगनियनंदं गयत्व निइत्तरे॥ नवमके
 नतस्तुमं मश्री नूकवानिति॥ चिनाहिखिचकथं नदमुपदिशते॥ अत्र निवचनं तस्य धर्मश्रीमदुत्तराय नमस्तु निहना
 इहकथं रगवने कनिष्ठागुनं नपा॥ अत्रुत्तरवाचधर्मश्रीमिद्रगनिनायकः नतास्य उपनसपोत्पा किचित्तमं नपु
 योजनं॥ धर्मश्रीमिद्रनपुत्पाजास्य इह नतिषचनं॥ अत्रुत्तराय नमस्तु धर्मश्रीमदुत्तराय नमस्तु धर्मश्रीमदुत्तराय नमस्तु
 पूजयामास नतत्वेन नतत्वे॥ विहितिलिखे नतत्वेन नतत्वे॥ इतिषिकवान्॥ अत्र नत नददो नतादक नतासं सगुनं॥ अर्थमर्थ

विद्वानिहः कनूना विष्णुमानसापणा लिखकानगुका धीनरुनहादगसच धर्मग्रीमिग्रउकी इयसादपुलककमः॥ हव
उरुपाफवाचि नार्थ धनाच्ये मरुथीयचसासा नयथागका पुजयेत॥ नमस्तु तद दो न सौत्वे न नसूत्रे पायवे॥ अ
ॐ वाचगुत्रमरुथी धर्मग्री यवेचः धर्मग्रीना पसगी सायगार्थ क्रिये नत्वेया॥ अगतः सामरुनय कुकु न वससूत्रान
ॐ सुवाचनिसमदवाचमि मसी यो गुत्रोमहधी कसूत्वे म गवन ह्यसायामागत कथं॥ उवाच न स्याजानिहिमा मूत्पलं क
तगुत्रे महापविनः धर्मग्रीमिग्रः यमदिनरुत॥ सोमनस्यपनगाताः अस्तु सोननामतं॥ कृत्वा पदच्छिन्नं कुत्ति तिसादत्रान
दसून्दनः तस्यानिका च प्रकाका वाप्य पुन नागतः॥ विहानं विदु पुन वात्मानं विदधनः॥ नामा संगितिक सापिमरुथी
सुवपाफवान॥ एकजिह्वा सनाथ धर्मग्री मीय कसूच॥ गपित्रनिर्माय सा नलेमक्रिकाः क्रियन्॥ पृथक् हस्तलामध्वरु
वानुजगदि स्थने॥ हकु नत्स्यत कनय सा न्धम वामाययो धर्मग्रीमिग्रउ चैः थैत्वा नचाहि नात्रनाः गनननसमत्तायध
मग्रीमीयउत्सुकः॥ नमस्तु तस्यमानस्य मरुथी विमृता त्वेन॥ आसय न सविहया धर्मग्रीमिग्र कसूच॥ न हृष्टं स्वमयाद
चमि ॐ कनचसज्जलि॥ ॐ सुकेन नृना न स्य धर्मग्रीमिग्र कसूच॥ चक्र विपति न ह मो नूदक सै निव दयन्॥ ॐ हृदि हृदि

अत्र लि
१०१

नंदवनत्तमसुशुभाममहवपुसत्रचिगायमंशुश्रीतनिवाद्यन्। कर्मरुनतत्तु ननपनस्य कियत्तम ॥ तथापि ह
नदेषु त्वदेव साकयनि शितं ॥ ०० पुष्पा नृद ध्यगमस्तु नृत्तममवचनतः पुति नि बत्ता कान श्री त्रि ति श्रवत
नत्तमदे गोश मे प्रयुतत ॥ एत नि नृचन के न कसामनि धर्म धनु बागी श्वे रा इव वत् ॥ ० ॥ ०० ति श्री स्वयं कुच
हदान को द ज धर्म धनु बागी श्वे न पुवत्त नानामषष्ठमः पत्रि कदं ॥ ६ ॥ अथा वाच महा सत्त्वो मे प्र यो गग ना प
ति श्रय श्री र्गवान् धर्म धनु बागी श्वे न ॥ कदा के ना नृद ध्य पित नत्तम किमर्थ मिनि क ध्यतां ॥ ०० नि नृद नन श्रुत्वा य
कवान् र्ग वां श्वे न ॥ गत कल रूड कत्त नि बनि पाप वत्त पि ॥ मृ नो श्री कन के नृ विगद व सहस्र के ॥ पुत्राना माय वि पु
फला न वान् का श्वे यामनि ॥ ०० वा नान सा श्री न ग र्ग म् की मा र्ग ना रा द ग क ॥ अरु व वा चिसत्त्वो हं ध्या नि ना शो ग ना द धि ॥
श ना धय त्वा क ग नृ सर्व कामे ॥ पु स नृ धी नत्त काल ग नृ म र्ग यी त्रि क कं ए वि क्षय स ॥ नृ क र्ग यो ग ना वत्त मरु द्द पु नृ क ल
जाले पु प द्द स का ना नि ह र्द पु नृ ना ग न ॥ म र्ग श्री य द्द न सा मि महा सूर व नि ग न धि ॥ अथ का ना क न जे उ ना पु धर्म पि या
ह वत् ॥ प धि नृ द व र्ग याला नि ब नि ना त्म क व र्ग धि क ॥ नृ ग र्ग नि धि ॥ अथ सून ग ग नि द वं महा वत्तः वि मि य स मा उ ध य

१०१

[illegible]

अथ श्री
१०६

६ (१) धर्मधनु वागीश्वराय फा नाम सफ ४ प निरुद्ध ४॥ १ ॥ अथ नपा सख्य। च अमि ने पात्र मय सयु न ॥ सिद्धि
कृष्ण महल वश नू मे ति य साद न ॥ अ ६ ४ सि नय क्रम य न म निय य सर्वदा ॥ सु हि को वर ला का फा ने पात्र य नि नाम
य ४॥ अथ पत्र ॥ का ल न इ हि क्र न य ग्रा वाने ॥ स फ सं वत्स नं क द व म् क दा वार्त्त नो मये ॥ न तु का ल र व न ह यो गु न का
म द का महान् ह या च वि न हा ला क र य म् ग म स म् ४ चि का मि मां प त्र म जा न ४ क ष्ट या प ध म् १ ॥ स्या ह ॥ के क यो क्त य
म हं य त ४ स १ सु खि न ४ प ग ४॥ ए म ग ग य व न ग नि पू ने ग नि क नो वि षु ४॥ सि द्धा चार्या र सि त द न्यं क र्मा मि ति वि
म र्त्त य त ॥ ग त्वा त सा द पु ग ल न म लु न स मा हि त ४ क न ग र लि पू य ष्टा य सि त सि द स म प क्ष त ॥ त्रै का ल व दी ना द व पा
दा लु द पि च यो हं ॥ लो का म १ ४ खि ना दे व र्हि क र्म क्ता ४ प त्र ॥ ए वं मू के र्थ रू पो ला ग्नी द व स म् चि वा ने ॥ ना ग र्ही क
ग म् १ ४ र्थ म पि च क न वि षि ४ ना ग सा ध न न क र्म नि षि त स द र्थ द ४ ह वा नि षि वि ना ग म य ह व तु न सा ध क ४॥ ४४ न
क थि त मा च क्ता ग्नी द व न न द्वि षि ४॥ ए वं क न न क न ना ना ग म य व न् ॥ अ द य ४ म नु ष्ठ ला वा क्ता स सा न कि पू र्या स मा ग
ता १॥ ए क क र्ता क ना ग ना गी नू प वि ल क्त ४॥ स र्ज या ना ग र्ही क र्म ग क्त क र्ष दि ॥ अ मा ग त क मा ला स अ नी क क उ

१०६

वाचनं ॥ नृपामीश्वरः सर्वनाथः कर्कटकांतः श्रुतः साधनं कदगत्वा दुर्गमिह हानय ॥ स्वतः यदि नायातिवनादा
नियतागतः ॥ ६० ॥ सुचिंशुं न हृपात्तः श्मकीदवसुनं ॥ अगटसुतिलदवकथंगकुचसुकेन ॥ ननः ॥ अकि कनादवसुमथ
पूतनूकवानुहनिदुर्गसमातूषुजदइवाति यागय ॥ ययुमुमध्यायति ननमा ॥ अतगमातां ॥ मयुलावनरावनरुवगागान
यंच नदिके ॥ ५ ॥ विहृपूनीया ॥ मोत्वयामध्वच नात्पुनः ॥ ॥ अगटपवर्गमा निपूतनागा ॥ अहः ॥ दगमरुवहिच ॥ ३ ॥ कस्य
नसि ॥ स्वाविचिद्रुमीरूपधनयामि ॥ विचिद्रनगीतं कनातिमवसिचिन्त्यसूनहिमना ॥ ४ ॥ धाषगीतं कनाति ॥ ॥ वकाजनप
दवाप्तनाजनगुचाकृगागानः ॥ दिवाधाषमहिग कुलाकासर्वेषां तेनिद्रय नकचिद्वकुदगयीतुगनः ॥ ५ ॥ दहतेयुलिकासु
नदिवाप्ति योवनसर्वोत्तक ॥ संपन्ना ॥ ४ ॥ दगनमोयुनतुववके नसक्त ॥ अवंदवकनावा ॥ सूनकनावा ॥ ६ ॥ अकाकचिकना
पणागनः ॥ सायकसुननविषुतिमूर्तुमार्तुं ॥ पूर्वदं ॥ ॥ पश्चिमउतलदिगंप्रतिदिनगीतं कनाति नपस्य किं योतननासर्व
अहवद्रगानः ॥ त्वजितं ॥ गत्वा नागासूर्यापरादनसां ॥ अकृगा ॥ अतिरुत्वा निवदिनं ॥ ॥ दवं कथंचलिकासुतमि ननपुतिदनागीत
कनाति ॥ ॥ गुरु निमित्तं व ॥ अगट निमित्तं वा नगानामि सुहि ॥ अहिगार्थं विहृपिठवान् ॥ ॥ अगमिष्यति ॥ अनापगुहं नाति नागाचिनाय

अनन्ता
१०७

जायवसि न ४ कल ॥ अग्निनादहनत कपिगानागत ४ ददनं कन अस्वधाषनेदिमूखचिकयन्ति ॥ किं कनानागानपाप
कनादवाहू विसृजितं न किं योजनं मपि तु महाव नाह नृपनास्त्राय उद्यान एष न विध्वंगयति वचो क ॥ १ ॥ नदा
नदिमूखमोह ॥ किं गकी न विध्वंगय ४ हन कार्य समूपादि तथा कनिष्ठा ३ हं विध्वंसिता ४ नदानदिमूख अस्वधाषा उद्या
नरुमिसर्वपादपापेष्वक्षम ७ य सर्वविध्वंगिता ४ ॥ सूखनद्धी ठितं ॥ नदान उद्यान न किं कन व नाहं हृष्टाय नायन ॥ ४ ॥ सलनगः
लाहगगति सगजनि वदिनं ॥ दवमहानाग नूद्यान एतयंगन महाव नाहन उद्यान सर्वविध्वंसिता ४ ॥ नननाग ४ ॥ अक
ननश्रुत्वा तुर्गिमु अष्टधनगही ला अक पूनघ ४ ॥ अषनाका नितवान् ॥ ललापो नन नाम सलानाह च न्य नाथ सर्वसमु अक
धन्याय धनगही ला अक नवान् ॥ पो नन नाः लजसलख न श्रुत्वा सर्वपो सन नाया धा समि सगज धा निगत ४ ॥ दव किमा हापयति
॥ नागा वाच ॥ अत्र किं न जानासि उद्यान रुमि ससयंगन ४ किं कनिष्ठा मि ॥ अमा सूवाच ॥ दव जा हापय ॥ नागा वाच ॥ सर्व अहम
पि उद्यान रुमि गन नाय महाव नाह च न्य नाय ॥ सथ गम्यतां तथा कूट ४ सर्वजना ४ ॥ निसलषितं कृत्वा उद्यान रुमि गनवान् ॥ न
नागा वाच ॥ ललासकुंज नाया धा गही र्थे यमोद कि न दिसा अमा स्य शिमदिसा सनापति रूपा ना ननद्धी नाम गानेवा

१०७

नै॥ संज्ञा धर्मात्मकः सत्त्वकस्तानुसंगः ॥ महिषिमतस्तत्कस्य सान्नीधवस्य रूपति॥ सिद्धात्मसंगमत्संगतसिद्धिगनपंकज
॥ ६५ ॥ संप्रयसं कस्तानाचार्यनेत्यासात्रनु॥ नदिकास्तत्त्वगवनेगत्वाचार्यमसासयत्॥ एवं मेधेनपातेदवस्थानस
मिद्धिहृ॥ महत्यरावचरुत्वाचा न साद्रकासति॥ सर्वसात्कीकनादवश्याचार्यमहर्षिक॥ एवं रूपसमासत्तुसम
धिषिदधपना॥ स्वपूनायागुना॥ धर्मात्मकस्य कस्यानयीगुत्वविवलचरु॥ ॥ ६६ ॥ स्वर्गप
माकत्यत्तसमचिगसमतितासमागता॥ त्वमकानागसुत्रकात्रतं किनिगमनासाकदवस्यने॥ स्यात्तुसत्त्वत्रगमनक
उवमुकेवनायादिहथादनियेतातदा॥ न्दीस्यचरुपात्त॥ पुहिगसुप्रसक्तता॥ साधितिवचनकस्यसेनाधत्तत्रितं ययोगत
सनायविष्टनपुकात्र॥ सनिर्हय॥ पावाचादगसकलतकनापिकिचन॥ ननाह॥ अत्तमान्नीगागुनेकासददनस॥ अनित्ये
नमाए॥ अवसिकावत्तउच्चाते॥ ॥ ६७ ॥ मकायसकत्तनागोत्तसत्त्वमत्तन॥ साकिदवनयचाकमेदेयकत्तनाचरुत्॥ अथपरिति
यूष्माहीनद्रुष्टिविधीयतां॥ कात्रकासचरुत्तथसत्यमि॥ त्वमदिदिगत्॥ निसमत्ततस्यवचरुत्तनाहृष्टिमानस॥ ववः

तं च पितृसावनि ॥ अथाप्युपरा वनवेत्याद्यादगवत्सुत ॥ पचाहिलासीसारुविषयितनसगय ॥ ६० ॥ नृवाचनगकुकागभयसिहा
 नृगु ॥ ६१ ॥ नृनि कोसपवनरिक्तवा वाधिमार्गग ॥ मेयप्रमृतादेवाः नागला कोसनादय ॥ साचसर्ववतिपर्वदन
 मादन ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ दंसूत्रं खत्तुमातवानासूवदवा कंदु विमाकमार्ग ॥ ६४ ॥ गतिवाभवयनमनृषा ॥ सपातिनूनसूगक
 साकं ॥ ६५ ॥ गतिग्रीवसूधनाये ॥ वसूधनांसदानत्वादात्रिदाशवगात्रतिदंगसिमनृषार्थसर्वद ॥ खपमाचनि ॥ पूर्वग्रीवसूध
 दविबुधसूपकासिन ॥ कथांपनमामिर्गयनां गावत्कृत्विगाउवनदविगतसर्वमितित्वामयंमधुलसर्वदनिददकु ॥
 ग्रीवसूधन ॥ प्रचादयामास ॥ मर्त्यमधुलसर्वदत्रिदरुवकिन सर्वउधन ॥ अथैषस आरुमदविसंचिन्त्यविहृषित ॥ पुस
 तचिह्नरुय ॥ मर्त्यमधुलयननृषानसत्त्वानावाधयननननरूपनधर्मदगयनिग्रीवसूधन ॥ प्रचादयामि ॥ ६६ ॥ तूपाविका
 यसूति कायसूतिरुत्वा ॥ ग्रीवसूधनामकनृपमहानमिमकनृपकात्रिमकनृपकनृपं ॥ निसंचिन्त्यश्रुधवाषनन्दिम

ਖਾਤਾ ਨੰ
੧੦੯

खमामनु यित् ॥ सत्त्वत्रमागकमिन्नुवाहक ॥ अलीसिनसा ॥ अर्थपथी नोद वि किमा रूपययन्ति ॥ श्री द। व। वाच ॥ नदिम
ख अखधा षड्वा मर्त्यम ॥ लंग गी सूर्योपरुवा नोगापरु नि दुंग व्वा ॥ सिमन्मम तुलंग च्छु ॥ नदिमूख वाच ॥ वि
मर्थ गी क्रीति ॥ श्री द व वाच ॥ नदिमूख अखधा षड्वा सत्त्वत्रम मर्त्यम तुलंग च्छु ॥ नदिमूख अखधा षड्वा नि द वि तमः
रुत्वा श्री ह्मिलसा नि क्षममर्त्यम तुलंग पुहर्ष ॥ ग न व नी ॥ गत्वा च न काम मर्त्यम तुलना ना वि वि द्वा प क न न द धु अ
ह न गी अहामर्त्यम तुल नम नियं कथं च लि न वां ह्म न वां ॥ ०० ति सं लष ॥ ह्मत्वा त्व नि न २ सूर्योपरु द य उ त न दि सं
सर्व पी न ग ना सि य ना ०० ति स म नं ह्मत्वा सि त्वा प न या मा स ॥ स र्ज स र्जि ह्मत्वा नो गा प ॥ न प्या ह ॥ य नु दि सं म हा व ना ह
प ना पी न नृ धि तु ल ग का ति म या द ॥ या मि ॥ ०० ति नो गा व च न स त्वा सर्व ज ना या स ने स्व स्व ध नृ ग मु ति ध त्वा सि न
वान् ॥ नो गा म हा व ना ह सर्व ज ना द ह्म प न सा न सं ला खि न वान् ॥ न द म हा व ना ह का ना ह ल ग दं ॥ अ उ म द ग दि म र्वा व ल
य न म हा स दं क ला ति ॥ म हा व ग प न नं न म्ना न्ध का ल व ह ति ॥ द ग दि स आ कृ ति रु त्वा धू न न व ह ति ॥ न द य य दि गः

905

[illegible]

92

ધાર્મિક

990

[illegible]

वसुधैव कुटुम्बकम् २

990

वरु नामहि न पिपायत ॥ नवमस्तु महाद विरुव गा जथाद सि त था द ग या मि ॥ पञ्च तत्र न संपूर्ण तित्क पात्र नार्थ ॥
धूमममादि पिष्ट कानिद्यु त सत्के तदधि दी य न ॥ तल्ल ॥ समयन सस्य तिना हा रेव निनाज्ञा ॥ न प्रापि न पातन वि
स्वये सर्व त्वानियं ज स गृहि त्वा दे विगन न म स्तु त्वा स स्तु त्वा ल वं कृ त्वा ॥ तदा स न सूर्य प्र हा ना ज्ञा स मि प स्तु न ग त्वा ना ज्ञा
ह कृ त न सि ग्ना स्तु स हा ति न ॥ ना ज्ञा वाच ॥ किं नु चे द्वि त्र वि तं ॥ स ना वाच ॥ क्रमा स्वम हा ना ज्ञा पा नियम व सा मा न अ ह
तद विग न द स्तु विचा त्रि न ॥ द विग न किं का ल मे सि त ॥ त ना सर्वो षा हि न पा ना वि ॥ उ त मा ला ध से रा धि न ॥ मा न व
कृ ना स मा ग न ॥ म म उ द का र्थ मा ग न ॥ त द न न श्रा व सं धा ना र ग व ति सर्वा षा ना ग न म धि धि तं द स्तु म म द वि स स्तु षा म मा पि
हि अ च या मि त्र न मा ना ध या यी ॥ ना ज्ञा न न न ह नु ना वि न वि न म हा ना ज्ञा र म स्व म म पा त नार्थ द ह पि न म य ॥ ग म ध म प ष
द धि स त्क ना दि दं क ग हा ॥ तदा अ म न पा नियं क र्त्तु मि ॥ ०० य कृ ग न मू य ॥ किं न ना ज्ञा श्रा ह ॥ अ हा ना श्रा र्थ श्री
व सं धा ना व न व दा पि न गृ ॥ न ज्ञा ना मि ॥ ०० य कृ स र्वा त्रे पा न वे कृ त्र प क न र्द स्तु स र्व पि न म यं स न्न पा नं नु ग न म
समु द्ज न ॥ तदा ना ज्ञा चि न य नि न्ने थि दं स न नं व न क र्त्तु नु व न ज्ञा मि ॥ ना ज्ञा वाच ॥ स न व क र्त्तु नु व न ग कृ मि ॥ तदा स हा ग

॥ अर्चना ॥

॥ १११ ॥

नवको ॥ सुनावाच ॥ राजानं नरु ॥ जुवनदवाय वनाय नवा हि तारु मनुज ॥ राजावाच ॥ ये यमसु महानरु नो
नको ॥ नदा देवमाग नरु ॥ सेपाफ ॥ नरु ॥ जुव ॥ द विगन न तिष्ठति ॥ धर्मस्तु नाना पृथमा नाना मयै स्मृत ॥ देव
राजा प्रहाम न्य रागं नपाफं नदस्य विह पं कथं द विगते त्रिहि त्र कन ॥ को सावानिद सिन ॥ नरु न सर्वे हतान स
नपुच्छति ॥ राजा क ॥ कर्ह द वि रुचन न मस्तु ॥ नदासु नावाच ॥ राजन्म नाहन कथे शुक्लान दा नागो वाच ॥ अथ
परिगिरवान् पाध्या या रुव नि ॥ स नय मूर्ख राजा सहित ब्रह्म मान्द ॥ नरु ना न गत्र स मिय प्री फवान् ॥ न गो अमात
पुह ति ना यो नरु ना सर्व लागा पृथागत ॥ ति शुक्ल सवति ग लग्न मरु ना ग ला महा सर्व न व न्द ना दिके न मस्तु लेख
दूग लेप विपुच्छ न ॥ अतिग न ला न न दान पाद पिच्छ लन सस य नागो माहा पि न स न पाद वै पुद्गल स नावाच ॥ म
हा नरु पादं पुद्गल य के थ नरु विरु माह व नि ॥ नागो वाच ॥ म न पादं पुद्गल य मयान विरु मा न नागो रु पि न न पथ म स
न स पादं पुद्गल य पथा दमा पादं पुद्गल य ॥ नद के नरु ग हे नरु पुद्गल वि श्व न स न स ॥ गदा पय नि ॥ अथ वं रुक्ता कंचि

१११

द्विनाकनपत्रयामास॥पश्चादकपत्रज्माप्यप्रतिनिनाश्रुषाहत्रगन्शीवसंधानामाधयामि॥ॐ स्वाक॥नाकाउपाध्या
 यकनक्षायमनपुर्जितसनाज्ञाचूडाकनक्षत्राकाखायवसुमाकायमनगुफेनिनामास्त्रपिना॥ॐ धास्त्रोपयित्वासंसि
 नगुफउपाध्यायनवतमाधितंनाज्ञाचूडा निश्रुषाहत्रकृत्वाकाखायावसुपाहन्शीवसंधानावतकनिष्ठान्ति॥ॐ द्वाव
 नसंपूर्णसर्वप्रसूयधनयामि॥ॐ द्वाचतुर्दवीवनसूयधनीचास्त्रहस्तवतसूयचिन्तावागय॥ॐ त्रयचिन्ता॥मनक
 क्षनिवम्बननिम्बदविस्त्रसस्त्रिनागद्वानसमागता॥सिंहस्तदनमंगनार्थ॥युतिदिनचकथासिन्धुकंमप्रयीत्वादव्याज
 किनागद्वानप्राफयनिधर्मगवतुत्वावनधनिना॥ॐ कागद्वानसवनसूयसमप्रसूयवनसूयद्वानमस्तानकृत्वाति
 न्ववनसूयगता॥ॐ त्रिनागद्वानद्विमाहपितं॥ॐ द्वाविनागद्वानशीवसंधानासूत्वानागद्वानपनिष्ठामि॥ॐ द्वाचतुर्दवी
 वतसूयस्त्रहस्तचिन्ताप्रक्रियेममागपितंॐ द्वाहीत्वाचतुर्द्विस्त्रानकृत्वाद्विवतसूयमानाधितं॥ॐ द्वावनकन
 शीवसूधनाद्विचिन्तायनिवधितुष्यनंज्ञाद्वानगच्छामि॥ॐ त्रिहस्तानागद्वानमागता॥ॐ द्वाचतुर्द्विमाहानीत॥ॐ

॥ १९९२ ॥

ॐ हा ग क आ ग गा चेति वृद्धि किं माहूयिते ॥ वेद्यो वाच ॥ प्रतिप्रतिदिनं ममैव च न माहू माता महमागतत्राजगहस्य
विश्वमाचूतदविमागतोऽसिना न्यगयत्तु कृत्वा चेति तदा चेति कानागैर्जगत्वाचूतदवि विहूयितादविहूयिता
मकननवमाहू माता महवच कृत्वा त्वं विचास नार्थत्राजदानेति वृत्तिः ॥ नाहो वाच ॥ किंवकुवं ४ मममाहू माता मह
हकृत्वा चेति किं तु गता कननदसिना ४ मममाहू माता महनवर्तने ॥ ॐ नमः ॥ तदा चेति कामाकापि न ॥ चे
ति अयमदीहमाहू वनं प्रषयसि ॐ निवचनमाकर्त्तुं चेति काह ० नमः ॥ चेति काउ वाच ॥ वृद्धिनाहू ममाहू मा
ता महनरविनिदविममाहू पयसि ॐ हस्तु पुनयु कइ नंगकुह ० नमः ॥ वृद्धिकाचयु मवनगकु २ म्मीवाकु कृत्वा
गत ४ ॥ दविग्रीवसंक्षीनापुननपिचि किं न ४ चूतदविहूयिता नमः ॥ तदा श्रीवसंक्षीना वृद्धिनाहू निम्वनंगन
वात्रमूलेहूत्वा चेति कामाकापि न ॥ चेति नवनाहू पुनि २ विचात्रेनार्थमाता महविममागताहविहूयिता ० नि
० नमः ॥ १ २ गगत ४ ॥ कृता ० नि कृत्वा चेति काउ वाच ॥ नाहू नवविचात्रेनार्थविहूयिताहू मनेति वृत्ति

किं वक्तुं निवद वि विवात् नार्थं चति ह तु पु वरुं न किंचिदर्थं ना कान मामि ॥ द ॥ वाच ॥ रुद्र उ प वि ग्ध गं व
क वाच नि ग त्वा रुद्रि आ ग त्वा र सि उ प वि ग्ध गं व क वां ॥ तदा उ प त्रि ग त्वा नि म्ब द वि वि वा ला ठि रु त्वा नि षु ति रु
ड किं व त मा च ति नं ॥ द ॥ वाच ॥ रुद्र ग्री व सू ध ना तु त मा ना ध्या मि म म म न्द रा ग्ध ती अ र्घ्य पा यं न वि द्य ते ॥ क द सि पे
ये न रु तं ॥ रुद्रो वाच ॥ सा धू र म हा द वि रु र ग ति ना स ना मं रु व ति ॥ तदा अ सि न्म य य रु द्ही रु व ति न व ल धा र्थ व दि न
प न म्बु का ग्री व सू ध ना म्ब नू प न ति ॥ अ षो य रु प त्रि वा न स हि त न प क सि तं ॥ त ना नि व द वि नां रु ग व ति श्री व सू ध ना
रु द्वा रु द्वा रु द्वा मा ना रु त्वा पा दो सि स सा व दि त्वा रु ना श्रु ति पू ना रु त्वा पा दो हि त ॥ श्री द वाच ॥ रुद्र न व दानि रुद्र
खं न प ग्ध ति ॥ त व की रु का रु ग म न नि मू का दि प्रा फ रु व ति रु द्वा रु द्वा रु द न न नि म्ब द वा ग्ध म हा त वि संपूर्ण
रु व ति ॥ ना न ग रु सू व रू नू ष म य किं कि नि गाल प ति म न म रु त्वा ने व पु व द मि व स र्व ल वि संपूर्ण दि नं द वि व ल
पु सा दं द त्वा ॥ पु न न पि श्री द वाच ॥ व न् स सू ख म न रु य नां पु न नू कं म या द सि त धा न ति म्बु र हि षा नि मा नां वा नां दानि

॥ अथ ॥

॥ ११३ ॥

इदं खलु का ज्ञान पथं नि अचिन्ति न निदवा सि पा न व नि न सं स य ४ न वि ह थ । य कि द वि म हा नि धि स ह व
त ॥ अ प्र का र ए न प दं म हा का ध न धा न्य का ४ म हा ध ना म हा ल ग स प र्त्त प नि वा न के ४ ॥ ए व वा ये व ध न ति क्तः
पु श्य मा स रू ती या मा न ए वा न ना ज सं ह न ॥ व स ए न रू क न रू स पा य न ४ रू क न न ह व नि न न द डि
नि व द्वा का र्त्ता न रू व ति ॥ न द नि व द वि क्त ना ज्ज ति पू र्ण रू त्वा न म स रू त्वा ॥ य द नि व द वि स र्व स रू त्वा प ति त या नि ष्ठ ति
नि म्ब न स र्व ना ना वि चि त्त पृ ष्ठ स रि न पृ ष्ठ ति ॥ अ ग भ व ति न पा नि ष्ठ ति ॥ य द नि व द वि स र्व स रू त्वा प ति त या नि ष्ठ ति
जा व न ध र्मा वि चा ल ना र्थ स र्व जि ना व न स रू त्वा ध नि न च रू द वा व न स रू त्वा ध ति ॥ ना जा वा चे ॥ द वि क्त न व द मू ष ध ति न ॥
द वा वा च ॥ ना ज न किं पु या ज न व द स रू त्वा ध म ना ज न ति स प र्त्त रू व नि ॥ न ना ना र्हा दि क्त न ज व स रू त्वा ध ना व द वि ष्ठ
धि तु न स के न ॥ ना जा चि ना प ना वा व सि ४ धि क चू डा वि म हा न्त रू स रू त्वा ध ति न ॥ ना जा चि ना प ना र्हा
॥ नि व न नि म्ब द वि मा क्त न या मि ४ ति चि ना प ना रू त्वा च नि का मा क्त न या मि ॥ च ति का नि व व न ग र्हा र्थ ना हि मा

॥ ११३ ॥

सूनि तं॥ च नि निम्ब वनं पाफा मम वचन मिहा गच्छु सख नद वी श्री वसुंधरा नामा वत्तं धा न यामि॥ न तद्व वनं सु त्वनिम्ब
व नागिना र्थ गग निव वन पाफा उ य त्रिग स्वा द विनि वेदिना॥ द विना हा पुहि न नाग गह प ष्यति॥ द व्या नां द हि
न सर्व पु हि य ने॥ श्री व सु धा ला श्री ना ध यामि॥ ॐ त्या क ह्य वि पू न न वा च॥ च ति म म श्री व सु धा ना व न स पू र्ण एव
नि॥ श्री द वि पु सा द त्म हा ल मि संपा फ द द र्ग ना जा कू ले ग म न ए धा ज न किं रु वं ति न ग क्का मि वे नि॥ त द्ध च नं ह त्वा य
पा ग त ॥ ६॥ क ना मि ती पु टा रु त्वा ना गा स र्व वृ ना कं नि व दि तं न ना जा श्री ध्या य मा ना रु त्॥ नृ नृ ना तं न त्स र्व द र्ग
॥ ७॥ त्सा का ना गा द र्ग ना या ग नं निम्ब व नं पा फ वा न॥ निम्ब व न स र्व ना ना वि चि त्र पु ष्य रु ल मू ल सो हि त ॥ ८॥ पु ष्क न धी सु ग न्ध
वा नि स पू र्ण ना ना प कि ग न नि कू जि न ना गा म लि रु स र्व र्ण म य किं कि जा ल म लि रु स ॥ ९॥ हा द र्ग य नि पां फ ॥ न ना ना स
उ क क थं म हा ल मि पा फ ॥ १०॥ न त्त्र निम्ब व न च ति का द व्या हा पि त्वा वि चा न ना र्थ द वा ग्य उ क वा न रु व द व्या ल य स र्व ल
मि स पू र्ण एव नि॥ नृ व म व म लि रु ग त्वा नि म्ब द वि वि चा ल ॥ ११॥ र्थ ग व ॥ ना गा व च ॥ द वि म हा न मि स पा फ क थं ॥ १२॥ द द

ॐ नमो
॥ ११८ ॥

वि सर्वमं ह तान क थि न ना नाम हा सुख न ति सु ति ॥ किं चित्स मय सु कि सि ॥ ११८ ॥ कदा नाग च उद वी पा य कू नि नं के
थं क र्त्त व्वा म म ग त्वा नाग वि रु त्स रू त्वा मो न या या मि चू उ द त्व नि तं २ नि व व नं ग ॥ ११८ ॥ क था नि म्ब व नं व ग न णि संपूर्ण
धूप धू नि पू ष ॥ अ हि क प डी फ स्र ज न ना तं धि न ना ॥ न न म हा पा न के न त ॥ अ चू उ द वि द्या त मू र्खी ह व नि ॥ क दा सर्व ज
ना नि म्ब व न धा त मू र्खि पु हि ता क दा ना का म हा स रं का ता ह त गि दं शु खो प ना यि तं १ कि इ तं ग ॥ ११८ ॥ क न म्म रू पि णा फ
य त्ता मा त्ता प कू त रू हि द यं द द्वा पा नि यं क क ग ॥ ११८ ॥ व दा स प ति वि रु द द्वा का ना ह त स रं ग कू तं ॥ क दा प कू त रू नि
६ य वि रु ह कि ना हि को पू रं जे लं न पि व नी स रू नि तं १ कू नि पु रि ग कू तं कि म र्थ ॥ चू उ द वि वा च ॥ म म म शु रू म्भ
ग्री व रू म्भ ना द वि द ग नी थं ग कू मि क न वि ना धं क रं पू क त रू म्भ का च ॥ ग्री व रू म्भ व च न दे वि वि रु प म्भः क न म हा पा न
क न ग्री वां वि रु हं ति ष्वा त १ ॥ नि व च नं तु त्वा न तु ल घ मि त्वा पु न न पि कि चि इ तं ग त्वा ग दं शु क ना द द्वा ग न व क रं
कू ल पू र्ण कू त ग वं ॥ चू उ द व्वा च ॥ ग्री व रू म्भ ना द वि द न स न ग कू मि ॥ गु कू ना वा ॥ क थं च क न म हा पा न क न श्रु तं

११८

[illegible]

॥अनपान॥
॥११॥

कर्म च यद्विपुनत्रयि विहस्यति ॥ दविमार्गसि तासाकनसदसि तामसि यमर्थपूजनताद्वयतसंदसि ॥ कनमहा
पाककनकत्रेवपूजनसिद्वययुद्धकने ॥ खानपा नश्चानदकातिनेनमहा पाककनमहापूजनसियेयुद्धकला निष्ठावर्
मिद विविहस्यति ॥ पुनत्रवाच ॥ पूर्वज्ञमशुएरुगितीरुवति ॥ आरुगीनी भूतपातनेनदकातिखानपातयुद्धवति ॥
कनकालननेपूजनसिद्वयनेनमहापाककनविनी ॥ एवति ॥ रुवदर्ग ॥ मायसमूकाएवति ॥ कदनकनचूदविमात्र
पूतनेन विहस्यति ॥ दविगर्दगु कनसंदसि तममकनमहापाककश्रुवेवतिष्ठति ॥ योदववाच ॥ पूर्वलाग्ननराविना
एवतिनविस्वासहानि नसर्वज्ञाणा नपातकेचिन्नदकातिस्वगृहीतीयनेनमहापाककनतिष्ठति ॥ रुवदर्ग ॥ माय
समूकाएवति ॥ कनचूद विविहस्यति पुनत्रपि सुखिमुखहृकथित ॥ कनमहापाककनयातिष्ठाव ॥ योदववाच
॥ पूर्वज्ञमशुएरुएवति नतच्छिदवचनकृतं दाना निधर्मा नितरुत ॥ न्मादाति किंप्रयजनं बुत ॥ कर्तुं वचनमधिगुन
॥ कनमहापाककनसूचिमुखएवति ॥ रुवकथितमायसमूकाएवति ॥ कदाद्विपुनत्रयि विहस्यति दग्धकृतपापिनस
द्वयसंदसि ताकेनमहापाककनश्रुइवीरुतातिष्ठाव ॥ योदवि कनरुगनाकर्मसिगा ॥ नयथा ॥ प्रानातिष्ठत ॥

॥११॥

[illegible]

॥ ११६ ॥

[illegible]

[illegible]

॥ अत्र ती २ ॥
॥ ११७ ॥

सूक्तमदर्गनी ॥ वागीश्वरी महामक्ति ॥ गी श्री धनददा ॥ श्री रूप धनि नि सिद्ध यागी नी या ग ॥ ११७ ॥ मना हनि महा का कि
मो ल ग्य प्रिय दर्गि ती सार्थ वाह क पा द कि सर्वा था ग ता ल को ॥ च शु दा नं प्र दा ष्या मि च कु र्वे वि ह त्रि ति ॥ च तु ना थ स ल
द व न्द्र द्वि सि द्वि य दा य ति ॥ न म स्तु मु म हा दे वी सर्व स लो थ दा यि नी ॥ न म स्तु ने दि वा त्र पी च व सं धा त्र न म स्तु ने ॥ अ ष्ठा ह
न गे ने ता म त्रि का लं य ४ प ७ दि मं ॥ पा प्रा ति ति य ने सि द्वि मी मि ने सु न्या ह ने ॥ य द ह ना ल्क न पा पे दौ आ न त र्ये सू दा ॥ न
॥ ने सर्व कृ प धि ष्ठा नि स्म ता ॥ त्रा म र्द कं ॥ अथ वा सि ल स प न्न ४ स जा नि स्म त् अ ल व न् ॥ प्रिय भ द य वा क्स्व रूप वा न प्रिय दर्ग
ने ४ ॥ कृ प्रिय वि प्र कृ त पृ आ द य मू य जा य ने ॥ अं त्य कृ मि ग्वे ने पा य सं घ पा या ले ता व ने ॥ ॥ ११७ ॥
मा ष्ठा रु न ग ने व ध रु खि ने स मा फ ॥ ॥ ॐ न मा रु ग व ले आ र्थ श्री व र्ग वि दा त्रि ति ॥ न मा त त्र प या य ॥ ए वं म या क्रि य
म क सि न्ना म य रु ग वा न व र्ग पु वि ह न ति स्म ॥ सर्व स त्रि तं व र्ग म य म धि ष्ठा य व र्ग को क रु य व र्ग सा ध न प द ल ष क ॥ अ कृ य अ रु य स ल
द ट सि ने ॥ सर्व ग्रा य नि ह ने सर्व द्रा य ना जि ने ॥ सर्व स त्र वि द्रा य न क नं सर्व स ल्ना आ द न क नं सर्व वि द्या कृ व न क नं सर्व वि द्या रु रु

॥ ११७ ॥

न कनं॥ सर्वकर्मविधं सन कनं पनं कर्म विं डायन कनं॥ सर्वग्रहा दन कनं सर्वग्रह विमा कनं॥ कनं॥ सर्वरूपा कर्षे च कः
न सर्ववीद्या म कु कर्म पत्रायनः अ सिद्धा ना सिद्ध ना सिद्ध कन सिद्धा ना चा विना सन कनं॥ सर्वकर्म पुदं सर्व सत्ता नां न कृत क
न॥ भक्ति कनं एष्टि कनं सर्व सत्ता नां सु फल कनं॥ सर्व सत्ता नां मा हने क ल ० मं म कुं महा वलं॥ वृक्ष बला वा य क्रु डा वज्र पा नि
पुष्प लाषण॥ न मा न त्रय या य॥ तद्यथा॥ ॐ कुट २ पा नय २ सूट २ सूट्य २ दूर्ध २ दूर्ध पय २ सर्व सत्ता विवाधय २ स्वाधय २
यस २ ज्ञासय २ ज्ञा म २ ज्ञा मय २ सर्वरूपा नि कट २ संकट २ सर्व सत्ता न घट २ संघट २॥ सर्व विद्या वज्र २ सू नय वज्र २ कट वज्र २॥
म क वज्र २॥ वज्रा द ह स नित वज्र सु वजा य स्वाहा ह ह रु त नि स रु त नि घू न रु त नि रु त नि कू न २ वज्र विजया य स्वाहा॥ ॐ वज्र कि
ति की ना य स्वाहा॥ वज्र कट २ मट २ नट २ मा न न प्र मा न ना य स्वाहा॥ ॐ व ल २ नि व ल २ ह ल २ म न २ मा न य २ वज्र विहा न ना य स्वा
हा॥ ॐ किं द २ हि द २ महा वज्र कि ति कि ता य स्वाहा॥ ॐ व न्ध २ को ध महा कि ति कि ला य स्वाहा॥ ॐ वृत्त २ च न्द्र कि ति क त
य स्वाहा॥ ॐ प्रा ग य २ वज्र कि ति क ला य स्वाहा॥ ॐ ह ल २ वज्र ध ना य स्वाहा॥ ॐ ए ह न २ वज्र य ए न ना य स्वाहा॥ ॐ न नि ष्ट न व

[illegible]

सर्वदुष्कविनशः ॥ नमस्तुते नमस्तुते ॥ अगस्त्यपुत्रिणश्च अत्रिणश्च ॥ मुनिनं त्वागमादनच कालमुक्तिमा
दनात् ॥ तस्यामनुपुलावनविषगमुत्तिवाधयः उपदलवाविनस्तुतिनमस्तुते नमस्तुते ॥ यस्याप्यधर्यमानो योऽरु ॥ ४८ ॥
कुसुदो गूनाः वेगदः पत्रजं गुश्च नमस्तुते नमस्तुते ॥ यस्याधनको लगी वित्तनादकेनच ॥ नागानि नां कालकुसु
योतिस्तुते नमस्तुते ॥ यस्याप्यजलमानाया इष्टेष्टाश्च मानि काः देवास्ताना इष्टा नस्तुते नमस्तुते ॥ ४९ ॥
पापः केलिकानाः ॥ इष्टाग्रहाच नागश्च यद्रुक्कागु नाकसाः ॥ यः गन्धर्वः किन्नराः पिशाचा विद्युका नकाः कूजदा खक्ता
नागयानि नस्तुते नमस्तुते ॥ याविद्या कूजकाना सिद्धास्तुते कतिस्तुते ॥ कसकत्रिजया कानिष्ठि त्रत्तु नवधत्ता ॥ अग्नयः पाषाण
प्रि सर्वैरुत्तयं कति ॥ सर्वा निष्ठ निह किंच नमस्तुते नमस्तुते ॥ यस्याः गणपत्या पपसा यकच पुर्दिगं ॥ जमदग्नी दया इष्टा
स्तुतिविद्यापनमा म्पदं ॥ अथ ग्रीहगवान् वृक्षा अंगान् पुनत्रु विह ॥ एवं पुत्रत्वाया निरुंधात्रिजया विमंस्तुते ॥ याविद्या सर्ववृद्धि
सहविद्यानियुक्तिर्निता ॥ गतिता मादिनी मितुं अत्रिगाल विनास्तुते ॥ चिकित्ता मन्त्रसा यद्वाहकी युक्तं नरुखिता ॥ पूजिता मानि
जाजन्म पत्रलाप्य पदसिता ॥ सर्वसत्त्वहिगार्थे ययोग संलान्न हर्षये ॥ नमस्तु कूजनिष्ठे नमस्तुते ॥ ५० ॥

॥ ५० ॥

५२०
१२०

दग नप निह दयः कथि कलपुत्रा वा कलरहिता वा लिङ्ग वा लिङ्ग सि वाङ्ग पाग का कउ पासिका वायः कथि का र्य मास एम नुसा
धने वा विन लपुत्रा वा नाग कल गमने म्वा द गे क न गमन वा अ न वा न न व ध ना र ग व कः पूजा कलो आर्य गन प निह
दये सफ वा नाने च न मि न य ॥ ते सा कार्य नि सि ह के ना पु संग य ॥ सर्व कार्य नि सि सर्व क नि क ल ह दि च उ म्ब से वि ग ह वि वा द यः
नि ए स म न पि त य ॥ सर्व प चै ग म न ग च्चु नि ॥ दिन २ का ल मू प स्य य स फ वा नाने च न मि न य ॥ महा से रा ण्ध र व दि ॥ नाग क
न म हा पु ना की र वि षा ति ॥ अ ति ध ना र वि षा ति ॥ तु र्क य नि व द क ना थ ॥ सि डि द ॥ सा ध का ना ॥ हे न वा र ना थ रु ना त्मा रु ना
रा व न ॥ रु द्र पा र्श्व ल य रु द्र प ॥ रु द्रि या वि ना र ॥ सा सा न वा सि ना सा सि त्व र्ण ना र्म मे त्वा क रु ॥ न क प रा प्र सि ष सि डि द सि डि स वि
४ ॥ क का ल का ल ग म न ४ क ना का क न नू क वि ॥ वि न रा व रु न पु य न थ पि य ल ला चे न ॥ ७ ल पा नि ४ ख ड्ग पा नि ४ कं का
ली ध र म ना च न ॥ अ ति नू ले न वा ना थ र द या या जी नि प नि ४ ॥ ध न दा ध न हा सि च ध न वा तु नि ला न वा न ॥ ना ग हा ना
ना ग पा ण्म वा म क ग क ण ल रु ॥ का ल क पा ल मा नि च क र्म नि य ४ क ला नि धि वि ला च ना क ल न रु ४ वि सि वि च वि ला क पा रु
॥ वि न रु न न या वि रु ४ ॥ न ग नो न पि य ४ व द्का व द्क ग ख र द्वा रु व ल ध ल क ॥ रु ना ध रु ४ प गु प नि रि ४ रु क प निः

१२०

[illegible]

अनंता
१२९

अस्यायुष्माः ४००० सत्त्वनामर्थं यद्विनायसुखाय ४००० सर्वं तथा गतायुष्माः विजया नामधेयवाचयदगयपर्यावायुष्या
पत्रे लक्ष्मि विस्तरे ॥ संप्रकाशयद्विद्यायुष्मा नाम पानयति ॥ अथ खलु यस्या नार्या वलाकिन ग्वना बाधिसत्त्वामहासत्त्वः
अथासनात्कृता ग्री लिपुना सत्त्वामहा वक्तुमशक्यं वाचन ॥ इग यतु रगवानसर्वं तथा गता ॥ उद्दिष्ट विजया नामधेयवाचयदगः
यतु रगवान ॥ अथ खलु रगवानसर्वं वनिपत्र नमः पुन मवेत्ता कसमक वना किन ग्वना नाम समाधि समाप च ॥ ४००० सर्वं तथा गता
क्षीय विजया नामधेयवाचयदग ॥ कुं नमः रगवानसर्वं वलायुष्मा यवक्षय नमः ॥ नयथा ॥ कुं कुं कुं कुं गमाधय शवि
गमाधय २ अस्मसमक ॥ वलासत्त्वामहा गतिगगनसत्त्वामहा विगुद्ध उद्दिष्ट विजयाय निगुद्ध ॥ अतिरिक्तं कुं ४००० सर्वं तथा गता ॥
सुगमवत्रवचनम् गति पकेर्महासमक पदे ॥ कुं आ ४००० २ आ ४००० संक्षान्ति गमाधय शवि गमाधय २ गगनसत्त्वामहा विगुद्ध उद्दिष्टः
प्रविजयाय निगुद्ध सत्त्वामहा नमि संवादिन ॥ सर्वं तथा गता वलाकिनि ॥ घद्या नमि नापनिपुनिनि ॥ सर्वं तथा गता माता दग रमा
प्रतिष्ठितं सर्वं तथा गता हृदयाधिष्ठितं ॥ कुं मूढ २ महा मूढ ॥ वज्रकायसंरुत नपनि मूढ ॥ सर्वं कर्मावनत विगुद्ध ॥ प्रतिनि

पं२पं

वलेयममा पूर्वगुह ॥ सर्वतथागतसमयाधिष्ठानाधिष्ठित ॥ ॐ मुनिश्च महा मुनि विमुनि मनिश्च महा मनि ॥ यमनिसूयति
नथगहनकाटिपनिगुह ॥ निसूयवृद्धिगुह ॥ हं हा जयश्च विजयश्च स्मरश्च स्मरश्च स्मरश्च सर्वमूढा ॥ मधिनधिष्ठित
॥ ॐ गुहश्च वृद्धश्च वनेश्च महा वनवनेगर्क ॥ विजयगर्क वज्रका लागर्क विजयगर्क ॥ वज्रसंलव वज्रिनि ॥ वज्रसंलव वज्रममः
जनिस्तं सर्वस्वनाचकापपनिगुह ॥ लवगुमम सर्वगतिपनिगुह ॥ मम सर्वतथागतो माममास्वासयनु ॥ ॐ वृद्धश्च
॥ १ वीधयश्च विवाधयश्च माचयश्च विमाचयश्च ॥ २ अधयश्च वि ॥ ३ अधयश्च समको ॥ ४ माचयश्च समकत्रिभयनिगुह सर्वत
॥ ५ गहनहृदयाधिष्ठित ॥ ॥ ॐ मूढश्च महा मूढ महा मूढा मनुपदस्वाहा ॥ ॥ ० यसाकृतपुरुसर्वतथागतापीषविजयोना
मक्षत्रनिमृष्टदं कुरुनापीषमयविनासिनि ॥ तीरिवलोहजपुष्टपुष्टनयुवा ॥ कचिध्वेयम ॥ ॥ कर्ममामित्यसक्त
पुष्टमपुष्टमूढा ॥ लात्रोपुष्टां कुरुनापीषमयविनासिनि ॥ तीरिवलोहजपुष्टपुष्टनयुवा ॥ कचिध्वेयम ॥ ॥ कर्ममामित्यसक्त
नामक्षत्रनि ॥ वाचस्वाके इर्वज्रननचेत्यमूर्तिमर्चयेत् ॥ यस्यैवैतन्नेदिनायुः ४ सप्त ॥ ४ पुष्टागमिषाति ॥ ० दमवाचह
गवाताहमना शौर्यवसाकिनेयनावाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ साचसर्वावतिपर्वत्सद्वमान्वासूनयत्ताकारुगवताहखित

अनली १२२

मत्तनन्दनिति ॥ आर्याहीयविजयानामभनति पत्रिसमाफक्ष ॥ ० ॥ ॐ नमो रगवत्ये आर्यपत्तुसवनीतानय
॥ ॐ नमो अमिताभयमनथागनायाहनसम्यक्वक्षाय ॥ नमो धर्मीय ॥ नमो सहास्रमयाफाय ॥ वामनेरणमस्यमि
त्यो नमो सावामन ॥ रगवति पिग्मविपत्तुर्वैसे निपासय नगुधनिशियानि कानि द्रुयान्पयत् ॥ यानि कानि चिन्मेहा
मायकचिइपडवा ॥ सवृषावाउत्पद्यन् ॥ सर्वाणि नानि वालन ॥ वात्पयन् ॥ ननपदि रसुदननस्ये नमस्तवचनेन ॥ र
गजज ॥ ५ ॥ ४ ॥ पति ॥ गविष्टि ते मनुपदेर्मम सर्वसत्वाय नरु कनपनिग्रहं कुरु गभनिस्वस्यय नद ॥ ५ ॥ पतिहानगमुप
निहानं विखरव नं कुरु ॥ अग्नि पतिहानकन उदकपतिहानं ॥ कार्वा द्देदते कुरु ग्री माव न्ने न कुरु ॥ नयथा ॥ ॐ अमरा
ब्रह्म गहव ॥ अमिताभसंरुवक्षस्व सु अस्तु ॥ गमागुन १ मासन २ ॥ गमपुगमसर्वा कालमत्युनपगमसर्वन ३ ॥ गगुहदावा नप
समसर्वद ॥ ४ ॥ ५ ॥ अपसमरुवनि पिग्मविपत्तुसर्वनि ॥ ६ ॥ ७ ॥ विगुन्न १ गुन २ ॥ गमनसाहा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
गिपूकमिस्वाहा ॥ ॐ नमो रगवत्यानां रगवति पिग्मविपत्तुगवति स्वाहा ॥ ॐ पिग्मविपत्तुगवति श्रीरुरु पिग्मपिस्वाचि

१२२

स्वाहा ॥ श्रीपर्वसवनिमहामात्रिपुसमनिनाम अननिसमाप्त ॥ ॥ ॐ नमो रगवले श्रीयमानिच्ये ॥ एवमयाग
नम कसि नमय रगवानग्रवणा विह ननिम ॥ अतव न २ नाथ पितु दसा नाम महग हिरु स धन साध मर्दु यादग हिरु
सने १ सर्व इले थवाधिसले महा सले ॥ मय रव न रगवान हिरुनाम नु यरु ॥ अस्मि हिरु वामात्रिचि नाम दवना सासुर्या व तुम
सा १ पुन ना नग च ति ॥ सा न दग्ध न न ग धू न ॥ न व धू न न वि नू धू न ॥ न म रव न न म धू न ॥ न द धू न न द धू न ॥ स ह विरु
वामात्रिने र व नाया नाम गो नामि ॥ अहमपिन दग्ध न न ग धू न ॥ न व धू न म रव ॥ न म धू न द धू न द धू न ॥ तयथा ॥ ॐ प य क
म्यसि ॥ पना कर्मसि उ द य मसि चि न म सी च कर्मसि म कर्मसि ति व म सी गु त्मसि मे च व न मसि म हा चि व न मसि अ न धी न
मसि स्वाहा ॥ ॐ मा ति चि दे व न प थ मा अ प उ त्प थ मा अ प य ॥ ना न कू न ना मा अ प य ॥ हा सि रु या मा अ प य ॥ चो न रु या मा ॥
अ प य ॥ उ द क रु या मा अ प य ॥ अ ग्नि रु या मा अ प य ॥ पृ थ क मि तु रु या मा अ प य ॥ अ वू न पृ थ ना वू न पृ ॥ मू
र्त्ति न पु अ मूर्त्ति न पु सि रु ना म न रु ना ग ना मा ल रु ॥ सर्व ना म न रु रु यथा ॥ ॐ ला ला ला म च ला स ल मूर्त्ति नि न रु म म स
र्व नि ला न स सर्व सत्वा ना व सर्व रु म पु द व रु स्वाहा ॥ ॐ न मा न त रु या म ॥ ॐ रग व ले श्रीय मानिच्ये नम ॥ ॐ व न न व रु

धननी १२३

निवेदनि २ वना निवनाहमस्ति सर्व इच्छां यज्ञं मुखं वन्द्यताम् ॥

॥ अर्थमा निन्दी नाम धननि यति सभा क १ ॥

॥ ॐ नमो ह्यगव्ये कार्यगृहमाह्वये ॥ एवं मया सुकर्म कस्य नमय ह्यगवा ने उ कवत्पां महानगया
स्तव देवनागय ह्यगवत्पां सुनगवत्पां किन्तु नमो नगमा देवत्पां मया नदि दृष्टं वृहस्पतिगुत्पां नित्यनादि नो इकपु
ति नष्टा विसेति नष्टादि किन्तु यमा नामा महावसमया तद्गुत्पां नावा हा विष्णुनादि दित्तिं हासन न विहन्ति स्म ॥ अने
के वेधिसत्त्व सत्त्व सत्त्व सत्त्व ॥ नयथा ॥ वज्र योनि नाच वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र मति नाच वाधिसत्त्व महा सत्त्व न
वज्र चन्द्र नाच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व ॥ वज्र विह नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र सने नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व
न ॥ वज्र विनायक नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र वापह नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र विकृति नच नाम
वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र धिय नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र तद्गुत्पां नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ वज्र वि
क्रम नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ ध्याति वज्र नच नाम वाधिसत्त्व नमो सत्त्व न ॥ अथ ताकि नच नाम वाधिसत्त्व

१२३

न॥ ला कशी या नाच नाम वाधिसुत्त नमहासुत्त न॥ विकसित वक्त्रे ॥ च नाम वाधिसुत्त नमहासुत्त न॥ पद्म नयने ॥ च नाम वा
धिसुत्त नमहासुत्त न॥ मरीची नच नाम वाधिसुत्त नमहासुत्त न॥ मेढी य नाच नाम वाधिसुत्त नमहासुत्त न॥ एव
प मूषे महा वाधिसुत्त ग ग सहस्रे ॥ गार्ध पत्रि वरु ॥ पुत्र सु गार्ग वा ॥ धर्म द ग यति स्म ॥ आ दो क त्या न ॥ क त्या ने प
थी व सा न क क त्या न स्व र्थ सु वि ज न के व त प त्रि पू ॥ प त्रि गु ष्ठ प र्य व द नं व म च र्य स पु का ग यति स्म ॥ अ थ त्रु ग वा
न चि क्ता म नि म हा ॥ ब्रु हा तं का नं ना म ध र्म प र्य यो दे ग यति स्म ॥ अ थ ख त्र व ज पा नि र्वा धि स त्वा म हा स त्वा रु त्प र्थ म पु त
म व ॥ स ना इ त्वा य स ज्ज्ञा धि ष्ठा न न र्ग व क्त्र मे न क स न ॥ इ त्वा मु व द कि नि रु त्प न म पु त्त ना नि व य स ग र् ॥ प र्य
हू मा मु ष्ठी त या न त्प र्थ म पु त्त म व ला व व ग जी लि स ह द य पु नि ष्ठा य र्ग व क्त्र मे न द वा च न ॥ गृ हा थ ह ग व ने य म उ ग
न पा थ त्री ड पा थ कु ना ॥ कु न न पा थ स त्वा थ वि ह ० य नि क क त्वा कि न्वा ॥ म प ह न कि ॥ क त्वा थि उ प ड वा धि कु र्व नि ॥
क षा वि दी य का ना स त्वा ना म त्या य ष ॥ कु र्व नि ॥ क षा वि ग ग हा ना थ कु र्व नि ॥ ए व सर्व स त्वा नू प ड व न वा ह य कि ॥

अत्र १२५

तद्गगयतुलगवंधर्मपयीयं॥यनसर्वसत्वाःसर्वयिडवत्पानत्राहविषानि॥रुगवानाह॥साधुसाधुवगपा॥यस्वसर्व
सत्वा नामार्थयहिनायसुखायकृपाचिरुमेत्याये॥महागुह्यानिउद्धृतत्रदिद्येपुंजैथैजोयैतथागतंसम्यक्वृद्धयनिपु
तुसि॥तच्छूनसाधुसाधुसुतुष्टुमनसि कृत्रुगपिषाहं॥अहं नामग्रहपा नां कृत्रुतिरिषतमृखानांमहागुह्यानिगुह्यत
नदिवपूजाकृपायैकजथाकर्मवर्तुदनसर्वपांयथागुह्यानिगुह्या॥पूजिताःपुतिपुष्टेननिर्दिहकवमानिगाः
॥देव्याःश्रुपासूनाःशिवकिननाथमहानगमः॥यथाश्रुताःसाधुवामानपाः॥शिवमानुषाःसमयतिचक्रमथमहा
नगुह्यतजसाः॥तस्मात्पुजापुदरुमिमनुष्यापिमथाकुम्भं॥अथखलुलगवानां॥गामूनिःसम्यक्वृद्धः॥हृदयाकन्या
विक्रिष्टिगं नामनगिजालनिश्चयगुह्यानामदिपुवेगयतिस्तः॥अथनहृत्तदवसर्वगुह्यादिनादयोक्तुमलगवेक
गामूनिनगमंमम्यक्वृद्धदिवपूजापिः॥एतदित्यापुनम्यकृत्वागानिपुनाहृत्वालगवेकमददवाचन॥अनृणहिताः
धुलगवतासम्यक्वृद्धन॥तदिगुलगवकाहृगधर्मपयीययनवयसनाग्रीहृत्तसधर्मणनकैसा नैशो बुध्याम

१२५

गुफि पत्रिणां पत्रिणां पत्रिणां भुक्तिं स्वस्वयनद्रव्य निहातसमुपनिहात विषयश्च नासं तं सिमां च भुक्त्वा न विवर्धये
कुर्यात् ॥ इति साके मुनिस्तथा गता हं सम्यक् ब्रह्म ग्रह नाम कुपुत्राश्च लघुनिस्तुं मद्यात्को येनो स्यात् सितां सर्वे ॐ न क
प्र कूमा नाय स्वाहा ॐ वृक्ष य स्वाहा ॐ लोभ य स्वाहा ॐ असूत्रा रु मा य स्वाहा ॐ रुक्म वस्त्रि य स्वाहा ॐ जर्म न प्रिया य स्वा
हा ॐ क्रान्तिक न वे स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ मानि वज्र पा नि न वे ग्रहा ॐ मनु ह दे या पठि तं सिद्धानि ॥ यथा नू कु म व र्त्तु न दिग्म
क्षेत्र गन्ध मालु लं कं प म म ॥ च पु न सं च पु न द्वा तं च गु ला न ॥ सा हि तं ॥ कू तां गा न च कु स म न्वि तं क र्त्त व ॥ त म्भ स्मि त क
म ना प त्रि कू म ग म्भ म लु ल कं ॥ द्वा द श भु न पु मा न चि क य हा क्त्र त्र क व र्ध स ह म्भ सूर्य स म ग्ना मा नि न ना प स त्र प थ
धन पु शा णा सि त क म ल धनं हि र न व र्त्त स म ग्ना मा ति न वि ग्र ह ॥ अ स्य द य त्रि त हा ग नं कू ड नू ध प ॥ म द्या का ना यः
आ दि णा य क्षा ति क्त न वे स्वा हा ॥ ॥ पूर्व स्वा दि स्त्री त क्त क म ना प त्रि प्रिय गु ग म्भ म लु ल कं सा मा वा म्भ न ॥ ० ॥ ति रु
य ॥ ॥ ॥ न व र्त्तु त म क् ध ना गु र द य ॥ अ क्त सूर्य क म लु ल धनं कू म लु पृ णा व स क ॥ अ स्य ला ग न घृ णा द नं ॥ सि वी

अत्र १२५

सधूपे॥ ॐ चन्द्रामृतविक्रमायसीगावस्वाहा॥
ले॥ ॐ कंठकवर्धनं त्रिमकुनिगकिधन॥ वनदहसं॥ लाजनमस्त्यमान्तरकः॥ गुणोदनवां॥ गुणत्रधूपे॥ त्रकाष्टनसा
कलकृमात्रायसा॥
॥ पथिमायादिगिन्नकपेयापत्रिकर्का॥ गुणत्रगन्धमगुलकेवृक्षचारीवृक्ष॥ लादिनवभूषण
कोष्टनैसौवैलेकेमात्रायेस्वाहा॥ त्रकस्त्यगु॥ अकस्त्यकमगुत्रधन॥ लाजनमस्त्यमंगमाषकस्तन॥ धूपोगन्धनस॥ ॐ
श्रीनागपुत्रसुपिवर्धयकषायसाहा॥
॥ उलेत्रसादिगिन्नकमसापत्रिदवदानगन्धमगुलकेगुत्र॥ पत्रि
त्रकगुत्र॥ त्रफकाकेनवर्ध॥ त्रकस्त्यगु॥ अकस्त्यकमगुत्रधन॥ अस्त्यदयंदधिरुकादनंक्रिन्नसा॥ सधूपे॥ ॐ नो
दिनवर्धनिर्जमायविहसतलागमायसाहा॥
॥ अस्त्यमादिगिन्नकपेयापत्रिचन्द्रनगन्धमगुलकेगुत्र॥ ॐ पामप
अत्रि॥ ॐ किलवर्धभवनालाजनामकुटाकस्त्यकमगुत्रधन॥ अस्त्यदयंदधिरुकादनंक्रिन्नसा॥ सधूपे॥ ॐ नमः॥ ॐ
पनयस्त्रात्मायगुनहस्वाहा॥
॥ नेमृत्सादिगिन्नकपेयापत्रिचन्द्रनगन्धमगुलके॥ गनिअन॥ ॐ

॥ दक्रिनसादिगिन्नकमसापत्रिचन्द्रनगन्धमगुलकेरिद्रुमग
॥ उलेत्रसादिगिन्नकमसापत्रिदवदानगन्धमगुलकेगुत्र॥ पत्रि
॥ अस्त्यमादिगिन्नकपेयापत्रिचन्द्रनगन्धमगुलकेगुत्र॥ ॐ पामप
॥ नेमृत्सादिगिन्नकपेयापत्रिचन्द्रनगन्धमगुलके॥ गनिअन॥ ॐ

१२५

॥ १ ॥ रूप न का ह्यः ॥ नित नं पि न त्र ग म क न न क ग म ॥ १ ॥ अक्षरं यद्विनि का धनं रं जन म त्स्या मा ष रं क क स न ॥ ४ ॥ धृ ण ग न्ध
न स ॥ १ ॥ ॐ ग नि श्च ना य क र्क व र्ण य क र्क य क स्वा हा ॥ ॥ वा य वा दि गि न कां लो जा प नि त ग त पा नि ग न्ध म तु ल के ॥ का
य त्रि का ना र्क ॥ ना जा व र्क व र्ण नित न र्ध दे ह ने वि त्र थ र्था न क लो च न यू ण ड पु क ला स र कू ति कू क तं त्वा ॥ १ ॥ पंच व र्ण
म द्य म ॥ १ ॥ न न तु जा णो च त्र सूर्य क त्र ति न य सि ॥ १ ॥ अ स ॥ १ ॥ य मा ष मि ष लो जन ॥ गि त कू ग त्र वा वि व र्ण धृ प ॥ १ ॥ ॐ न मा वि
कू क व का य नू धि ना न ना हा र्ग म ॥ १ ॥ न स नि ला य अ म न प्रि या य स्वा हा ॥ ॥ न ग न्धा दि सि न क स त्र नू हा प नि पि
का ग न्ध म तु ल के वा तु ल क तु ल व र्ण ॥ १ ॥ धृ स व र्ण ॥ १ ॥ कू ना र्क ति ना ग कू ति स्व पू कू ल ॥ १ ॥ अ स ॥ १ ॥ न न दृ ग तु ल के स कू न
स धृ प ॥ १ ॥ ॐ न मा धृ मा र्क व र्ण स नि ला य धृ ति स्व त व स्वा हा ॥ ॥ म तु ल पूर्व द्वा त वृ धा त ग वा न ॥ १ ॥ द क्रि ॥ १ ॥ द न व
व ज षा नि प श्चि द्वा न लो क ना र्थ ॥ १ ॥ उ र न द्वा न म श ॥ १ ॥ कू मा ल ॥ १ ॥ पूर्व कू न क ॥ १ ॥ सर्व ग्र ॥ १ ॥ पूर्व द क्रि न को ॥ १ ॥ सर्व न कू या ॥ १ ॥
द क्रि न प श्चि का न स वा प ड वा ॥ १ ॥ प श्चि म उ र क न र द्वा त्रि का म हा द वि ॥ १ ॥ र ग नी ला नू न प्रि म र्वा पु नि मू ख नि न व र्ण ॥ १ ॥

५५३१०२
१२६

सुदयनयाख्या नमूनादकिं॥ वृत्तिसंज्ञां वामपद्मवामधना॥ नत्तम कृतिनिवर्तपर्यङ्गापनिष्ठावडासनसमाहिना॥
 पादगवर्षाकानां सङ्कीर्णकालरूपिणा॥ मधुलपूर्वज्ञानवाधधननायुसादधिरुक्॥ दक्षिणविनूधकस्यदधिमाखरुक्॥
 ॥ पश्चिमविनूपाकसाग्रीवरुक्॥ उत्तरदक्षवत्रस्यदधिमाधरुक्॥ सिन्धुलसमन्तं॥ यथा नूकर्मवर्तुलदनेपृष्ठादिपूजाकर
 वा॥ पृथिव्यदिपादये॥ घृतेमधुस्योगखपूतयेत्तापचपुकिष्णाधीदये॥ सर्वेषामेखां यथादयमिति॥ नवेवर्तुलदुगाः
 सनमूडाचिद्रानिरुवकिं॥ ॐ नमः सर्वतथागतयोः सर्वगपनिपूतकृत्यः सर्वथा रुक्मिणस्वाहा॥ नत्तययमामं॥ पृथ
 कजपार्त्त॥ सफसफसुमन्तुमनुमकसः॥ नवपूजितासर्वगृहाविविधनूपितेदका निविपूतान्तागमत्सोरा॥ गम्भीरेयत्य
 वि॥ ॐ मानिकपति नवगृहानामनुद्वेदयोनिपथिगसिद्धिनि यथा नूकर्मवर्तुलदनेगम्भीरेयत्य
 लिपुमानमधुलसमक्षपूजयित्वाति॥ तामुपस्ययनूपादिरुजनेन॥ अर्घ्यदत्ताञ्जलान्सलवानमनुजपन्॥ प
 र्वात्पूजयेत्॥ वज्रपादो गृहमोहकानामक्षत्रक्षिप्तकपदतिस्फुरवानानुवा॥ त्रेयिगव्यानि॥ कृतस्ते गृहा आदित्योदयानक्षत्र
 उपिर्लोकनिष्ठाकिं॥ सर्वगृहोदादिदाग्नाचपिष्ठाकिं॥ जगद्यष्टादिद्यायुषोरुवकिं॥ यथा खनूतः॥ वज्रपादेति लिङ्गनिवा उत्प

925

गकोपापि कावा॥ अनेकयासत्त्वगतिकया॥ यत्वाकं पूर्णनिपतिष्ठाकि॥ ननु अकानमस्तु नाकालकनिष्ठाति॥ यच्च
खनूपूनः वज्रपातग्रहमा॥ तुल्यमध्वपूजयित्वा दिनदिनवाचयिष्ठाति॥ तत्तत्सुधर्मज्ञानेकस्य सर्वग्रहासर्वसर्वाः
अपनिपुत्रिष्ठाति॥ तत्कलादपिदात्रिडात्रागयिष्ठाति॥ अथ खनूपूजगमाकमूनिस्तथागतपूजनपिश्रहमास्तुका नामध्वन
मीमनुपदनिहाखेतिस्म॥ ॐ नमो नमो ज्ञयाय॥ नमो ध्याय॥ नमो धर्माय॥ नमो सधाय॥ नमो वज्रधना॥ पद्मधनाय॥ नमो कु
मानाय नमो नमो सर्वग्रहसर्वगभपनिपुनकाता॥ नमो ननुना॥ नमो द्वादशीनासिना॥ नमो सर्वापडवाना॥ तेषां
ॐ कृष्णं वज्रं यक्षं सनं पेशनं सनं १ कुंठं १ कुंठयं १ मनं १ मानयं १ मर्दयं १ द्यौयं १ मम सर्वसत्त्वा नाच सर्वविष्ठा
नक्षत्रयैः १ लिङ्गं १ सर्ववीथ्यान्नासयकनं १ मम सपनिवानास सर्वसत्त्वा नाच कार्यकपयं १ सर्वपापानिमम सपनिवानास
मेकं १ दातृं १ दापयं १ द्रुतं दर्शयामो हवन्ति त्रैकं १ मम सर्वसत्त्वा नाच सर्वनकद्वगहपिडा निवानयं १ रुगवतिर्सेय कुत्र
महामायाय साधयं १ सर्वइका नासयं १ सर्वपापानिमम सपनिवानास सर्वसत्त्वा नाच चन्द्रं १ चन्द्रति १ तुत्रं १ चन्द्रं १ मम
१ मूर्ध्नि हवा हव हवा हव उग्रं नपुपूननये १ रुगवति मना नर्थमम सपनिवानास सर्वसत्त्वा नाच सर्वतथागता विष्ठा नाविष्ठा

अनन्तर
१२७

ॐ समय स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ इ स्वाहा ॥ क्रि स्वाहा ॥ धू स्वाहा ॥ धी स्वाहा ॥ ॐ आदिप्राय स्वाहा ॥ ॐ सामाय स्वाहा ॥ ॐ अनन्तराय स्वाहा
॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा ॥ ॐ हंसय स्वाहा ॥ ॐ उ कोय स्वाहा ॥ ॐ ग निश्व ना स्वाहा ॥ ॐ नाइ वे स्वाहा ॥ ॐ क क वे स्वाहा ॥ ॐ वृक्षाय
स्वाहा ॥ ॐ वज्र पाथय स्वाहा ॥ ॐ मध नाय स्वाहा ॥ ॐ मो नाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वग्रह ना स्वाहा ॥ ॐ सर्वनक्रा स्वाहा ॥ ॐ सर्वपुडवा
ना स्वाहा ॥ ॐ रगवये स्वाहा ॥ ॐ छादग नासिना स्वाहा ॥ ॐ सर्वविश्वे ई ई ई ई ई स्वाहा ॥ ॐ मानि वज्रपाथमनुपदानि गरुमाह
कानाम अनन्तर ॥ ॐ कार्त्तिक मास सुकल्पक सफ मिमात्र ४ पाषाणिका रत्ना ॥ याच तु दसिग्रहन कृत्वा नमस्तु समे ॥
पूजित्वा दिन दिन सफ वा नान चान मित्रवा ॥ तत् ४ पू र्त्तिमासां महाना तु पूजां कृत्वा ॥ अहो ना तु वाचयेत् ॥ महाना तु
पूजा कृत्वा ॥ तस्मिन्नेन व निवसानि अत्रि मरु रुय रुविष्यति ॥ उ कोपो डं यु हन कृत्वा पीठा रुय न रुविष्यति ॥ ना
को मा नी गानि सो ना रुविष्यति ॥ द व पुत्रा सह गे रुवेति ॥ सर्वग्रह पूजितो य रुविष्यति ॥ सर्वग्रह रु पिने वनदास्यति ॥
अथ न सर्वग्रह ४ साधु रग व निरि कृत्वा पुन मा कर्हि ना अ रुवेति ॥ ॐ दम वाचयेत् ग वी ना रु मनो सु
बहि रू व रु च वी वि सु त्वा मह सत्वा ४ सा च सर्वा व नि प ध न्म द व मा नू षा सु न ग न्ठ कि न ने महान ग ग न्ध र्ब शु लो को रुग

१२७

वकाहखितं मत्प नंदत्रिति॥

॥ नार्यग्रहमाह कानामध्वनशीसमाफ॥

ॐ

॥ कुंनमा॥ श्रीनाहव॥ ॥ ॥ ॥

मया यत् नमकस्मिन् समय रगवान नृत्तक वत्सो महान गयी मन कदव नागयक्रग न्धवा सून गन्तु किन्नर महान ग
॥ पस्माना दि त्प सामा गी न वृधृ हस्य ग कल सन्निधे नाहक गुहिन क्का विसति हि धन क्रुगदिहि ॥ १७ ॥ यमान महावग
समयो लंका नाधिस्त्वा नाधिस्त्वा गसिहोसन विह्रति स्म ॥ अनाक वाधिसत्त्व गत सहस्रै साई ॥ गय धा ॥ मेयी यवाधि
सत्त्व महासत्त्व न ॥ ७ ॥ वं प्रमृष्टे महा वाधिसत्त्व गत सहस्रै ॥ १८ ॥ पत्रिह न ॥ पुन रुचा धर्मद गयति स्म ॥ नाह नीरु सून ह्यः
कवा मरु मद्यवर्त्त गगल मंगमं ग ॥ १९ ॥ गोरव नृप धालं नीता गी नाह विरुत मुख नत्त न प्रकु ध्यात् ॥ निनाह काट
नृपका ति नसन सीता ॥ २० ॥ तिख मम ध्व कग नाहा नोडा स्य नृपा नविग सिसुग निती सहासन रु ॥ २१ ॥ नाह नम सडह
नृ ॥ २२ ॥ का नरु त्रिमी संति नः रु र्ध्व वर्त्त ॥ २३ ॥ गोरि न ॥ २४ ॥ नाह वसिंह सून य ब्रम न प्रियाय क्का म्ब न दवताय ॥
रु र्ध्व वास रु र्ध्व धूप रु र्ध्व ग न्ध र्ध्व विरुत रु र्ध्व य ॥ २५ ॥ पीया यग न नथ समा न्द्र दाय दव नवन ग न्ध वी सून वृं रु रु किन

अत्रगी॥
१२८

किननसहिगायत्रवतत्रहगवनूजमानस्यममहिगार्थं ॐ ह्युहम ७ त्रमध्वनू प्रपिग्धयस्य क्रियते चितिकननाम
निकनोनाहसससाधयाथगीवजपा ॥ १२८ ॥ हगवननाहवसिहसूतेनममनपीयनकृनिग्धवतदवतेन
॥ सर्वसत्वस्य अयुत्राग्धनागमदिगमनिरुवकिसम ॥ सत्त्वानाविरु ० यनिसम ॥ उषडवकिसम ॥ कखाकिडयमधर्हकिसम
॥ कखाकिड्या ॥ मयहननिसम ॥ ॥ ॐ नाहवयत्रे विंगगिहसं यं खेगैरुं कौयं उं हं यौ कं लं कं गं यं हं हौ कं तां यं
चवं सर्वसत्त्वानामुपड ॥ वाहयनिसम ॥ तद्गयउहगवनधर्मपय्यायं यं सर्वसत्त्वानानको हवकिसम ॥
ॐ नाहवयत्रे विससिहस्ययखड्गहृत् कायउधपीगनकगभयहृत् कौह्वेननायसर्वहमननय ॥ पूर्वनागसाकाय
नमानम ४ नाहदवकाय ॥ गमकीहवकुमसर्वकावातजापितनागम ॥ त्रपागकेनिरुकासर्वनागनासाकिरुव
कुमर्वका ॥ ॥ उरुनदिगिससिहस्य ॥ नाहवससनिह ॥ अमिरुपियायनाहवससिहस्य ॥ उपसाकयन ॥ ॐ हमव
वहगवनकचवजपा ॥ दयमयनमनिति ॥ ॥ आर्यनाहवग्रहगाकीउडवनामक्षनसिपनिसनोफ ॥

१२८

कुं नमः श्रीर्यक नवे ॥ अवमयाग्र नमः कस्मिन्समय एगवान् यत्र वस्यो देव नाग यक्र गन्धर्वी गन गन्धर्वी सुनगत्र
उकि ननमहा नगम अयस्मा नादि यसा क्ता स्वध्वरह सुतिगुक्त गनिध्वननाइं कठु हि नम्य विगति नक्र नादि हि ॥ अ
नक कोधिसत्ता दिविह न कि धर्मा र ग य नि स्म ॥ अथ वरुणा ॥ अनाथा यरु ब क्रम न द वा च न ॥ गहा अ क ठु र ए न नो
डा न ड न पा य क्ता कू त कू न शि ग य सत्ता म त्वे न विरु थ य नि ॥ उप ड अ न कि क पा चि ड य म प ह न कि पा न म प ह न कि
अव सर्व सत्ता ना मू प ड व त ह न न धर्मा र ग य नि स्म ॥ ५० ॥ एगवाना ह ॥ साधु साधु वरुणा ॥ स प च ग न सि धु र
रा खि य ह न के क ठु ग हा र ग य नि स्म ॥ ५० ॥ क न व क स स ता य का न पा म व ग ह ला य वि क्ता कू त क व ना य ॥
धु म् वा स धु म् पृ ष्ठ धु म् दि प ग ल्ध धु म् य हा पु वि न्नी या य धु म् न थ स मा नू टा य र व ना न व व क्ता ॥ उ कि नी
महि ना य अ व न न ह व न सर्व सत्ता ना हि ना र्थ य ठे द ग ह म पु ल म धी म ध्य पु वि ग न म्पा नि क नो ग्ना नि पू लि कू र ह
व ठे ना ना चि क वि चि रु सो हि न ध ना व सा ग मा ह्नि ग न ह्ना सा धु न च र्मा म पा ग वि धु न च र्मा म वि धान वि क्ता म्पू र

॥ ध्यानपीठः ॥
॥ ११७ ॥

विधु तव गुनिसितामसि ४ धुमाधु सधुत्री न्य सदृशधुमा हवर्ध्ववपुः कुरु कारिण्यमगमे नी नपुण्य यदुषागता ४
कगवका ससूनाय खक्र पास हस्राये खग कूल दवता यजमान सश्रा यत्रा नागं सपदं ॥ वज्रपाया हवः
मावस निरुपयानिके कवनमशा सा कानाहिरा थय ना ना लो गसर्व बाधिवि नासयत् ॥ ग्रहं ग्रह गवत् नो डा नो डन
पाय्य कृता कृतचिगाथने सत्ता नाते विरुथ यति स्म ४ ॥ शक्रा हात्र कि डय मपहृत् स्म ॥ कलाचित्पान मपहन कि स्म । क
खाविर्दी प्य पसत्ता मल्ल य कूवति स्म ॥ नवं सर्व सत्त्वानां मपड वत बाह्यति स्म ॥ पुनत्रपि न वय हा दिव
दगना सवापड जघ् ॥ कुं वृक्ष २ मृद २ वज्रपक्ष २ गत्र २ पुसे न २ सात्र २ कोटय २ सर्व विष्णान कृत् २ मम कर्ण चिन्द य २ स
वृक्षान कृपय २ सा क २ दापय २ कुत दगया न्मात्र न कृ २ मां सर्व सत्त्वानां के सर्व ग्रह न कृ यि जो हेयति वा दय ॥ हगवति मः
हामाय पुसाधय सर्व इष्टान् ॥ अथ सर्व पावत २ चतुनि २ तुन २ सुम २ मूके २ हवा हव हवा हव उगा उग्र कप हगवति
सर्व सत्त्वानां के मना नथ पत्रिपुत्र य सर्व नथ ग न सम य भिष्टि क सम य स्वाहा ॥ ०० दं म वाचत् हग वा ना त म ना व

॥ १२७ ॥

वज्रपातिमरणनदन्निनि॥ आर्यकपुग्रहगंगा नामध्वनिपनिममाफा॥

॥ ॐ नमो विद्या क का य ॥ विद्या क कम

हविनयेताकविद्युहकात्रिगिरिसिपि॥ आदिकगसमात्रचोडावजपचकपात्रमेतिनंतिनवर्गगुस्वहिनैगजागिदि

पनस्थं पद्मलपिनिनाचनं नत्रजिह्वाउन्ननं॥ नागकपुत्ररुषिगं नानात्रत्वमनिमालागव्यदीव्यपद्मतिगंसर्वनजनस

मृकं॥ षट्पदधननाथंदहितकर्त्तृदं वत्रमहामादाजागनं वामखखाप्रपायुचवजसूत्रपासधनं॥ हस्तिमध्वनपा

दशानिदोषपादयुगं॥ हस्तिचर्मसुसालववाद्युचर्मकटिरधं॥ हा नाधहाननागचर्मगुप्ताहिनैदक्षितदिगस्तुर्थसर्व

सत्त्वउक्षत्रनंगीताचार्यगथासकं॥ इत्यनासेनसूतं॥ अद्विसिद्धिप्रसादकेरुनवाभा नमस्तुतेवेदगुत्पन्नगंगेनपा

पद्मकपुत्रमञ्जुतदगक्रोहगनमूलकाटनाजनमासुदं॥ ॐ निदगकटध्वनिसिमाफं॥

॥ ॐ नमो गवध्वजा

र्यामहसहस्रयमर्द्धि॥ स्यायथद॥ सीधसुसिद्धसत्त्वजन॥ अथसमहावनेजफटिलश्रवनेमखनखलदखनफ

हनिपिंगलनिमिगिलनिमिद्वलितिमंगलस्वाहा॥ सि॥ अथकुमममकुपदा॥ सर्वस्वनाचवेगवत्तसनाश

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ १३० ॥

वसनेवर्थाधिपतेन च स्वाहा ॥ साय (थेदं) ॥ अखडनखिविनखव (स्व) वना (शः) वपलः स्वखः वखनः अश्विन
नेरुणरुगन्दले वसवगवर्हिस्त्रिस्त्राहा ॥ मय कुममसर्वसत्त्वानां के सर्वग्रहस्य ४ धृत नापु स्य महा नाजस्य ना
मावनेनेवर्थाधिपतेन च स्वाहा ॥ साय (थेदं) ॥ खखखमः खलनः खलामः खलतिलखः खनखः खतिनः खटिने
खलतिलखः खलखिः कमनः कलतः कलतकामिनिविनि ॥ विधियः विधये ॥ गयेनः समचन गमिगमिनिस्वा
हा ॥ गमय कुममसर्वसत्त्वानां के सर्वग्रहापदवाविनूधकस्य महा नाजस्य ना मावनेनेवर्थाधिपतेन च स्वाहा ॥ सायः
(थेदं) ॥ कुगमिः कुकमनि ॥ कुकसः कुकसम ॥ कुकुम ॥ कुकके ॥ कुलूम ॥ कुणः अमल ॥ समगन ॥ कलूम ॥ इम
अनकेः कलमके ॥ कलत ॥ ॐ स मितः धिल अगत्रवतिस्त्राहा ॥ स्वस्य कुममसर्वसत्त्वानां के विनूपाकस्य महा ना
जस्य ना मावनेनेवर्थाधिपतेन च स्वाहा ॥ साय (थेदं) ॥ असं गखड वरुः वलवति वलनिर्धाषा स्रगुध्रत्र ॥ वज्रग
म ॥ वज्रधन ॥ सुभ सुभ ॥ इट सान ॥ वनाग्रपाफ ॥ अने ॥ धर्मयुके दिगिविष्टस्त्राहा ॥ स्वस्य कुममसर्वसत्त्वा

॥ १३० ॥

नक्षत्रे तथा गगनावाचने गव्यधिपतिनचस्वाहा ॥ स्वाद्यथदं ॥ खक्रखक्रगर्व ॥ विचक्र ॥ वाचक्रनाशना ॥ चक्र
चपल ॥ लीमपर्वक ॥ खनाग्र कृतिककन ॥ प्रकाशिवर्जवति ॥ सात्रंगवति ॥ चिकुका निलस्त्रुममसर्वसत्वा नाच
उल्लनसादि सिस्वाहा ॥ खमचायथगकेश लोकनामहस्वन ॥ यक्रसेनापनय ॥ सर्वहानीति च सपुत्रिका ॥ ॐ मापृष
धगभ्यपुतिगद्रु कुममा इति वीर्य नगसा गवामेव्य नवलनच ॥ निहका ॥ सर्वलागभ्यस्त्रुममसर्वसत्वा नाच
सर्वहयापद्रवोपसर्जित ॥ स्वाहानमस्तु पुन्रधावीलनमस्तु पुन्रधारुम ॥ नमस्तुमाश्रितिकेनाधर्मनाशनमास्तु ॥ स्वाद्यथदं ॥ ध
नक्षिधनति ॥ पुषंसनि ॥ लजनि ॥ वीधमति ॥ कीपुन्रधा ॥ सकने ॥ सानथा ॥ सानवति ॥ उत्तधने ॥ गुत्रधननि ॥ गुधचन ॥ स्वाद्यथवति ॥
गनाग्रि ॥ गनिलस्त्रुममसर्वसत्वा नाच पूर्वसादि सिस्वाहा ॥ खमचायथगकेश लोकनामहस्वन ॥ यक्रसेनापनय ॥ सर्व
हानीति च सपुत्रिका ॥ ॐ दपृष चगभ्यपुतिगद्रु कुममा इति वीर्य नगसा गवामेव्य नवलनच ॥ निहका ॥ सर्वलागभ्यः
यस्त्रुममसर्वसत्वा नाच सर्वहयापद्रवोपसर्जित ॥ स्वाहा ॥ नमस्तु पुन्रधावीलनमस्तु पुन्रधारुम ॥ नमस्तुमाश्रितिकेनाधर्म
लाज

॥ अ० ॥
॥ १३१ ॥

नमोस्तुते ॥ स्वायथ्येदं ॥ गभीरं नवहिकानि कानवति ॥ किकसिकिनिठि ॥ धननिवसनि ॥ हसिधनीतिहिमवति ॥ ध्याति
धन ॥ सागरी गभीरं सप्तकुममसर्वसत्त्वानां चैव दक्षिणस्य दिशि स्वाहा ॥ वमचापथय कथं लोकपाला मरुश्वरा ॥ यरु
सनापतय ॥ सर्वहारी त्रिको ॥ दपृषयगन्धयुतिगुक्रुमुममाइति ॥ विर्यं तं गजसातखामे श्वर्यं नवनच ॥
निहता ॥ सर्वसागय सप्तकुममसर्वसत्त्वानां चैव सर्वरथापदवापसर्गस्य ॥ स्वाहा ॥ नमस्तु पुनरावत नमस्तु पुनरावत ॥ नम
सामाश्रितिक नो धर्मनाशनमोस्तुते ॥ स्वायथ्येदं ॥ धर्मिवनागः वनवति वसिनि ॥ विगाग ॥ विवसि ॥ सागरी ॥ खनिकपिनाच
जलिति ॥ त्रिनि ॥ विनाशन विधात्रिनि ॥ वति ॥ अचल सप्तकुममसर्वसत्त्वानां च पश्चिमाया दिशि स्वाहा ॥ वमचापथ
गक्रुश्लोकपाला ॥ मरुश्वरा ॥ यरुसनापतय ॥ सर्वसर्वहारी त्रिको ॥ दपृषयगन्धयुतिगुक्रुमुममाइति ॥
विर्यं तं गजसातखामे श्वर्यं नवनच निहता ॥ सर्वसागय सप्तकुममसर्वसत्त्वानां चैव सर्वरथापदवापसर्गस्य ॥ स्वाहा
नमस्तु पुनरावत नमस्तु पुनरावत ॥ नमस्तु सामाश्रितिक नो धर्मनाशनमोस्तुते ॥ स्वायथ्येदं ॥ वमचापथय कथं लोकपाला मरुश्वरा
वनधर्मिनि ॥ नमस्तु अचल सप्तकुममसर्वसत्त्वानां च दिग्दिग्

॥ १३१ ॥

[illegible]

धनना
१३२

षु विधिवत्प्रकाशितं गमनात् नरुत्रयागवाहकं ॥ समाधिना न संमानविधेयं वनापमनाद्ययमार्गदर्शिता ॥ न समाधि
दं न त्वं वनप्रसिद्धं न संनसत् न ॥ ४८ ॥ हा यो मुसुस्मि ॥ अथो महापुंगव न यप्रसक्त ॥ ४९ ॥ गानि च त्वात्रिये गानि चैव न दमि
तिया सुगतं न गिता महाविनाय प्रतिपुद्गलन ॥ ५० ॥ यदा नरुव न महासुत्रं विज्ञानि गानि न स्तानियथा ॥ ५१ ॥ खपु ॥ ५२ ॥
पुनितं वनस्य न त्वमनं न सत्यं न ॥ ५३ ॥ मुसुस्मि ॥ यप्रसक्तं नाम न सादृष्टं ॥ ५४ ॥ उपसंकमि गितं मसासहि ॥ ५५ ॥ पाफप्र
काशं न विंशतमानं नानिर्वृतिप्राप्तवत् ॥ ५६ ॥ दं पुनितं वनस्य न त्वमनं न सत्यं न ॥ ५७ ॥ मुसुस्मि ॥ न जातु कुर्या
न्नु विधं हि पापकाम न वाचाम न सार्थवपि ॥ ५८ ॥ दनीयं सत्तानं न ॥ ५९ ॥ तथानदृष्टिग्रहन न न रवा ॥ ६० ॥ दं पुनितं
सद्य न त्वमनं न ॥ ६१ ॥ मुसुस्मि ॥ यथेन्द्रका न पथिवी पुनिष्ठिगा चतुर्दिगा वा मृति न पुकं य ॥ ६२ ॥ न ॥ ६३ ॥ पमापुद्गल
सक्ति संघेयं श्रुया मागसा दर्शित ॥ ६४ ॥ दं पुनितं वनस्य न त्वमनं न सत्यं न ॥ ६५ ॥ मुसुस्मि ॥ यश्रुया सत्यानि विराज
यन्ति गहि त्रपुह न स ॥ ६६ ॥ सिमानिका यप्रदानं न त्वमनं न सत्यं न ॥ ६७ ॥ मके सुमवा प्रवन्ति ॥ ६८ ॥ दं पुनितं वनस्य न त्वमनं

१३२

नमस्तु नमो ह्यमु स्वस्ति ॥ अर्चिर्यथा वायवसा द्विन फा अष्टगगने वउपे निसंत्वा नथिवसे पाजन विप्रयुक्ता अर्द्धगंभय
किहिवृष्टपूजा ४ ०० दंपनि नं वनसद्यनत्वमपिन सत्यन ०० हाया मुस्वस्ति ॥ यजुः मां अग्रतः (थेव स्तु वनास्ति सर्व सत्वा
सुखिना हवकु ॥ अस्तु नमस्तु ननदवपूषं धर्म नमस्तु य ०० हा मुस्वस्ति ॥ यजुः मां अग्रतः (थेव स्तु वनास्ति सर्व सत्वा
सुखिना हवकु ॥ गनानमस्तु ननदवपूषं संघं नमस्तु ०० हा मुस्वस्ति ॥ यानि हतानि समागतानि सिद्धानि निरुमावथवा
कनार्चिः कूर्व कुमेशी मरुतं यज्ञा सूदीवा नाशो च वनकु धर्मः ॥ यनेव सत्यन जिना जिना नि ससत्य वादि निपुन सानास्ति
ननेव सत्यन ०० हा मुस्वस्ति ॥ सूच कु सर्वधमहात् पत्य ४ साहा ॥ सायथ्यं ॥ धि न धि धिन ॥ चल नि धा धि ॥ वनसाने ॥ सानव ॥ ते
मुन प्रहृष्ट पाफ ॥ अत्र व ॥ अत्र धा धि ॥ सानवति ॥ अचू ॥ वनवने ॥ सन पाफ ॥ साने गम ॥ सूर्य ऊम ॥ सूर्य नीर्धा धि साहा ॥ सायथ्य
दं ॥ ख ॥ ख ॥ ख ॥ धा धि ॥ उ ॥ धन ॥ सान थि पुह्य ॥ विपुन पुह्य ॥ संकर्षे नि विकर्षति ॥ विखो ग्रवति ॥ शुभ साधन ॥ वन नवति ॥ वास
व ॥ विखनि विखगम्य ॥ पसूपति पूष ॥ गत्य ४ सत्य मुमम सर्व सत्वा नाच सर्व हया प्र ड वा पाया सत्य ४ साहा ॥ सायथ्यं ॥ कति

卷之四

933

[illegible]

933

इति नामावकाथमवम-डा ला क पा ला थय क स ना प ति ग्वे ना ॥ तथा य का म हा न म्ना हा नी ति च सूर्य दि का वि र्य त न ज सा न
षा व ठा न क र्म चि य तु ॥ हि द नि व र न त्ना नि व रि त्रि ध न दा ह क ॥ वा न न सा पि ना म प्या ला क न त व न स नि ॥ ५ ॥ ने न स
ए वा य न का र्वा द क र्म द स ना ॥ ना ना ग ॥ वे स था पू ये नि ॥ धे ना ॥ सर्व ण प का ॥ ग य था ॥ इ म र क न क वे ति । क र्म नि ॥
ख त्रि र श क नि र व ल ग त र ण त्रि ति । ग व नि ग नि पु स नि स्वा हा ॥ पु धा व नि स्वा हा ॥ ग म्भ र्वा स्वा हा ॥ रु न गु म्भ स्वा हा ॥ स
र्व का र्वा द क र्म वे ना ठ च्छे द नि स्वा हा ॥ रु म म कु ॥ सर्व स वा ना चै र्म र्वा द क र्वा द व ना ठे ष मि म कु वि ष पु या ग ॥ ४ ॥ सर्व द वे ॥ दि ना
रु दि ना ॥ गि ना ॥ य ना जि ना ॥ स्वा हा ॥ न ज सा र्म व द्वा ना पु र्क गि न न ज सा ॥ अ हा न चे व वी र्य ना न स व ष म कु धा नी ॥ ॥ पु र
या सा नि पु र स म्भ का मो रु स्या य न स च च र्वा वा नि नू द न का स्य प स्य ध ने र्गु ने ॥ को दि न ॥ ४ ॥ पूर्व ण स च आ नं द स्य ॥
न न च ॥ मे र्वा वे व म्भ त ॥ वे र्वा थ र्य न स ग कु म्भ ॥ वि र व य ला क पा ना ना म र्म स न व य न च ॥ स्य ना प ति ना स्य र्य न हा
त्रि कि च स म्भि ना ॥ वि र्य न न ज सा न षा वि ष य स वि ष स दा ॥ त य म कु प दा र्म नि वि षा वि ष इ ख ना ॥ ४ ॥ स्या य थ ॥ ४ ॥

938

[illegible]

923

साह॥ अंशुनाथश्रवनाकिंनरश्रमिताय नमिन्न नार्चिमन्त्रवज्रसुखा नामगृहित्वं सवदा॥ नेवंहयं शक्तिनचि
हिनत्वं॥ यथैष श्रुत्वा ननाय महायुक्तिनां॥ नामानि किंरियं नृगुहार्थं॥ न नराश्रुति च विषयगमुं॥ कुमनकायकन
संपचिते॥ सचदसौ श्रायकन उपसिद्धं॥ उल्लिख्यगमुं वधकचसमृत्वं॥ अनस्य ननाश्रवनादिन ग्वेन॥ नेखुखुप
पठेष्टगमुं॥ सच उग्रहि तं पिरवयगमुं॥ हितं पानिधननिपतयुं नमस्तु नृधननक गवनायानमास्तु न सत्ये
प्रकाशकामन॥ सत्ये पतिष्ठाय पुनाचमाचस सर्ववका मास रुताहवकु मममसर्व सत्वानचि वृत्तिनिर्मितमिष्टाहवमना
चप्रकं पिना न॥ पावघादसावषाति कुमाना॥ हितं कनि॥ यत्नमांम कनि कुमविद्यासुदृष्टमननिर्मितं॥ सफधासुसु
मूर्ध्नाश्रुतकमोवमेश्वरि॥ सायथदं॥ अणन गवनेनेदिमिनंदा॥ मलूनिगितिवसिति॥ गनृनिशगतत्त॥ चूलत्त॥ अ
नश्रुलरुनलरु॥ रुतम॥ सच कर्षतिस्वाहा॥ क्रिपुसतिष्टगंगर्क॥ समग्वदकु॥ उडियागर्क॥ सुखिगाला कुमाचनसा
कुगातकी॥ स्वस्त्य॥ सतिष्टगंगर्क॥ कापनपनिपनिमूचन॥ नानानक्षत्रिष्टगंगनिश्रुतग लोत्रसर्वपा॥ उषा नक्षत्रसमासा

धन ॥
१३५

विनक्तिविदुदानका॥ स्वायथ्यद॥ वाधिरमहावाधिविवाधनमनरुनिनि। वररुलीवत्तरुल॥ सिखासिखसानवत॥ समतर
लासद। रनागमयुलपाफे। सनवरुलगाहमीनिनिवाति। सिखा॥ नमारुगतनवृक्षामेनमावम्॥ सिद्धाकमकुपदा॥
मानकुम्भिमाविषावम्मानमनेतुस्वाहा॥ स्वायथ्यद॥ शुक्रमविक्रमरुतथाय॥ हनगमे। दहनि। धधने। धनेधनेद
धिनि। नीमखत्त्वम्॥ खखमासात्रम। चडेचपत्र। हनिमहनिमहानिनिस्वाहा॥ सर्वपापत्य॥ स्वाहा॥ स्वस्वामि
ममसपपनिवानस्यसर्वसत्त्वात्वा नोचसर्वदिग्दिग्य॥ स्वाहा॥ तिहकानिसर्वपापानिस्वाहा॥ वाधिरविषुलषे नगमकसि
हस्यगार्थन॥ सविषगिनिगुफे नहाज नमपनामितं॥ प्राणिगुफरुत॥ गमस्तानिबिखीकनलोजनं॥ चननसत्यवाक्
श्रामनरुवकुलजनविपविनादिवताया॥ गिखीनावि। श्रुवस्तथा॥ कुक्कुच्यपसनाश्वदवताया महावला॥ कन
काखस्यदवडा॥ श्रीमक॥ कास्यपस्यचः प्रसन्ना॥ गमस्तानिबिखीकनलोजनं॥ चननसत्यवाक्
रुडा महस्वाना॥ नात्र सोचमहाकात्रिच। च। च। तिनिन॥ रुदप्यचंगमपुतिग। कुममाहतिपिनीनिना

१३५

४ पूजिताह्वयानि स्वध्वं नु हाजनं ॥ पञ्चमिष ॥ सप्तपुं क ना तुम ॥ पञ्चमिष ॥ सप्तपुं सर्वपुं गामि हाजनं ॥ सर्वपुं विष्णु
या नापु निष्ठा पृथिवी न ता ॥ सर्व हाजनं सप्तपुं सप्तपुं क ना तुम ॥ ३ ॥ त्रि न द ग्धं यथा सप्तपुं तं वे गा द गं ह व द न पु न ॥
ग धा हाजनं सप्तपुं असप्तपुं क ना तुम ॥ ४ ॥ खो यो य दं ॥ ख ख म ॥ ख ख ख ख मू ख ॥ वि म सि व ॥ जि जि म सि रू म गि मा सि म ख
सि २ सा नि २ स मा गी म म स प नि वा न स प चो मि खे सप्तपुं यथा हा न नि ना मि खे ॥ य न द ग्धं यथा सप्तपुं सप्तपुं क ना तुम
सा य ॥ ५ ॥ क ल म क ल ल ॥ ख ल म अ ग्री स क म नि स्वा हा ॥ वि प ग्धि वृ द्ध ग न न उ पे नि सि ली न च वृ द्ध स ग न क वि ग्ध उ
क क क क वृ द्ध क न क म नि च का स प चो ग न द ग म क म नि च ॥ ६ ॥ उ न स प न लो ह मा ना पृ थ ग नै य ग नि न पुं ॥ का य
न न यो म न सा च हा तु ॥ पु स न चि ह ग न न म पे नि ॥ ७ ॥ उ न वृ द्ध प म ह र्दि क प या ध व ग म नि अ रि पु नो ४ गा द व ग आ ह
म ना उ द ग्रा न क क म अ य पु द प म ल ॥ स्व स क म म सर्व सत्वा ना च स्वा हा ॥ ८ ॥ त्वा र्य म हा सा ह स पु म द नी ना म म हा मान
स व स मा फ ॥ ९ ॥ ॥ ॐ न मा रु ग व र्णे आ र्य म हा मा य वि द्या न ह ॥ न म १ स म क वृ द्ध ल १ स म क वृ द्ध ना धा य च न

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ अनन्त
॥ १३९

मं लानि हा। इहा कि मा ॐ मा धूमा वसू कृ ॥ सुं वा तु म्वा सम सु म्वा ॥ आठ नाठ नित कं मे नाद। वन र्व कु द ब ४ ॐ लि कि सि
सम के न न व मा सा न स मा सा नि ॥ मे धा मि सर्व स त्वेष व स त्रि नि। व द्वा त्रि ति व स त्रि ति। क व ले। क व न क मू त। ॐ नि स ह से
उ ध २ पियं क त ॥ आ व द्वा प त्रि वि ह न वा द क न। व र्ष कु द व ४ सम क न व स र्व ह ॥ न मा ह ग व न ४ ॐ नु ग म मि सि का। ॐ
नि मा य (ग म हि का। ह ग म त्रि का य। अ त ग त न न। अ क त। अ क न तु। आ स न पा स न पा प नि कू ल। न मा ह ग व र्व व द्वा न
खा हा ॥ अ र्व क मा गि न वि प ग्नी गि खि जी न १ पृ थु त्री क स मू त ॥ उ प ग म वि ग्वे तु क गि त्रि र्व मू त क क कृ द्वा म ४ ॥ व द्वा
च ना म मू त्रि उ ड म्ब त न ॥ अ ध मू त उ प ग म का स प ४ ॥ अ ग्व कृ मू त मू त्रि ग म्ब पृ म्बे व ४ ॥ उ प र्व वा धि स म वा प गे न म १ ॥
१ नै र्व व ध्म म ह धि क र्वा द व न मू दि न ग ना उ द ग ना ४ क र्व कु सा नि के र्व सि ॥ त्रि त्व ॥ न य थ ॥ ॐ लि मि लि कि त
चि ति। च त्रि व सी क ति वा ति उ ड ना म इ मा द व स व स त ॥ इ इ क त मे मू त ॥ ॐ नि स म्ब ता। क ता नि ना त्रा य नि पा त्रा य
नि प ग्नी नि प ग्नी। क पि त्र व र्क नि ॥ ॐ नि वा सि मे ध्म कु ड मि ग म कु प दा ४ स्वा हा ॥ न य थ ॥ क ति मू त्र ज त मू त। सम क म

॥ १३९

सु। नठ नाठ वसनाठ। ॐ ह्रुमिह्र। पात्रसूत्र। अत्र काम। मंत्र काम। अत्र काम। न। का ॥ ह्रि कि सि लो मा हि का ॥ उह्रः
मा हि नमः ॥ नमा वक्ष्मा नोस्मि वाधिपद लो नुस्मि वाधुचतुष्पाद ॥ स्वस्ति वा वगं गा मा र्गस्मि पु लो ग नृष्व ॥ स
स्मि पु लो ग नृष्व स्वस्ति ना नु स्वस्ति दि वा स्वस्ति मध्वदि नेस्मि न सर्वत्र स्वस्ति वा लो नु सा चेषां पाप मा ग मन् ॥ सर्व दि व म
लो न सर्वे न क्रु ग्रह द को ऽ सर्व वृक्ष महा धिका ॥ सर्व आर्ह को नि ना ग या ॥ अनन सत्पदा के न स्वस्ति र्व नु सम न ॥ ४ ॥
अनया महा मायूया विद्या ना ह न था ग न र खि न यो म म सर्व सत्त्वा ना धी न का वू नृ गु पिं प नि द्रानं जिव नृ ब र्ष ग नं प स ॥
स न दा ग नं स्वाहा ॥ न य था ॥ ह ति हा त्रि ति च त्रि चा ति नि । नृ म सि न्धु म नि । मा ह नि स्तु म् नि । स्व य मु व स्वाहा ॥ न य था ॥ स म
नृ २ स्वाहा ॥ न य था ॥ व त्क २ अ । म नृ धा न नि व नृ नि व नि । व नृ मा ति नि पु ग्री चा चि च्छ ॥ स्वाहा ॥ न य था ॥ व र नि २ म टि क २ वा
का पी । २ वि धू म ति २ इ इ इ इ ॥ ५ ॥ नृ नृ नृ नृ नृ ॥ ६ ॥ च त्र च च च च ॥ ७ ॥ स्व ४ स्वाहा ॥ न य था ॥ सा त्रि २ गि ति २ म
नि । हि ति २ म नि । कि ति ति हि ति ति । प नृ २ पि नृ स च्च नृ २ व नृ म नि ॥ ह न वि र व व नृ म नि स्वाहा ॥ न य था ॥ आ लो मं ता नि ति म ता

अनभा
१४०

ॐ मइम वर्षकुदव४समन न ॐ तिमिति तु म्बु तु म्बु । अह न ह पन मइव ह । वरुं तु गु गु गु गु न वरा ॥ अ ॐ तु ॐ तु तु ॐ
वृक् वृक् मृक् ॐ ति ति पि नि ति हि नि ररु ररु हि ति मि ति तु ले तु ले तु नु न स्वा हा ॥ न य था ॥ हु न र व त व ले त मा न हि च भु ति
पू नू ष नि वि च ति ॐ नि ग ॥ अ नि च भु नि मा ति ति नि मा न कि हि ति र आ ग ति ग ति को षि का व च नि । वि हा नि वा सि मा हि
ति र मि ति र कृ ष स्वा हा ॥ न य था ॥ अ क न वि क र ह नि नि हा नि नि ध न नि धा न नि नि ध न ॥ अ रू रू रू रू ॥ हु न हु न हु न हु न
हु न ॥ १ ॥ ॐ ह ह ह ह ह ह ह ह ॥ १ ॥ अ हि नो षि ॐ म म ॥ प च प च प च प च प च ॥ १ ॥ य स्य र्थि कां म म स प नि वा न स ॥
धू धू धू धू ॥ १ ॥ ना स य ग कृ न्म म स प नि वा न स ॥ ऊ ण ऊ ण ऊ ण ऊ ण ॥ १ ॥ ना स य ग कृ न्म म स प नि वा न स सर्व स त्ता न
॥ च त्र च त्र च त्र च त्र च त्र ॥ १ ॥ हि ति हि ति हि ति हि ति हि ति ॥ १ ॥ मि ति मि ति मि ति मि ति मि ति ॥ १ ॥ रु त्र रु त्र रु त्र रु
त्र रु त्र ॥ १ ॥ इ नू इ नू इ नू इ नू इ नू ॥ १ ॥ चि ति चि ति चि ति चि ति चि ति ॥ १ ॥ ना ग य न्म म ग कृ त् ॥ हि क् मि क् च क्
वृ क् । ग्री ल ड म ड ल । हि न भ ग क् स म क र ड । स र्वा र्थ सा ध नि । अ म न क म त वि स त् । रु ड प र । सूर्य का न । इ वि ह य । इ म ड म

१४०

[illegible]

॥ १४ ॥

॥ १४ ॥

स्वाहा॥ नागनां स्वाहा॥ अरुनां स्वाहा॥ गन्धनां स्वाहा॥ गन्धर्वाणां स्वाहा॥ महानगनां स्वाहा॥ किम्बनां स्वाहा॥ यन्त्राणां स्वाहा॥ नाग
सनां स्वाहा॥ पुराणां स्वाहा॥ विष्णोचानां स्वाहा॥ रुद्राणां स्वाहा॥ कुरुणां स्वाहा॥ पूषणां स्वाहा॥ कटपुत्राणां स्वाहा॥ सुन्दाणां स्वा
हा॥ उत्पानां स्वाहा॥ कामाणां स्वाहा॥ अप्सराणां स्वाहा॥ शक्राणां स्वाहा॥ चतुस्र्याणां स्वाहा॥ त्रुडाणां स्वाहा॥ नक्राणां
स्वाहा॥ ग्रहाणां स्वाहा॥ धात्रिणां स्वाहा॥ अग्निनां स्वाहा॥ सिद्धवृक्षाणां स्वाहा॥ सिद्धविद्याधराणां स्वाहा॥ ज्ञेयस्वाहा॥ गन्धर्वाणां स्वा
हा॥ जाग्रतीयस्वाहा॥ अमितायस्वाहा॥ जम्बुनियस्वाहा॥ सुम्बुनियस्वाहा॥ माहनियस्वाहा॥ चण्डियस्वाहा॥ डामिडीयस्वाहा॥ अवधियस्वा
हा॥ अथर्वतियस्वाहा॥ मानग्रीयस्वाहा॥ नागहृदयाय स्वाहा॥ गन्धर्वाहृदयाय स्वाहा॥ मानस्विनीयस्वाहा॥ महामानस्विनीयस्वाहा॥ घण
कृतियस्वाहा॥ मोनिहृदयाय स्वाहा॥ पृथ्व्याय स्वाहा॥ समरुह्याय स्वाहा॥ समयाय स्वाहा॥ यकिसनाय स्वाहा॥ महाप्रकिसनाय स्वाहा॥ सिव
वकियस्वाहा॥ महासिववक्ति॥ इन्द्रधनाय स्वाहा॥ महाइन्द्रधनाय स्वाहा॥ मुचिनिद्राय स्वाहा॥ जम्बुनियस्वाहा॥ सुम्बुनियस्वाहा॥ अनाय स्वा
हा॥ अथाकनाय स्वाहा॥ अरुनाय स्वाहा॥ अयनाय स्वाहा॥ सर्वभूतकृताय स्वाहा॥ मयनाय स्वाहा॥ महाधनतियस्वाहा॥ मेनु
पनाय स्वाहा॥ महामाययै विद्यानाय स्वाहा॥ मयनाय स्वाहा॥ स्वस्ति सर्वस्वलोनाय स्वाहा॥ नागस्वस्ति दिवास्वस्ति मध्यस्ति नक्षत्र

१४१

स्वस्ति सर्वमहापात्रं सर्ववृक्षदिसकुदः। नमोस्तु वृक्षाय नमस्तु वाधयः नमोस्तु मूकाय। नमोस्तु गानकाय नमोस्तु भनयन
मोस्तु विमूकाय नमोस्तु विमूकस्य॥ यत्रोम् ॥ वाहिनपापधर्मास्ति वात्रमस्ति वात्रमस्तु चममसर्वसत्त्वात्राचनककुवन्तु स्वस्ति मातुः
स्वस्ति पीतुः स्वस्ति गर्भस्य स्वस्ति द्विपदाना स्वस्ति चतुष्पादाना स्वस्ति वरुणाना स्वस्ति त्रिवर्णपाना स्वस्ति त्रिवर्णपाना स्वस्ति नममसर्वसत्त्वा
त्राच स्वाहा॥ स्वस्ति एवन्तु उच्चिष्टस्य नृचिष्टस्य मनुस्य गच्छन्ति वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि वृक्षानि
११ चोत्तरयात्र ११ अग्नीयात्र ११ उदकरयात्र ११ अमित्रयात्र ११ वधकरयात्र ११ प्रत्यर्थिकरयात्र ११ प्रत्यमित्रयात्र ११ उत्सा
दकरयात्र ११ पनचक्रयात्र ११ इलिकरयात्र ११ अकालमित्रयात्र ११ धननिकमयात्र ११ चतुर्मित्रयात्र ११ स्वस्ति वरुणाय
११ नागरयात्र ११ असूतयात्र ११ मन्त्रयात्र ११ गन्धयात्र ११ गन्धर्वयात्र ११ किन्नरयात्र ११ महीनगरयात्र ११ यक्षयात्र ११
नाकसयात्र ११ पृथ्वीयात्र ११ पिशाचयात्र ११ रत्नयात्र ११ कूफायात्र ११ पृथ्वीयात्र ११ कपूरयात्र ११ सुन्दरयात्र ११ छाया
यात्र ११ अमलायात्र ११ अस्त्रयात्र ११ स्वस्ति। कृष्णकर्मसंकाशादि किन्नरावगात्र विषप्रपकरु कृद्विद्वत्

ध्यान
१२२

ॐ या इ प्रकित इ सि वि ने इ हं ॥ दि ता व धू त रु पा न ॥ स्व सि दं कु क पि न क पा मा वे ग र्पा ला ह सि ग र या ॥ ४ ॥ स्व सि सर्व त्व ॥ ना तो स्व सि
दि वा स्व सि म धा दि ने सि ॥ ५ ॥ स्व सि सर्व म हा ना य स वे व धा दि सं गु व ॥ न मा मु य द्वा म न मा मु वा ध य ॥ न मा मु गू का य न मा मु गी न
न मा मु ग भ क य ॥ न मा मु वि मू का य ॥ न मा मु वि मू का य न मा मु वि मू क य ॥ य द्वा म हा वा हि न पा प ध र्मा सि त्वा न म रु च सर्व स त्वा ना
प नि पा न य कु ॥ त य धा ॥ अ ठ क र म ठ म द व द्वा न ॥ अ व न ग व ल ॥ गु न २ च न ग व न प र्गु ग व न र्हा चि क्चि मू चि स्वा हा ॥ त य धा ॥ ६ ॥
द मि द ख ल ॥ वि ख ल ह ति २ मि ति २ क रु म ल ॥ अ व न अ म ना व कि ॥ द ति ग व न ॥ इ म्ब दा इ म्ब हि ति २ क्चि २ मू चि २ स्वा हा ॥ त य धा ॥
मा नि २ क व टि म ठि म ति क ॥ ह न २ च न २ ख न २ रु स रु सि नि द न द मि नि ॥ द नि त ग क टि म क टि ॥ न ठ न ठि नि ॥ गी ति २ गि नि २ १२२
गी ति २ स्वा हा ॥ त य धा ॥ हि ठी मि ठि क्ठि मू ठि बु ठि मू ठि २ न ठि ठि नू ठ द क द नि न ग क नि च क नि ष क नि का च न ना व ठि च न व न द न
सि द्धि स्वा हा ॥ त य धा ॥ न रु न न ल ग न ल ॥ न ल गी न ल ॥ न ल च ल वी ल वी धू न ॥ वि रू ध न ॥ अ त ग विल ॥ विल ग म सि ॥ मि ति मा ल ॥ म
ति मा ल ॥ मि ति मा नि नि ॥ ७ ॥ क ल क ल इ ल क ल ॥ ८ ॥ ह द पा मि सि वि स्वा हा ॥ त य धा ॥ अ पु ल प ल न म ल न ॥ ख लु ल ग मू र्ग म्ब न द
अ म्ब व कि म ल म ति क ॥ अ म न सि द्धि ॥ ह न ह न ह न ह न ॥ ९ ॥ प ग प ग प ग प ग ॥ १० ॥ प स प ति सि द्धि स्वा हा ॥ त य धा ॥ ११

[illegible]

॥ १८३ ॥

हृदयमिह २५ हृदय २ हृदय निद निग वना ॥ गिवसूनपानि ॥ वाधिवाधिवाधिवाधि सत्यपनिवात्री यस्याह ॥ नय ॥
हृदयमिह २ मानिक नि ॥ किनिका नि की नि कि नि ॥ ॥ किनियवमयनत्रक ७ कविशारु रुम ॥ धन धन ॥ हृदय २
हृदय २ हृदय २ हृदय २ ॥ ॥ हृदय विख हृदय विष ॥ वृद्ध २ हृदय विविष पुत्र क वृद्ध नग ॥ हृदय विख ॥ अह न क ग ह न वि
ष ॥ अनाममि न ग ह न विष ॥ सकदागमि न ग ह न विष ॥ अना प ने न ग ह न विष स एवादि न ग ह न विष ॥ असून माया ह
विष ॥ नाग विह न विष ॥ नृगु न ह न विष ॥ स्क न ग कि ह न विष ॥ माहा माय य धि ना ह न विष ॥ निह न वि ॥ हृदय सु काम
उ विख स्वस्ति ह व नु म म सर्व विषा न ॥ वत्स ना विखान ॥ हृदय हृदय विखान ॥ कस क व विखान ॥ उ वृ विखान ॥ म स विखान
न ॥ चूर्ण विखान ॥ हृदय विखान ॥ विष्ट विखान ॥ मय संक न विखान ॥ सूर्य मेरि क की ट ल म क न ह म ५ म कि क प्र म न व ना न
नै म क नै लान क विषा न ॥ म नृष विषा न ॥ वृष्टि क विखान ॥ ग न विखान ॥ स क विखान ॥ उर वि वि विखान ॥ विद्या विषा न ॥ ह
रु सर्व विषा न ॥ म म सर्व सत्ता ना च ह ॥ नय ॥ गला ग कु ल ॥ मा ला ग कु ल ॥ चाप टि कु ल ॥ मथ नि घा न नि ॥ य स नि ॥

॥ १८३ ॥

ह्रिन्निनीयति॥सिन्ननूयति॥हाहाहाहा॥ १ ॥सिंहधितिविधितिकूरवसन॥दुनदुनसि॥वठवटसि॥मीनिश्कपि
कपिलकपिलमूल॥हृदिहृदसर्वदृष्टानागसूनकसामिसूनकनामि॥सहस्रपादाप्रनियहंकनामि॥सहस्रिदगहि
नवोदितहिंजानिसूनपति॥वज्रवज्रवज्रवज्रवज्र॥ १ ॥वज्रपदयम्वाहा॥नमः॥कृतनंतनपशनधमशनगन२३कृदि
रमृदि२मिदि२गन२मन२हन२नन२दिनि२टटटट॥ १ ॥दाहीदादादादा॥ १ ॥वावावावावा॥ १ ॥हतहतह
सहसहल॥ १ ॥सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि॥ १ ॥स्वस्तिस्वस्तीस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति॥ १ ॥ममसर्वसत्त्वानाचस्वाहा॥स्वस्तिस्
वपुषकाट॥काननाठिक॥कानपासाठ॥मयूदधुन४वुमूदधुन४॥ठडदधुन४॥मृषिदधुन४दवदकाट४नागधु
धुन४असूतदधुन४मनूतदधुन४गनूतदधुन४गन्धर्वदधुन४किननदधुन४महानगदधुन४यमूदधुन४नाग
सदधुन४पुनूदकाठ४पिसौच४दधुन४हनदकाठ४कूमादधुन४पूतनदधुन४कनपूतनदधुन४उत्मादधुन४
आमादधुन४अपमानदधुन४गलानकदधुन४वगानदधुन४नागदधुन४चोनदधुन४अग्निदधुन४उदकदधु

अनथा

१५५

न सर्वदत्तस्य स्वस्ति रुवतु मम सर्वसुखानां च विवकु वषगन पश्यतु गन दासं ॥ नयथा ॥ ही सि २ खिति २ मिति २ मूति २ हि २ मिति
उरु उरु ॥ गुसनिमथ निदरु निद्या न निपच निपा च नि कप निपाप निहने निदन दन २ दान निपाठ नि मोह नि सु सु नि प्रज
मु नि स्वय मू व स्वाहा ॥ नयथा ॥ हि नि २ ख नि २ म नि २ सि नि २ हि नि २ मिति २ सि नि २ उरु उरु गुसनिमथ निहने निद्या न निपच
निपा च निहने निदरु २ दान निपाठ नि मोह नि ज मु नि सु मु नि य स्वाहा ॥ नयथा ॥ अ ७ नो प ७ नो क थ ना के य ना रु न ग मा रु म
ग मा रु न प कि वि नु प ति गि नि प ति रु प्र प ति रु ग्रा य प ति अ ठा न न ठा द का ग रु ग हा ॥ न नाम ना ॥ रु ना ग हा ॥ न चि ना द ना ॥ रु ति
कि चि का कि चि का के वा स न तु ला ॥ वि प्ति न क ति कि नि पि न न ग नि न न ग नि पि न न म नि न म नि म धु य नि क म न अ हि उ
हि व र्क व र्क रु न व त्सा ना रु म हा ग ने तु ल व मू सं व स्वाहा ॥ नयथा ॥ नयथा ॥ या व वि धा व नि कु नु गु नू म स्वाहा ॥ ना ग ध प थ ७ न ला के द्र या वि षा ४
नि वि षा रु ग वा न वृ षा वृ ष सत्य रु वि खं ॥ ना ग ध र्म मा रु थ ७ न ला के द्र या वि षा ४ नि वि षा रु व ग वा न ध मा ध म सत्य रु
वि षं ॥ ना ग ध र्म मा रु थ ७ न ला के द्र या वि खं ४ नि वि षा रु ग वा न स य सत्य रु वि षं ॥ य द त्त सर्व वृ षा नां अ रु का चे व य स

१५५

कठथागतसुननममसर्वसत्त्वा नाके कृतं स्वस्थयनं मया ॥
मुनितुष्ट्या समाप्ता ॥

॥ आर्यमहामायनिविद्या नाहि वंविनाष्टायकप्रमूखा

॥ कुंनमारुगवर्षे आर्यमहासीतवा ॥ नयथा ॥ अक्षवर्ण कलिहारा वनस्य समानकक्ष
रजसूना चकनत्रंभ अमूनविना ननविना नने २ विना कनविना करचीना ठंडा ठंडु किसनाह साहसकिस नापिनिमात्रा
महाकिंश्चा ॥ विहठिका ॥ कोपुकि का ॥ अणमदनागमासिका वना चनाचिना निविचिनि २ हिलि २ समनि वसमनि । ननन
चने २ नने २ न २ चनुनादि । कनाठि । हानी टकि २ कानि टकि । किनी टकि जो नीगम्भ सिचि पु सि वना सिमाना कि वच ॥
सि । धननि धननि । नननि ॥ डपुमासिके कचकाविर्चि ननाकि का कलिके नेन मनि लममनि वनाह कले ४
मसुन । कलविन कन २ विसनन विन कन २ विन । कनविन कन २ वीन ॥ चनवीन चन २ वीन । महादिले ७० लमम
वनमनि । ननमनि सर्वाथमाधनि । अमुनि हन ॥ ठंडुनागा । यमा नागा ॥ वन ॥ नागा ॥ मनास्व नागा वासुकि नागा ॥ दकि
७ नागा ॥ दपुकि नागा ॥ धननापी नागा ॥ विन टका नागा ॥ विन पाझ नागा ॥ वना सहस्राधिपनि नागा । वृक्षोत्तगाया न धर्म स्वामि

निगाननि ॥ ५

[illegible]

一

हा ॥ अस्मात्वनपून नाइलमहासिगवति विद्या योद (अ) हनपदगतायासुत्र ग्रन्थि वषाहसु नधार्य नार्य माना या क ॥ न धार्य
माना यो मकाधीन नम न स नरु कृता हवति ॥ ६० ये खनपून ४ महासिग वति विद्या यो ५ क नरा गगन दिवतिका समेव
एगवत् तिरुषिना रुषिषक ॥ ॥ अर्थ महासिग वति नाम महा विद्या तारुप तिसमाका ॥ ॥ कुं नमारु
गवत्ते अर्थ महा ए कि स नाये ॥ साकर्थ सिद्धि प नम वद नत्त चिरा धर्मा र्थ काम स सम गव नाय ॥ ॥ धिना आ
याठ ना स न के त्य स द्या ॥ पूजा विधा न नित्र ना ग नू ज न न्द्रा ॥ अर्थ मिमा पु कि स ना सु ति मा तु ना था न का विधा न च ना ग न
समकां ॥ संवर्ति का सु कि ग उ ग पु द द्वि ता ये सर्वा र्थ सिद्धि चर्या यु त मा मि रू य ॥ त प थ ॥ नम ४ हर्व त था ग ना नां न मा नम
४ सर्व वृ ध वा धि स त्व न्ध र्मा स ध त्य ॥ विपू ल ग र्क विपू ल विम त रू ग र्क व रू हा ता ग र्क ग कि र्क ह ॥ ग ग न दि (अ) म
नि स व णा प वि (अ) ध नि ॐ न व ति ग ग न वि चा त्रि ति सि त्रि ग म ति २ गि त्रि २ गा म ति २ ग ह २ ग ग म ति २ ग म ति
२ ग कि २ ग म ती ग न ॥ ग र २ ग र २ ग नू ति चू ल म चि त् न य वि रू य सर्व ह य वि ग ते सर्व ग र्क सं ले न नि सि ति श पि त्रि २

धारा १४६

चिनि २ सम का कर्षति सर्वग कृष्णमर्थ नित्ररु मा सपनिवा न सर्व सत्त्वा नाच चिनि २ सर्व यत्प ४ सर्व पड वस्य
चिनि २ दिनि २ विविध विनास निमूचि २ मनि २ चिति २ चने कमने जय विरु या वह जग वनि न स्रम वूट मा न
धनि ॥ वरु विविध विचि वग धनि निरु ग वनि महा विद्या द वि ॥ नरु २ मा सर्व सत्त्वा नाथे सम नो नव वसु सर्वा
पाय विस्व धनि ॥ इरु २ नरु २ मा सर्व सत्त्वा नाथे नाथाने प्रा नान गन ॥ न पना य ना न पनि मा तय सर्व इ धरु ४
चतु २ च ॥ विरु नि २ वग वनि ॥ सर्व इरु निरु क नि विरु य वा हि इरु २ मरु २ चरु २ आ य ४ पा नि नि सून वन प
मर्थ नि ॥ सर्व द वग न प जि न चिनि २ सम का वला कि रु पु र सु पु रु विरु रु सर्व पाप विरु ध नि ॥ धन २ निध न सु मरु
नरु च स २ वा न य इरु नरु न य आ सा ग्रा व प ध न कम न कि ति २ वन दा सु ॥ १०५ प म विरु ध रु न २ हि नि २ मु नि २
मग न विरु ध प वि रु म् वि रु कि ति २ ख न २ ज ति न सि प ख न सम नु म सा नि ता व रु वि रु रु ४ ॥ क त २ सर्व द व ग
॥ सम का क र्ष नि ॥ स य व रु न २ गा न प २ मा सर्व सत्त्वा नाच ना ग वि ता कि न स रु २ उ रु २ धि नि २ ह नि ह न कि

प २६

निर्गम्यग्रहसंक्रान्तिपिंगलसम्वत् २३ विचित्रनक्षत्र २ नागवित्तकिनिनात्रयं ३ मासर्वसत्वाश्च त्रगवति नृपदान्मलय
पुसर्वेश्वसमके नदिमावधनवक्षपाकात्रवक्षपासवधनवक्षपात्राविगुह्युनिर्गमवतिगर्भुविष्मधनिवृत्ति
पुनिर्गमसंक्रान्तिवर्षकुदवसमके नदिषादकेननृमनवर्षनिदवतावनात्रिनिर्गमिचिचुमांसर्वसत्वाश्च
गुरुवचनामयधनवपुषनक्षत्र २ मासर्वसत्वाश्च सर्वरुयस्य ४ सवापडवस्य ४ सर्वापस्य ४ सर्वइष्टरुयलीनस्य ४
सर्वकनिकनलह विवाहइष्टस्य ४ निमिद्रामकलपापविष्मधति। सर्वयकसनागविदत्रिनिचित्रवत्तवनिडाप
जयकुसर्वेश्वसर्वकात्सिध्नुमठयविद्यासाधयमलुत्तद्यानयविद्यानृयपरमिध्नुपुत्रय २ मञ्जासाविद्याकन
मूर्तेजयारुनिजयवति। तिष्ठतीष्टरुगवतिसमयमनृपानयसर्वनथागनृदयगुधववसाकयमासर्वसत्वाश्च
पुमहागनृनृयषासत्र २ पुसत्र २ सर्वावनसविष्मधतिसमनाकात्रमलुत्तविगुह्यविगनमलसर्वमलविष्मधनि
त्रिनिर्गमसर्वपापविगुह्यमनविगननृगवतिवक्षवति॥ नृसाकधिष्ठितस्वाहा॥ सर्वनथागनमूर्द्धातिखिकस्वाहा॥ सर्व

अनलि
१५७

सर्वद बहिरि वि क स्वाहा ॥ सर्वतथा गगन ह द या धि पि न ह द य स्वाहा ॥ सर्व तथा गत स म य सि द स्वाहा ॥ ॐ नु ॐ नु व ति ॐ नु
व व ता कि न स्वाहा ॥ वि भे व भे धु पि क ले ४ स्वाहा ॥ वि धू न म स्तु ते स्वाहा ॥ म ह ग्व ने व न्दि त पू जि ये स्वाहा ॥ वि जे ध न व श पा नि
व न वि र्धा धि पि न स्वाहा ॥ धू त नो पू य स्वाहा ॥ वि नू ध का य स्वाहा ॥ वि नू पा का य स्वाहा ॥ वे ग्व व त ना य स्वाहा ॥ चा तु र्म हा ना मा
म न स्तु का य स्वाहा ॥ य मा य स्वाहा ॥ य म पु जि न न म स्तु का य स्वाहा ॥ व नू ना य स्वाहा ॥ मा नू का य स्वाहा ॥ म हा मा नू का य स्वाहा ॥
श्रु न ये स्वाहा ॥ वा य वा स्वाहा ॥ ना ग वि ता कि ना य स्वाहा ॥ द व ग श य स्वाहा ॥ ना ग ग श य स्वाहा ॥ य क्रु ग न य स्वाहा ॥ ना क
स ग श य स्वाहा ॥ ग श व ग श य स्वाहा ॥ श्रु न ग श य स्वाहा ॥ ग नू ग श य स्वाहा ॥ कि न न ग श य स्वाहा ॥ म हा न ग श य स्वाहा ॥
हा ॥ म न वी ग श य स्वाहा ॥ श्रु म श्रु ग श य स्वाहा ॥ सर्व ग्र ह य स्वाहा ॥ सर्व रू न य स्वाहा ॥ सर्व य न य स्वाहा ॥ सर्व पि सा वे य स्वाहा ॥
सर्व पि ग वे य स्वाहा ॥ सर्व पि ग मा न य स्वाहा ॥ सर्व कू ला य स्वाहा ॥ ॐ धू न २ स्वाहा ॥ ॐ उ न २ स्वाहा ॥ ॐ कू न २ स्वाहा ॥ व नू २
स्वाहा ॥ मू नू २ स्वाहा ॥ ह ने २ सर्व य क्रु न स्वाहा ॥ द ह २ सर्व रू न स्वाहा ॥ प च २ सर्व य त्थि क य त्थि मि त्र न स्वाहा ॥ य म मा हि ने वि न स

१५७

पासर्वेषां कृतयदसुचिह्नं नास्वाहा ॥ इति गायस्वाहा ॥ पञ्चति गायस्वाहा ॥ इति कालाय स्वाहा ॥ वज्रकालाय स्वाहा ॥ समकालाय स्वाहा ॥
मानिरुद्राय स्वाहा ॥ प्रहिरुद्राय स्वाहा ॥ कानाय स्वाहा ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ मातृगणाय स्वाहा ॥ महामातृगणाय स्वाहा ॥ अकृणीषां स्वा
हा ॥ नाकसिनां स्वाहा ॥ अत विभावठाकिनीनां स्वाहा ॥ आकाशगामिनीनां स्वाहा ॥ समूठवासिनीनां स्वाहा ॥ त्रायिचला नां स्वाहा
॥ दिवसचनो नां स्वाहा ॥ अिसुश्वाचनानां स्वाहा ॥ विनाचनो स्वाहा ॥ गर्कहन्त्य ४ स्वाहा ॥ गर्हसंभ्रानित्य ४ स्वाहा ॥ इत्यु २ स्वाहा ॥ ॐ
स्वाहा ॥ स्व ४ स्वाहा ॥ सु ४ स्वाहा ॥ लुव ४ स्वाहा ॥ उरुव ४ स्वाहा ॥ चिनि २ स्वाहा ॥ विनि २ स्वाहा ॥ धननि स्वाहा ॥ अननि स्वाहा ॥ अग्नि ४ स्वा
हा ॥ नोवाय स्वाहा ॥ विनि २ स्वाहा ॥ मिति २ स्वाहा ॥ वृक्ष २ स्वाहा ॥ सिद्ध २ स्वाहा ॥ मत्तुलव २ स्वाहा ॥ सिमाव २ स्वाहा ॥ सर्वगद्रु
कय २ स्वाहा ॥ रुक्य स्वाहा ॥ चिद्ध २ स्वाहा ॥ होद २ स्वाहा ॥ रुगी २ स्वाहा ॥ वध २ स्वाहा ॥ माहय २ स्वाहा ॥ मनिविग ४ स्वाहा ॥ सूर्यसूर्य स्वा
विग ४ स्वाहा ॥ विग्वधनि स्वाहा ॥ चन्द्र २ पूर्णचन्द्र स्वाहा ॥ ग्रह ४ स्वाहा ॥ नक्षत्र ४ स्वाहा ॥ विग्वध ४ स्वाहा ॥ गिवे ४ स्वाहा ॥ गान्
त्य स्वाहा ॥ पृथ्वी ४ स्वाहा ॥ स्वस्त्य ४ स्वाहा ॥ सिव ४ स्वाहा ॥ पृथ्वीकनि स्वाहा ॥ वनकनि स्वाहा ॥ वनधनि स्वाहा ॥ ग्रीवधनि

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ १६८ ॥

नि स्वाहा ॥ श्री कानिनि स्वाहा ॥ मूचि स्वाहा ॥ नमूचि स्वाहा ॥ मूचि स्वाहा ॥ वगव नि स्वाहा ॥ सर्वे नथा गुरु प्रव न विग न ह य सम य स्वाहा
रुगव नि सर्व पाप स्वस्ति रु व कु म म सर्व सत्त्वा ना स्वाहा ॥ कुं मू नि श वि मू नि २ ध नि च ति च त न व ग व नि ह य वि ग न ह य स्वाहा नि नी
वा धि २ वा ध य २ वू धि २ वू धि नि २ सर्वे नथा ग न ह द य रु स्वाहा ॥ कुं मू नि २ मू नि व न अ हि षि क रु मा सर्व सत्त्वा ना च सर्वे नथा ग ना ४
सर्व हि षा के महा क त च मू डा मू ति के ४ सर्वे नथा ग न ह द या धि धि न व न स्वाहा ॥ सम कु वा ना मा ला वि ग रु ह मू नि न विं ना म नि म
हा मू डा ह द या प प्रा ति का ना म धा न नि ॥ अ म कु प दा सि धा ४ सर्व क र्मा प ना ४ ल ४ ॥ कुं अ म न व न व न व न पु व न वि ग
व रु हं रु हं रु हं रु हं स्वाहा ॥ अ म न वि ला कि नि ग रु स रु नि अ क र्ष नि रु हं रु हं रु हं रु हं स्वाहा ॥ अ प ना गि न ह द यं कुं वि म त वि पु न ग
य व से अ म प रु हं रु हं रु हं स्वाहा ॥ कुं रु ल २ स रु न २ रु डी य व ल वि ल ध नि रु हं रु हं रु हं रु हं स्वाहा ॥ कुं म नि ध नि व जि नि म रु प
स न रु हं रु हं रु हं रु हं स्वाहा ॥ उ प ह द य वि या ॥ आ र्य म रु प नि स ना यो ४ प थ म क स प स मा फो ४ ॥ ॥ अ कु म कु प दा
सि धा ४ सम रु वू ध न रु धि ना १॥ न मा वू ध य १॥ न मा ध मी य न मा स द्या य ॥ न मा रु ग व न ग म म न य महा का नू ति का य २

॥ १६८ ॥

नथागनायार्ह न समासेक संवक्ष्य ॥ नमः समनक ४ समासं वृद्ध्या तावनेनां नमस्तु स वृद्ध गभस न वृद्धय ॥ अहमिदानीप वक्र
मि सर्वसात्वा नूकमागो ॥ ॐ मां विद्यां सहानं गोमहा वलपेना क्रम्य ॥ यसा एषि नमाद्रायामुनि नावत्तमयागने ॥ श्री लो व
मात्तकायाश्च ग्रह ४ सर्वविनायका ४ विद्याश्च सन्निधेय कविरुत्तम ॥ अद्वि स मगता ४ तयथा ॥ कुं गी निरगिनि निरगि निवर्ति आका
स विसृज्य पापविगत ॥ आकासगगनं नन ॥ आकासविवा निनि ॥ इति न गि ख स ॥ मनि मोक्कि क ख चित ॥ मो नि धन सू के
॥ सुकु ॥ सुत प्रसू ॥ सुक र्गिभनः ॥ सुनाग न प्रसू ॥ सुत ॥ नमः सर्वषां वृक्षा नाक्षत्रि न न ग सां ॥ वृक्ष सू वृक्ष ॥ रगवति सूत ॥ नि सूत म
सूत ॥ सुदभसुता के वने वने ॥ रगवति रुद्र वति रुद्र सूत ॥ विमन ग य रुद्र ॥ विमले ग य रुद्र ॥ पच ॥ चं वि वलि व ग च
य रु वलि ॥ अत्रिग न्ध नि ॥ मे नि च ॥ अत्रि मात गि व च सि ॥ सुयति पू क सि ॥ ग व त्रि ग भ व ति ॥ ग कं नि ठ मि ठि दु मि ठि सो डी नि ॥ सर्व
थ साधनि हन २ सर्वसु क्र न द ह ॥ सर्व इष्ट नु य न पि सा च ॥ नी ना म नू षा नां च ॥ पच २ ह द य वि धं स य जि वी तं ॥ सर्व इष्ट य हा
॥ ना स य ॥ सर्व पा पा नि म नि म र ग व नि ल ॥ २ मा स ॥ अत्रि वा न स ॥ सर्व स स्वा य सर्व ॥ सर्व दा सर्व र या प ड व स ॥ सर्व इष्ट ना च व च

अनन्तर
१५७

न क न र स र्व कि लि ष ना स नि म्मा ह ॥ म स द ॥ पु नि वा नि नि मा नि नि । च न वि च न । चि ति २ वि ति २ नि ति २ नि तु य धा नि धा
पु च न स म न च ॥ नि मा नं गी न्ध सि । व ध सि । स म ति पू क सि । ग व नि । सा व नि । ग क नि । ड मि ति दा मि ति ॥ पं च नि पा च नि ॥
म र्द नि । स न ल । स न ले ह । हि न म ध्वा । लू ष्ट वि दा नि नि । वि धा नि नि । म हि ल २ म हा म हि ल नि ग उ नि ग उ रं म म इ म हि ति ।
दा के च के च क्वा कि नि ॥ क ल २ का नि नि २ ग व नि ग व नि ॥ स र्व बा धि हा नि नि ॥ च्छि २ च्छि नि म हा च्छि नि नि मि २ नि मि भ्वा नि ॥ ७
ला क द ह नि । ने धा ग क वा व ला क नि । व ग ण ३ पा स म र्ज ना सि च क्क ति सू त चि का म नि म हा वि धा धा न नि त्त २ स र्व स्था न ग तं ॥
स र्व र ष्ट रु य ४ स र्व म नू णा म नू णा यै रु य ४ स र्व बा धि त्य । व ग व ग व ति व ग पा नि ध न ॥ हि ति २ मि ति २ कि ति २ चि ति २ सि ति २
व न व न व स र्व न ग य ष स्था हा ॥ स र्व बा धि वि पा नि ति स्था हा ॥ स र्व बा धि ह न नि स्था हा । स र्व य नि स्था हा ॥ स र्व स क्क रु य ह । न ति स्था हा ॥ स र्व
रु व कु म म स र्व स त्वा ना च स्था हा ॥ सा नि क नि स्था हा ॥ पृ ष्ठ क ति स्था हा ॥ व ल व र्ध य नि स्था हा ॥ ग य नु ग य च नि क म स वि म स स्था
हा ॥ वा प न स्था हा ॥ स र्व ग धा ग न मूर्त स्था हा ॥ क न म हा सा नि स्था हा ॥ कं ४ ७ ह ली रु सि व ग व ति स र्व न धा ग न ह द या प नि नि ॥ ७

१५७

[illegible]

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍
ପଦ୍ୟମାଳା

[illegible]

११०

[illegible]

[illegible]

अवका नासद्या नोनमा लोके इह तानां ॥ नमो अगपत्रा नो ॥ नमो सुरुता गभमिना ॥ नमो लोके समर्गकाना नो ॥ नमो ४ सः
म कपति पन्नो नोनमो ४ वेद पानो ॥ सा पा नगह समर्थ न्य ॥ नमो ४ सिद्ध विद्या धना नोनमो देव निधिना ॥ नमो देव बुद्धि म
॥ नमो ४ न्याय ॥ नमो ४ आय नमो ४ उ मापति सहि काय ॥ नमो रगवत नो नाय नाय ॥ य वे मू डानमस्तु काय ॥ नमो रगवत मरा
का नाय ॥ वि पून नगन वि डापन क नाय ॥ अधि मू की सग्न न वा सि निय ॥ नमो रगवत मा रू ग ॥ नमस्तु काय ॥ नमो रगव
त त था गत कू नस्य ॥ नमो रगवत पञ्च कू लस्य ॥ नमो रगवत वज्र कू लस्य ॥ नमो रगवत त्रल कू लस्य ॥ नमो रगवत मनि कू
लस्य ॥ नमो रगवत राज कू लस्य ॥ नमो रगवत कू मा ल कू लस्य ॥ नमो रगवत दृ ट सु दर्ग न सु हन न ना नाय न था गता या
ह न के सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रगवत सु मि ता लाय न था गता या ह न सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रगवत अ क्सा य न था ग
ता या ह न सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रगवत न वे र्य्य पुर ना नाय न था गता या ह न सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रगवत सु पू षि त लो
न नु ना नाय न था गता या ह न सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रगवत त्रल कू ल ना नाय न था गता या ह न सम्य क् वृ द्धाय ॥ नमो रग-

५७५
११३

यनवेलाचतायतथागतापरिहृतसमास्तुवृद्धाय॥ नमो ह्यगवतविकगितनयनास्तनगन्धकेतुनाशायतथागतायाहृतस
मास्तुवृद्धाय॥ नमो ह्यगवतगभकेमूनयनथागतायाहृतसमास्तुवृद्धाय॥ अथ नमस्तु तां यतवक्तु सर्वतथागता
स्तु भगिनातपुत्रा नामापनाजिगामहापुत्रा गाना सर्वकनिकनह विवाहपुत्रसमनि सर्वग्रहतिवातिनि यनि विद्याकननि
सर्वका लमयनि निनि सर्ववन्धनमाकनि॥ सर्वइष्टसुखतिवातिनि सर्वनि गुरुहर्षिता सर्वगक्रनाकसग्रहाभाविक
सनकनि सर्वैर्सेकैर्निवालेनि॥ अष्टाविगतिनक्रुद्रा अष्टादनकसि॥ अष्टनामहानाविधे सनकनि॥ सर्वगक्रनिर्घननि
धातुइष्टइष्ट स्वयविनासुनि सर्वविश्वसमाग्नीड्यकागत्रनि॥ अष्टजिगामहायाता महापादवला महागता महाचक्षु महादिप
महाअवता महामाता महाकाया पाशुनवासिनि॥ आर्यतात्राह वृत्तिवेद जयाचविमयातथा॥ सर्वमासतिहतिचवजमातोव
विग्रगां॥ अष्टकवशचिद्राचमात्राचेवापनाजिगा॥ वज्रकुलु विसात्राकिगभक्तावेदहपूजिगा॥ सोमात्रपामहाअवताकाता
पाशुलवासिनि॥ आर्यतात्रा महावत्ता अमनावजगिखत्रा अष्टवकोमानिवज्रकनीगता॥ वज्रहस्ता महाविद्याकाचनमाः

११३

मानिका कसुमपुलावगायेवेवनाचन कूलपलापनथागमकलायुषविग्रुगाविरुक्कानिकावेन कनकपुलाविद्याला
चनावरुदुसुहि॥स्वभावविमनामीगीवधनाचनायथावरुसूर्यपुलावन्दुनथावरुधनानिचवरुमानामहामायादविचक
नकपुला॥सूत्राचनालगाचकमेलाक्रिनि॥विनिगासाकचिरुचक्रात्मगुनससिपुला॥ॐस्वामहामडागसासमागसास
मसर्वसत्यनाचनशाकूर्वकुलाहा॥नचसर्वबुद्धवाधिसत्वमहर्षिकामसकस्यार्थसपादयकुसर्वार्थसिद्धिददकु॥

[illegible]

४७०
११५

सुखसिंहवकुममसर्वसत्त्वानाचनप्रस्ताह॥ नात्ररयात्तुनरयात्तुअग्निरयात्तुइदकरयात्तुवितरयात्तुगप्रयात्तुपनचव
रयात्तुइहिरयात्तुदनिडरयात्तुदधनिरयात्तुअकालमरयात्तुधननीकमरयात्तुइकापाररयात्तुनाजदपुरयात्तुचडम
गरयात्तुनागरयात्तुवियुतरयात्तुफवात्तुकरयात्तुसूपत्रिकरयात्तुसर्वस्यपदवोपस॥ अणयात्तुगग्रहरयात्तुदवरयात्तुय
रयात्तुनाकसुत्तुगभवत्तुदसुनरयात्तुगत्रुत्तुत्तु४किन्नरग्रहत्तु४महानग्रहत्तु४मनूयग्रहत्तु४अमनूयग्रहत्तु४
नग्रहत्तु४युगग्रहत्तु४पिगाचग्रहत्तु४वृक्षाग्रहत्तु४एतनग्रहत्तु४कटपूतनग्रहत्तु४सुकुटग्रहत्तु४उरुमागुग्रहत्तु४
याग्रहत्तु४अपमानग्रहत्तु४आज्ञानकग्रहत्तु४आकिनिग्रहत्तु४ककआकिनिग्रहत्तु४नेवविग्रहत्तु४आमिकाग्रहत्तु४सक
नीकाग्रहत्तु४मार्तुनन्दिग्रहत्तु४समिकाग्रहत्तु४समिकाग्रहत्तु४आलवनग्रहत्तु४केतवासिनिग्रहत्तु४कटकटवासिनिग्रहत्तु
सर्वग्रहत्तु॥ २१ ॥ आग्राहनि॥ ४गर्हाहनि॥ ४त्रिनाहनि॥ ४मात्साहनि॥ ४सिंहानकाहनि॥ ४वाताहनि॥ ४विनि
काहनि॥ ४असूयाहनि॥ ४सोदनिकाहनि॥ ४विक्राहनि॥ ४चिराहनि॥ ११ ॥ अकषासुवषासुवग्रहाहनि॥ विद्याकिंदया

११५

मसिना कित्रयामिवर्जनपनि वाजन रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ ठाक ठा किनि रुता विद्या चिन्दया मसिना कि
त्रयामिवर्जन ॥ वृक्ष रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ शुक्र रुता विद्या चिन्मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ ना नायन रुता
विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ महापसूप रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ महाकातर रुता विद्या चिन्दया
मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ मातृका रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ कायाति रुता विद्या चिन्दया मसिना रुता
मिवर्जन ॥ सर्वत्र रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ पदसि रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ अथवन रुता
विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ कोमाति रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ यमाति रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्र
यामिवर्जन ॥ कृतनाग रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ कर्क रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ विनायक रुता वि
द्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ कृमातरुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ वर्णपति रुता विद्या चिन्दया मसिना कि
त्रयामिवर्जन ॥ चतुर्माहा रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ चतुर्गुणी रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्
न ॥ गन्त रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥ ज्ञेयकनमध्वक सिधिकल रुता विद्या चिन्दया मसिना कित्रयामिवर्जन ॥

[illegible]

५५ ११११

[illegible]

इष्ट इष्ट चिह्नो द्विष्ट चिह्नो पापापाप चिह्नो कृपिकृपित चिह्नो अमृतामृत चिह्नो नष्टो नष्ट सर्व सत्त्वाना के नष्टो
कूर्वक कूर्वक गत पक्ष उ सन दार्शनं यक चिह्न यक ग्रह ४ ग गोहना ४ ग र्हाहना ४ नृधिराहना ४ वसाहना ४ मानसाहना ४
मदाहना ४ मार्गाहना ४ ग्राहाहना ४ निविकाहना ४ वत्पाहना ॥ मा साहना ४ गन्धाहना ४ पुष्पाहना ४ धूपाहना ४ दिपाहना
४ रुताहना ४ आरुताहना ४ विकराहना ४ मूत्राहना ४ चिह्नोहना ४ पूजाहना ४ खगाहना ४ स्तम्भाहना ४ सिंहानकाहना ४ दागा
हना ४ विमिकाहना ४ ब्रह्माहना ४ सप्तनिकाहना ४ पापचिह्न ४ इष्ट चिह्न ४ नोडचिह्न ॥ ३९ ॥ देवग्रह ४ नागग्रह
४ यक्षग्रह ४ नासग्रह ४ गन्धर्वग्रह ४ असुरग्रह ४ गरुडग्रह ४ किन्नरग्रह ४ महानगग्रह ४ मनष्यग्रह
४ ब्रह्मनष्यग्रह ४ मनुग्रह ४ पुनग्रह ४ रुद्रग्रह ४ पिशाचग्रह ४ कुम्भग्रह ४ पुनग्रह ४ कर्पूर
नगग्रह ४ रुद्रग्रह ४ उगमग्रह ४ कायाग्रह ४ अस्मानग्रह ४ आकाशकग्रह ४ आकिनीग्रह ४ कनकाकि
नियग्रह ४ अतिग्रह ४ समिकाग्रह ४ गामिकाग्रह ४ सकुनियग्रह ४ मातृनदियग्रह ४ कस्तूरामिनियग्रह

धनमी

१५७

त० आनेवेनगहन०॥ कुंममिनिगहनसर्वगहन०॥ २२ ॥ सर्वकना० चकारिका० ठिनि यका० तगीयका०
चतुर्थका० सफाहिका० अर्द्धमासिका० मासिका० देवमासिका० अर्द्धदेवमासिका० मूर्द्धिका० निश्चकला० विषजाना०
हगना० अर्द्धकला० पिसाचकला० मानूषकला० अमानूषकला० वातिका० ऐहिका० अस्थीका० सानिपातिका० स
र्वजला० मिलावहिका० चापनयकुममसर्वसत्वाना०॥ अर्द्धरुचदकं॥ आनाचकं॥ अग्निनागं॥ नासात्रागं॥ मुखनागं॥
कण्ठनागं॥ हृदयनागं॥ गत्रयहं॥ कनकगुलं॥ दन्तसूत्रं॥ उग्रसूत्रं॥ हृदयसूत्रं॥ मर्द्दगुलं॥ पार्श्वगुलं॥ वक्षिगुलं॥ गुल्फगुलं॥ यानिसूत्रं॥
पङ्कनसूत्रं॥ उदरसूत्रं॥ जघासूत्रं॥ पदसूत्रं॥ अगपङ्कगुलं॥ कापनसूत्रं॥ चापनयकु॥ २३ ॥ हृत्पुत्रवगुलं॥ शक्तिनि
हृत्पुत्रकण्ठकिटिहृत्पुत्रयितकपिहृत्पुत्रगुलं॥ नगपाम० वेसर्पः॥ नाहनिगं॥ श्वः॥ स्वासः॥ कासः॥ नागः॥ मूर्च्छाः॥ गत्रः॥
विषया॥ अर्द्धरुचदकः॥ मानमनिः॥ कनकवेनः॥ काकानः॥ कानः॥ मृगः॥ श्वः॥ कविधिकसर्पः॥ नकलसिंहः॥ वाद्यः॥ अरुः॥ चरुनः॥
मखलः॥ तंकेनेमीवकायिका० अपनयकु॥ २४ ॥ अर्द्धमासिकानेपठमहावतागिनी० समहपण्गीनामहाविद्या॥ ना॥ हनू

१५७

नृणां वितया व द्वा द ग या गाना एत न ॥ प च द ग या त ना ए त न ॥ वि द्या व न्ध न क ना मि ता ना न्धं क ना सि ॥ सर्व वि द्या व न्धं क ना मि
त य था ॥ अ न त्रे २ अ च ने २ ख र व मे २ वि र व द श्वी त्रे २ सो म २ ग न के २ द न क व न्ध न व न्ध २ व न्ध नि व न्ध पा नि हं ह ॥ ॐ हं हं हं हं हं ॥
ॐ व न्ध पा नि व न्ध २ व न्ध पा नि स र्व दृ ष्ट वि द्यु वि ना य क ना हं हं हं हं हं ॥ ॐ २ मा स र्व स त्वा ना व स्वा हा ॥ ॥ य ॐ मा स र्व न था ॥
ग ना ष्ट गि नि ता न प त्रे ना मा प ना त्रि ना म हा प त्रे गी ना म हा वि द्या ना ह् ॥ ति रि त्वा रु न प त्रे वा व न्धु वा व त्क न वा का म ग ना म्वा
क र्त्तु ग ना म्वा रु त्वा रु ध न पि ष्ठा नि ॥ वा च पि ष्ठा नि ॥ अ न्ध द न्त कु मि ष्ठा नि ग न न्त कु मि ष्ठा नि ॥ वा च पि ष्ठा नि ना का न म र्त्तु
यं ह वि ष्ठा नि म न्त्र अ प च तु ना सि ति क त्वा का ति नि यू त स न्त स र्त्तु ॥ ति गा ती जा ती जा ति स न्त्रा रु वि ष्ठा नि च तु ना सि ति व न्ध व न्त
का ति नि यू त स न्त स र्त्तु ति वि द्या द व न्ता नि ॥ तं स न्त न्त स मि न्त न्त स न्त्रा व न्त न्त गु पिं क ति ष्ठा नि ॥ च तु ना सि ति व न्ध र्ति किं क
ना नि स न्त पि ना न पि ष्ठा नि ॥ न्त्रा म पि पि था रु वि ष्ठा नि म न्त्रा प च क दा क्ति त्र य न्त न्त्रा न्त्रा स त्व न्त न्त त्व न पि गा च त्व
न पृ ष्ठ न त्व न क ट् पृ ष्ठ न त्व न म नू ष्ठा त्व न द्वा त्रि द त्व न पृ ष्ठ नू र वि ष्ठा नि गं ग न दि वा न का स मा ना र्त्तु म या ना म त्वो न्त्र

महाप्रणमिनामिहविद्यानहिं॥महतासत्काननपुवगयह॥एवमित्तमात्रनदगगभनकृत्वाहविषानि॥सत्तेनूपदवपसर्ग
पायासापेनचक्रानिसुमममिषानि॥यस्मिन्विषयेकंदसर्वतथांगेनादिचसिगतपदनामपनाजिगामहाप्रणमिनामहावप
रागीपुचनमिषानिधनयषानिवाचमिषानि॥महागोनवसतस्मिन्निविखयचकासनकातदवावर्षधनामोत्सुकमाप
त्सुतिनयथा॥अनकातागनागा॥वासुकिनागनागा॥गखयानागनागा॥ककर्ककनागनागा॥तकनकातागनागा॥पक्षनाग
नागा॥महाप्रयातागनागा॥नरापयनागनागा॥अनचतागनागा॥अनकातनकातवर्षधनामोत्सुकमापत्सुक॥का
ननकातगर्जयिषानि॥वर्षककमजलीगल्याकृत्वाकानाका॥नासिगतपदामूद्रावध॥वृद्धागनकहवा॥नमानत्रय
य॥तयथा॥कुंअमसुनययस्वाहा॥अस्माधनी॥अयमूपचानक्षमनूषमानगमानवापसमानवाचिनिकामहिःसिखित्वा
कमवभयितया॥अनषांसर्वसिद्धिःसर्वनामपदवाणिबुद्धयनाममिषानि॥॥कुंइंइंइंममसर्वसत्त्वानादीनशकनस्वा
हा॥कुंवज्रयानिहंरु॥कुंसर्वतथागनाफीषश्रवलाकिनमूर्धितनासि॥कनरपुनरवकवद्वरविधनरुक्तिन्दरति

आवाहना से से स्थात संग्राम वा उपद्रव न च विवाद वा सर्व विजयि ना ह विधि नि ॥ रग वा ना ह ॥ किमकु नाय न रिता शि स म
या न स्वे ना नाय न माया विस्मह व नामि ॥ लून क माया जाल न सत्वा विहं य सि स ग्राम विजय पुग्न म नि प च्छ सि ॥ ना नाय न ख व
माह ॥ ४० ह र ग व न का मा सू न दु ॥ सू न माया रि ना ह ॥ म माय दे वा ४ के वि द्वि ध सि ना ४ न द्द ग य रु र ग व न ध र्म प र्या य ॥ य न स त्वा स
ग्राम विजयि ना ह वि धि नि र ग वा ना ह ॥ ४० क र्म पूर्व ना नाय न अति रु ध नि म ध ना हि न क प र्व न त त्रे ग्रा ना म ना गा व ह व ४ ॥
न न का ल न न स म य न वि र ग्ग य ना ना म र ध ग ना र ह न मा स क वृ द्धा वि द्या च न न स प न्ना ४ सू ग ना ल क वि द न रु न ४ ॥ ए न
रु द म ग्ग थि सा सा द वा ना च म नू ण ना च वृ द्धा र ग व ना वि र ग्ग य ना प्पा स का सा ते ॥ म या ४० मा नि म हा मा या वि जय वा हि नि ना म
वि द्या म कु प दानि उ गृ ह्णा नि क्ष त्री ना नि वा चि ना नि प र्य वा ण्णा ति ॥ अ नू मा दि ना नि प न स च वि रु न न स प का ति ना नि ॥ अ सा धा न
॥ ४५ पु र ण व न ना य ॥ न क चि क्क र्क न वि ति णा त य न्न चो न र य चा त्ता न्न व ति व र्ष ग न स ह मा ति ध र्म न ना ज का न यि त्या य चा त्ता स र व न
न ग ना न न म्हा न या ग्रा मि व धा न ॥ ४५ पु र ण व न ना न कि प त्रि ह्ना मा न्ना ना म वा धि स त्वा य क र्ति ना ना व ह व ४ स फ न त्त म न्वा

११७४

960

गठ३ लाहूयासकनलाकठेलाबुमाहूपिरुवान्पूर्वदा नपात्रीमगनिखन्दनसर्वसत्त्वानथहितारिठनायकन॥ नवस
धात्रांमातिरुवान॥सर्वसत्त्वसुखासुखिनसर्वापेकननसमदावरुच४गयथा॥नानायनलसाधन॥३एणवनेअनेकक
लगगगानिदानपात्रमितासुखानपनिपुनितवान॥यचपवा नागभयकागधर्वासूनागनूठाकिनेनामहानगभविद्याधनामन
याअमनषाशाहूकलातिमिष्टनि॥नचनेपतिपक्रमहहनि॥चतुखडिकत्यसहमाक्षिपाद्युखिकल्पयथावेतन॥गह
या॥गभन्मृत्वस्त्रपयित्वाचकनमनिअनूतनायासमसुखदाहहाकं॥नूतनादवगुनूसहने॥ननानायनगहहंमहा
मायविजयवाहिनीमनुष्यनिरुवनि॥ ॥ नमः३पुष्पानूगतपुतिष्ठितत्य३सर्ववृधवाधिमत्वेत्य३महामूढामरुपड
त्य३॥गयथा॥मायमहमायमहमायाधानलि३यसामहमायात्रुप॥ग्रम२ममसर्वसत्त्वानाचयविनूयकचिकयनि॥सर्व
इष्टसत्त्वानागानूत्रामय२माहय२मूर्च्छपय२निधंसय२मन२महामायअतलतमहामायागतसहस्रमुखसहगित्रसहश्रुम
वातिग्रनगुसर्वतथागठहृदयगर्भेअसिधनूपसूपासत्त्वमनकनयसकीनमृत्तिहस्रमदनचकहस्रचहहिरुगवतिस्व

॥ नमः ॥ कु कुमनतिस्वित्वा ना हा पवनसेन क नूप लमाया का नन पक्षु दयमा ॥ १ ॥ न क ह दय न ना गारुव कि धु वगे ना नाय तपन
 ॥ १६१ ॥ से न विध्य सिमा ॥ पु पत्रा पि ना ॥ क चित् सु कि गारु मो य नि प ति ना ॥ न ये व प ति ना ना ना य न ध ॥ कू ग ले के र्म द ॥ ७ ॥ न सा स
 ये न वां न च गे या त्रि वि ना ना य ॥ का यी ॥ ८ ॥ न ना ना य त ध न ति पु रा वा ड ष्ट वा ॥ य थ ख न पु न ना ना य ॥ मा नि ध न नि मः
 कु प दा नि सू चि तु के न ॥ ९ ॥ न वा ए दि न मि वा ला न उ च्चा न य ॥ १० ॥ स च व प ध न न क र्मा म पि ण प ल ॥ ११ ॥ न यि त्वा प ॥ १२ ॥
 न य ति न म् ॥ १३ ॥ ना ति स्म ना र व ति सर्व स त्वा पु रा गी ॥ ना वि न ध न ॥ १४ ॥ कू ग ले ष्ट रि न न थ ना कू ग ले पा पि ष य थ ख न पु न
 ॥ १५ ॥ ना ना य न ध न ति न्म न य मा ॥ १६ ॥ कू ल पू षा वा कू ल र हि ना वा ति रु ॥ वा ति रु नि वा उ पा ग वा वा उ पा सि का वा ना ॥ १७ ॥
 वा ता ग पू षा वा वा म् ॥ १८ ॥ वा म न का न ग न ॥ १९ ॥ स ध म् ॥ ना न का र सि रि ना य सि थि स्तु न य म् ॥ २० ॥ वा पु न् ॥ वा वा का न स्य ग न
 नि य ना ॥ २१ ॥ ति स्म ना र वि ष्य ति ॥ २२ ॥ वा पि सु च सं व त्री चः ॥ ना ना य न ॥ २३ ॥ का थ र्था म ति रु त्वा गं ख च कू ग ले व न मा ना
 म् ॥ २४ ॥ न प नि य र ग व न ति प द कि नि रु त्वा गं व न मा पु र ति न व ना रु त्वा गं व नं ग म य या ती ति स्म ॥ २५ ॥ ॥ श्री ह्य सून

॥ १६ ॥

५ वा नाथिष्ठ ॥ १ ॥ स्वतः रुतः ॥ शिवगो ना ज्ञायात्तना कान्ति नमस्तुते ॥ अल वः सर्वधर्मीनां रुत धर्म्यका सक ॥
 धर्माधर्मविष्का सि सर्वधर्म नमस्तुते ॥ अथना नाय नाएगव न्तुनेमसाधुगव नि नि ॥ रुत्वापकापका ना रुत
 ॥ १ ॥ दमका ॥ ॥ च नरुगवाना रुम ना रुव दवाना गभयकग र्वी सुन ग उं नै किन्न नाम हात्र ग विद्याधना सनापये
 ॥ १ ॥ साचमका ॥ ॥ व निपु र्व सदवमान रुव सुन ग नूत ग र्वथ ला कोरुग व का रुखितं म स्य न न्द नि नि ॥ ना ना
 यनय निपु च्छु ब्राह्म्य महासाया विज्ञय वाहानि नाम धात्र नि समा फ ॥ ॥ ॐ नमो रगव न्ते शार्य महातज्जवा
 नाथे ॥ नमो रगव न्ते शार्य पना जिने ते ला ब्रुमायु मरु विद्यग्वे नि सर्व रुत रुपा वह मरु वरु वेजा सन न्द जिने न्द
 पना जिने रुकलन युना मनि विखण धनि ना रुव नि कुा धनि कला ति नि संद्रा सनि मान नि सुप ल्यद नि पना रु य
 विज्ञय ॥ रुम नि रुम नि माहि नि वरु वा नाः वरु जा गिति काम ग्व नि रुव रुव नी ॥ नयथा पठु ग्रह धर पा ॥ न रुतिः
 निर धून २ वरु रु रु ॥ १ ॥ रुव य २ रुव रु क पा ल धान सि महा पा रु पु विन सा धन न सि न मा ला ग्र रु १ रु धान सि रु रु नि

तत्ति न स त्रा ग ध त्रा ॥ स न म खि म कू टि क त्र ण म यो ख न व न न कू स म म वं व स न न ध नो ॥ मू का ह न य स ह न ह द या ॥ न न
 त कालं वे नि द्य द ग व र्वा ति रु म दि न कू च कू ल द न न न कू टि ॥ सून ने द न ग र ह सि बू ह व पि न ला क न य ॥ न न स न
 न नारु ग व ति पु रु ॥ ४ द डि न म ध प थि म न म हि ॥ वा म न स न ति व षां ख न वि का स मा न व ॥ दि क स मू ख म नू ति न ॥ ४ चि
 क निया ॥ न न ख नो रि ॥ ४ पु द गे च न्दु म लु सि न मा का त धा ला ग न नि ग्ध न कि नू स ख चा धा य मा ना न ॥ वा सि न पा वा ह
 वि चि न य न म मा व ह य न ॥ ४ क्री ॥ ४ म हा मा या ॥ म हा स न स खे न म ॥ ४ वं पा ष धि का लू ला मो ना द व ति धू ने ॥ नि न न न द व न
 रु का ल मू ह र म नु ग णा व र्त्त न न क र्मा ना स न सा स न ख नि च नि ल र न ॥ मा स य प न व म्भ ण पि सि च्छा ति ॥ अ थ रु ष य म च
 न ॥ ४ ज ग ति नारु या वा ष पा न ग्र सि ग्र से न्व वे ॥ स द्वा स न ख नं स धि पि वे स फा ल म कि नं ॥ च तु र्गि ॥ स नू ज गी ने धू न म
 स्थ वि पा म ये न ॥ ४ धि य त्रि का मा नु स ने म ॥ नि वा स धि ॥ मा ष मा न पु रु ति न व र्त्ता पा पु त्प नू ल न ॥ ४ म मा म य या ग न स
 ज द गी न नारु वे न ॥ नू न का कि स नि र्घा ष ॥ ४ ज य न म धू न ख न ॥ ४ सं स या न ह क रु वां स वि ना र ॥ ४ स क य ॥ ४ ति ग्री स न स ति
 ना म धा न ति स मा फ ॥ ॥ ॐ न म ४ स ध र्म पु लु का ये ॥ ॐ व ज च ण ॥ ४ ॐ न ४ २ प न ४ २ स प न ४ २ स र्व वृ ष ष ॥

हू नमहावाध इव तवाध नि य ईं रू स्वाहा ॥ ॐ ति श्रु नि पात्र मिता नाम धा न तिस माफं ॥ ॥ ॐ न मा वी र्य पात्र
मि ताये ॥ ॐ ज मा घ सि न म हा वि र्य पात्र मि ता य ज धि प ति स त्व त्र म नि ज न र म हा ज न म हा मे द्री का नू नि क स र्व स
त्व व त्स न म हा के नू ॥ ४ सर्व स त्व क्र म ना य ईं रू स्वाहा ॥ ॐ ति वि र्य पात्र मि ता ना म धा न तिस माफ ॥ ॥ ॐ न मा धा न पात्र
मि ता ये ॥ ॐ न मा स र्व ग थ ग न ज मा घ म हा का नू नी धा न पात्र मि ता स मा धिं स र्व स त्व वि मो ड श्रु प क म ॥ ४ चू न र २ धू न र २ हू र २ रू स्वा
हा ॥ ॐ ति धा न पात्र मि ता ना म धा न तिस माफ ॥ ॥ ॐ न मा प रू पात्र मि ता ये ॥ न मा ज मा घ पा स म हा प रू पा य स
न ॥ ४ धि म हा रू धि य स न र म हा प स न र स म क व धि ज्व त कि न व श्रु पा य रू पा य द र्थ द न नी म हा प रू पा स धा न तिस त्रु २
म हा त्रु २ रू स्वाहा ॥ ॐ ति प रू पात्र मि ता ना म धा न तिस माफ ॥ ॥ ॐ न मा रू ग न्य ष धा न मि ता ये ॥ ॐ न मा
ध र्म का य स का ग का य नि र्म नि क ये ॥ न य थ ॥ ॐ दान पात्र मि ता गि ल पात्र मि ता श्रु नि पात्र मि ता वि र्य पात्र मि ता धा न
पात्र मि ता प रू पात्र मि ता स र्व ध र्म सून्य २ म हा सून्य ना य वा धि र म हा वा ध य ईं रू स्वाहा ॥ ॐ ति ष धा न पात्र मि

कानाम धनं तिसमापं ॥ ॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
ठूनि चन्द्रनरगवोनां नाम धनं तिसमापं ॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
पापं पत्रिभ्यः यानुचतुर्वर्गस्तपापमिति ॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
वमशां नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
मर्द्धतुयादग विरिहिसने ॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
गवननः ॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
मिषातिः नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः
॥ ॐ नमस्तस्मिन् नो न धा ग कानां सम्यक् वृद्धैर्दक्षिणां ॥ नमः ॥ चतुर्वर्त्तु चन्द्राहाः

[illegible]

॥ वली ॥
॥ ५६ ॥

हिमांसनभागं ॥ गकिहिनमना ॥ च सर्वपापसमवितं ॥ त्वं विना नान्यमदवित्रा हिमांसननागं ॥ ॥ गेनीलक्ष्मी महामाया उ
मादविसृजस्वति ॥ सर्वस्वमवरुमात ॥ गहिमांसनभागं ॥ गभचन्द्रसधूप ॥ चन्द्रनादिहिनवच ॥ विसृष्टपत्ननसह ॥ वा
स्तुतं न ॥ अष्टम्या च बुद्धसांच ॥ १० ॥ त्वन ॥ ४ ॥ मासे ॥ सिधिमप्राप्ति नाशक्यार्थिवालय ॥ मा ॥ अर्थिलगमा ॥ अंधनाथितद्व
नं ॥ विद्यार्थि सह विद्या ॥ ४ ॥ कव्याकलनादिक ॥ १० ॥ दप ॥ १० ॥ स्तुतुपठि स्तुतुसंगमपुत्रि ॥ गतन ॥ ४ ॥ कस्य गक्रययानि
सदापुष्टावजायत ॥ पिदामापिसुधनजापदानत ॥ अरुयात ॥ १० ॥ दप ॥ ० ॥ स्तुतुगुरुनगसय ॥ १० ॥ निउयगा ॥ स्तुतु
समाफं ॥ ॥ १० ॥ नम ॥ ४ ॥ अचि न्यसागत्र ॥ १० ॥ समा ॥ वृद्ध ॥ १० ॥ नवं मया ॥ १० ॥ कसि नमय ॥ १० ॥ गवान ॥ १० ॥ पनन्दना ॥ १० ॥ ग
जरवनविहृति ॥ १० ॥ मनित्रत्नग ॥ १० ॥ महामय ॥ १० ॥ महाकूटा ॥ १० ॥ मरुता ॥ १० ॥ रिक्तसधनसा ॥ १० ॥ महगच ॥ १० ॥ धिसत्त्व ॥ १० ॥ सधनसा
॥ १० ॥ महगच ॥ १० ॥ नागगा ॥ १० ॥ नसा ॥ १० ॥ नयथा ॥ १० ॥ नन्दनच ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ उपनन्दन ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ सागत्र ॥ १० ॥ च ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ नन
नफनच ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ मनिस्त्रि ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ वनू ॥ १० ॥ नच ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ कक ॥ १० ॥ नच ॥ १० ॥ नागनागन ॥ १० ॥ धु ॥ १० ॥ नच ॥ १० ॥ नागनागन

॥ ५६ ॥

[illegible]

५५५
५५५

महाह्वानावरासग्रीकजा तद्विद्वद्विक्रमवजसहजनेजतमविजनिर्मलगतनकगुर्यपरविनाहयष्टि॥रुनरुनसकन२३३
महन२महापुहविधूतमहामाहाभकात्र॥महाह्वानपत्रिपूर्यमेगुमयुविसनमनकभमिगाम्बुनजतजतजतजत
तजलाभूधत॥बोधाह्वानममदसवलचगुवेसात्रयज्जदगभवतिकावृद्धधर्मगुरुमहपुत्रासि॥सूक्तधर्मममन्वीतग
मिन्नविजमस्तुविपुतविजयपाफनिसधर्मा॥सर्वलाकध्वरुगुपवत्रपवत्र॥अनुरननमपुधन२धिति२धन२गनमन
गनकयाप॥चचचच॥चित्रि२यत्रमवृद्धनमनमहापुत्रापात्रमिहसाहा॥नमोह्वानसागत्रवेनाचनायकथागताय॥कुंनम
॥सर्ववृद्धवाधिसत्त्वसत्यनसेयथय॥सत्र२गिति२सूत्र२नागना॥अव२तिवि२रुव२महानागनागता॥वृद्धसत्यन
हजंरुद्विपुववर्धचत्र२चित्रि२वृत्र२महानागधीपतिनांआगच्छथरा२महानाग॥वृद्धसत्यनहजंरुद्विपुव
वध्वंयत्र२वित्रि२वृत्र२वृद्धसत्यनधर्मासत्यसद्यसत्यनसर्वनागनांवाहयीषति॥मेहचिरुनेकत्रनोचिरुनउप
काचिरुन॥सर्ववृद्धवाधिसत्त्वोधिपनसत्यनमयानाग्रयनागच्छमहानागधीपतयसमेनथवेधानावृद्धधर्मा

५५५

[illegible]

६४ न ॥ ५ ॥
१६७

कहाहा ॥ वसुसुधाधिसू न न प्र वर्ष न ह जम्बू दीप स्वाहा ॥ गङ्गासु न प्र वर्ष न ह महानाग ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ चतुस्रहा ना
जम्बू न प्र वर्ष न ह जम्बू दीप स्वाहा ॥ जम्बू महा नाग सु न प्र वर्ष न ह महानाग ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ महा नाग वर्ष न ॥
अगाप न सु न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग ॥ सकृदागमि ससु न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग
॥ जम्बू नागमि ससु न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग ॥ जम्बू नाग न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग पु सु क
वृक्षसु न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग ॥ सर्व वृक्ष वाधि सत्त्वसु न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ वर्ष न महानाग ॥ सर्व न
अगा नां सुधाधिसू न न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ सर्व न नां सु न समय न सर्वा पड वा गि जम्बू दीप स्वाहा ॥ सर्व नाग नां
सु न प्र वर्ष न ॥ जम्बू दीप स्वाहा ॥ सर्व यज्ञा सु न न न सर्व सु स्वाहा ॥ सर्व गन्धर्वा नां मरु ना प ह न न सर्वा
पासा पु द वा नि म नू ष्मा ॥ स्वाहा ॥ सर्वा सु ना नां सु न वि नि व र्त्त य न सर्व विष म न नृ ना ति स्वाहा ॥ सर्व गन्धर्वा नां ससु न मे
ठिक नू न सर्व नाग नां य हि ह जम्बू दीप महा वर्ष ना उ स्र ज य स्वाहा ॥ सर्व कि ना ना नां सु न समय न मा य पु हा द य

१६७

न सर्वसत्कान् स्वाहा॥ सर्वमहानागसंघनविधिना वक्तुं वर्षा नार्हत्तु गगनपचवर्षाचन॥ निस्वहा॥ सर्वमनूषा
भंसनपनिवानयनसर्वमनूषान् स्वाहा॥ कनर२ किनि२ कून्२ दन२ दिनि२ इन्२ नद२ निटि२ नूद२ गुग्रीधुवा
हिनिमहासद्यवृद्धनमद्यमद्यमविरुप॥ तमद्यसिनिमद्यगर्भमद्यगर्भमद्यपुहमद्यपनिवातविपुत्रम
द्याहृषि॥ मद्यगर्भपविनससागयससागमसागयसहृत्रगिनिकन्दनतिवा सिनिनागमायुहगवकिमहा
मद्यसि॥ मद्यगर्भतिनससिससर्गमहावातम॥ तुलि॥ गच्छने॥ महा नागविष्टुतिरुगवतिपा॥ षष्ठ्युसायनव
निनि॥ वृद्धसंघन॥ हृजवृद्धापि स्वाहा॥ यत्र२ शीघ्रनीघ्न२ शिष्टिनि२ शूम्२ शूम्नवगार्थमहामद्यमातिनिविद्य
स्वा॥ लायपमालि॥ सर्वजगत्तमक्षत्रनिमद्यपदवस्तु॥ नसि॥ सर्वविषाग्र॥ गच्छने॥ मद्यवृहवाहिनिगजनिनिनाद
निनिदि॥ रुहगवतिना॥ गवतिनागगनस॥ दि॥ नवापय॥ दवि॥ महासद्यमानिनिविशुक्ता॥ कलायमालि
नि॥ न॥ थागनसंघन॥ सर्वनागवर्ष॥ नमाविलम्ब॥ नरुज॥ मदीपस्वाहा॥ यत्र२ यिनि२ यन्२ गन२ जिनि२ हन२ सन

॥ ध्यानपी ॥
॥ १६८ ॥

समस्त २ ग ॥ १३ ॥ उय शंग ॥ २ गिदि २ हन २ हिनि २ मू २ नू २ कत् २ किनि २ पुत् २ हन २ दह २ पच २ ग ॥ २ मर्द २ पुमर्द
२ सर्ववर्ष विष्णु हन २ मे प्रया रूप य कि स्वा हा ॥ बूध २ विबूध २ हन २ पापे सर्व सुखानामपि कथय ॥ पू ॥ सर्ववृक्ष
ना ध्यानपी धन सुखमगु ना गु पाप ॥ महा हा ना के सु क धर्म सु ल पु ति ह महा या ना ध वि न ता क ध रु व नि वृ ध मे य
श पु ल य सर्व वृक्ष गु ना ॥ १३ ॥ के ॥ य गा म न पा गु ल वा सि नि ॥ धू धू न ॥ धू धू न ॥ ग म ग म क र न पा प ग न क मा न स
सर्ववर्ष नि विष्णु न विष्णु क म य स्वा हा ॥ सर्ववृक्ष ग न मे तु वि रु न पा ॥ सु म ॥ शु न क पा नि य म चि रु न या म हा ना
गु ना न सु चा द या मि ॥ न न क प नि क त सा ग न म द्य क ह न म गु ल कृ षा क न ना ग म हा ना ग धि प नि स चा द या मि ॥ पु
ष ह न मृ द्वि प स्वा हा ॥ न व न फ ना ग ना न स चा द या मि पु व र्ष ह न मृ द्वि प स्वा हा ॥ म न सि न ना ग ना न स चा द या मि पु
य ष ह न मृ द्वि प स्वा हा व न ॥ ना ग ना न स चा द या मि पु व र्ष ह न मृ द्वि प स्वा हा ॥ न क ना ग ना न स चा द या मि पु व र्ष ह न मृ द्वि
प स्वा हा ॥ ध न ना रु ना ग ना न स चा द या मि पु व र्ष ह न मृ द्वि प स्वा हा ॥ वा सु कि ना ग ना न स चा द या मि पु व र्ष ह न मृ द्वि प

॥ १६८ ॥

स्थाह॥ मधिति न नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥ न नावत नागनागसंचादया॥ पुवर्षहजम्बुद्विपस्था
 हा॥ योदल नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥ ग्रागजस नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥
 ग्राहड नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥ विष्णुत्मात्तिन नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥
 ममहचूजमनिधन नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥ अवरणस नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विप
 स्थाह॥ चूगनागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्विपस्थाह॥ जवंपुके मूलासुव नागनागसंचादयामिपुवर्षहजम्बुद्वि
 पस्थाह॥ नागनागद्योत्मानसन॥ धूमकूलडग्रनापयच ॥ ११ ॥ विगम ॥ ग्र ॥ सि विज्राहि ॥ धा ॥ न ॥ क ॥ पि ॥ ड ॥ ल ॥ च ॥
 न ॥ ला ॥ त ॥ गि ॥ द्धि ॥ म ॥ ह ॥ रु ॥ ल ॥ क ॥ न ॥ का ॥ र ॥ ग ॥ नो ॥ ड ॥ वा ॥ सि ॥ नि ॥ इ ॥ र ॥ म ॥ ध्या ॥ न ॥ ध्या ॥ सि ॥ वि ॥ नि ॥ क ॥ न ॥ र ॥ ग ॥ न ॥ र ॥ म ॥ हा ॥ ना ॥ ग ॥ ग ॥ ॥ प ॥ न ॥ र ॥ यि
 नि ॥ र ॥ पू ॥ त ॥ र ॥ वि ॥ सू ॥ र्ज ॥ न ॥ र ॥ पु ॥ त ॥ र ॥ म ॥ हा ॥ ला ॥ ग ॥ म ॥ नि ॥ ध ॥ न ॥ दि ॥ नि ॥ र ॥ रु ॥ त ॥ रु ॥ ल ॥ र ॥ वर्ष ॥ ग ॥ ला ॥ म ॥ र ॥ न ॥ स ॥ म ॥ व ॥ त्ता ॥ ह ॥ क ॥ न ॥ र ॥ इ ॥ इ ॥ म्ब ॥
 र्ध ॥ र ॥ म ॥ घ ॥ पु ॥ ह ॥ म ॥ घ ॥ बा ॥ हि ॥ नि ॥ र ॥ क ॥ र ॥ इ ॥ ति ॥ रु ॥ र ॥ म ॥ वि ॥ क ॥ र ॥ क ॥ ध्या ॥ त ॥ न ॥ प ॥ वि ॥ सू ॥ र्ज ॥ न ॥ वि ॥ र ॥ म ॥ न ॥ आ ॥ वा ॥ ह ॥ या ॥ मि ॥ स ॥ र्व ॥ ना ॥ ग ॥ ना

च नाग नाशन॥ अकानगर्जित च नाग नाशन॥ गर्जित च नाग नाशन॥ विघृत्य माचन च नाग नाशन॥ धन
निधन च नाग नाशन॥ अपसात्रन च नाग नाशन॥ सुदर्शन च नाग नाशन॥ विघातन च नाग नाशन॥ महामघ
गर्जित च नाग नाशन॥ महारूसुर एन च नाग नाशन॥ श्रीरुद्र च नाग नाशन॥ अनक च नाग नाशन॥ पाण्डु
न च नाग नाशन॥ ग्रीधन च नाग नाशन॥ इह रिखन च नाग नाशन॥ इह रिनि। नाद विगर्जित च नाग नाशन॥
ग नाशन॥ कम्बन च नाग नाशन॥ आकर्षण च नाग नाशन॥ श्रीकृष्ण च नाग नाशन॥ ग्रीरुद्र च नाग नाशन॥
॥ गङ्गुन सह च नाग नाशन॥ किलिकि लिस्धन च नाग नाशन॥ एस्त्राटकन च नाग नाशन॥ वर्षसुखन
च नाग नाशन॥ महायात विर्कुर्धित च नाग नाशन॥ वाक्पमूर्धन च नाग नाशन॥ तद्रुक्न च नाग नाशन॥ श्रीम
न च नाग नाशन॥ रुद्रकन च नाग नाशन॥ मङ्गल च नाग नाशन॥ मघस्त्रन च नाग नाशन॥ मिथुन च नाग नाशन॥
नाग नाशन॥ मघसंक्षपकलन च नाग नाशन॥ रुक्मिण च नाग नाशन॥ विष्णुर्धित च नाग नाशन॥ वासूकिना च

स्वमानमहासमुद्रमध्येऽसक्तत्रंगगगनमधिष्ठायतत्त्वमद्यप्रलम्बमानदिव्यइष्टपुत्रमूक्षिकाहानसमुद्रमध्ये॥
 नानागमित्रवृद्धविकृष्टिनाधिष्ठातृनूननिर्वाणसमुद्रमध्येऽनथागताविनायकगुलांतकानविचित्रसंदर्भिन
 महानत्त्ववृहसमुद्रमध्येऽसक्तत्रंगगगनलमधिष्ठायमहाभयविकूर्वतस्वत्रमधूननिर्वाणसमुद्रमध्येऽनानात्रले
 दिव्यविगानव्यक्ताएतसमुद्रमध्ये॥सर्वपङ्क्तिगगनमहापूषावृष्टिपुमूर्केनमहासमुद्रमध्ये॥महासमुद्रमध्यमहानिर्वा
 णदिव्यतत्त्वप्रलम्बमानेविचित्रमूकदामप्रलम्बमानसमुद्रमध्येऽसर्वभूतसुखप्रतिमतिरुमहाविद्याननगिखत्रंगगसंछदन
 यग्रमहासमुद्रमध्येऽविचित्रतत्त्वसुप्रतिरामलगगनसंछदनकूगलसमुद्रमध्येऽज्वलासनमहासमुद्रमध्येऽज्व
 लासनमहासमुद्रमध्ये॥गगनमहिकुदयगुसर्वनागनाजान्जागच्छकु॥६०॥महिमृथिवीमलुसगर्जनकुइइइइइ
 गुमहाविष्णुर्गतिपुमूर्केकुद्यदनाकासद्यतकः॥चउचतायकागलगायकामहानानागगगनमसिंयात्महाग
 दानिश्चत्रयम्॥महाध्यापयकुसूधार्यपुवर्षध्वजमृदीपस्वाहा॥घट२घटि२इ२गु२गिनि२मन२च२पट२लाहा

न नाग राजानं सचादयामि अषि सत्पुन हजम् द्विप प्रवष थ स्वाहा ॥ महाम न हिनं नाग राजानां सचादयामि सर्व नाग नां सत्पु
न हजम् द्विप स्वाहा ॥ पुस्तक न नाग राजानं सचादयामि यत्र सत्पुन हजम् द्विप प्रवष थ स्वाहा ॥ अनव न फं नाग राजानं स
चादयामि नात्र सत्पुन हजम् द्विप प्रवष थ स्वाहा ॥ सर्व नागा उर्योप नि सत्पुन वष मां थै दिन स्व थ आग कु थ रा हा महा
नागा ॥ ४ सर्व नागा ह द या नि सचादयामि ॥ अ का दामि स न २ ह न २ ध प २ हा हा हा ही ही ही ज ह हि थ थ थ च च च च न
सर्व जगति आप य थ सर्व सत्पुनि वष थ मह वा ना नू प मू के थ कू कू धू धू पू पू ट ट ट ट नि वा नि नि रु रु नि मा ह नि ॥
गा ३ न पू कू उ अ मि पा ना गि जय विजय स्वाहा ॥ सर्व महाम द्य य र्ज मि द्य न था ग ना नां सचादयामि महाम द्य गी र्ज ना प ॥
ग था ग ना य ॥ महाम द्य स्वर का य ७ न था ग ना य ॥ महाम द्य स क वा य न था ग ना य ॥ महाम द्य फ ल य न था ग ना य ॥ म
हाम द्य वि ग र्ज न स्वन ना ना य न था ग ना य ॥ ४ महाम द्य सं स्वर का य न था ग ना य ॥ महाम द्य गु फा य न था ना य महाम द्य अ
रि ना य न था य ॥ महाम द्य ना द ना य न था ग ना य ॥ महाम द्य गी र्ज ना ना ना य न था ग ना य महाम द्य सू द्या षा य न था ग

गर्भिनि सर्वमद्य विकृतिं हि स कदापि सर्वत्र प्रमापन्न निचक्रव क्रवर्हि हि त्रिंश्वेगिं सप्तत्रिंश्वेगिं सप्तत्रिंश्वेगिं सप्तत्रिंश्वेगिं
विम ॥ अष्टमं सर्वनाग कर्षतिः पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २ पूनये २
महारुणि रूपगया वर्षति सर्वनागसे कदापि स्वाहा ॥ कुं नमा नत्त नयाय ॥ नमश्च ॥ पुनर्वसु नय महायज्ञस्य नापत्त
य ॥ व ॥ २ सूर्यपि ॥ स्वाहा ॥ चित्तकली के स ज न य त्ति व न्ध कार्य ४ पूर्वमवधर्म मोहन क क न अ वि धन न ॥ अ
यं वा गम ॥ तिपति वर्त ४ सर्वनाग नाहृदयं नाम श्यं वाचयितव्यं ४ अथ वक्ति नं प्रिसफाहं ॥ अमयन पूर्वस्था
दिगिगिग्राधो नाम नाग राजा सपत्निवाना आसिखितव्यं ४ दक्षिण सादिसि पत्तग्रीर्ष पस्वत्ताना नाम नाग राजा सप
त्रिवाता आसिखितव्यं ४ पचिम सादिसि श्रव ता समसिखा नाग राजा सपत्तग्रीर्ष नाग पत्निवात्रे नत्ति त्ति खितव्यं ४ उच्चैर्ह
मघ संचादना नाम नाग राजा न वेग्रीर्ष गिग्रापयितव्यं ॥ सपत्निवात्रे ४ नित्रविगान व म्नि ध्रुसर्वी चति लावति ४ क
रुचां ४ नाग नादि मधू नव त्ति ४ विमधू नह नव सफरुति ॥ नाग हृदययन माद्य नाग नय चिग्रापति नव ४ वषध

धनलिख
१७३

नाम के यतु श्रुत्या सांच सद्यमाना॥ अकविद्युच्चकात्रमलासखा॥ स्वस्तिकोत्साविकाताउमत्सामानुषासधरुअनि
चिदिधनिउकात्र॥ प्रवसि॥ कर्हवा॥ नमारुगवतमद्यसखावनाहकोयनथागगायाहंसमयुवृद्धाय
नमारुगवतनमारुगवतमद्यनायातथागगायाहंसमयुवृद्धाय॥ नमारुगवतमद्यदकायतथागगायाहंस
मयुवृद्धाय॥ नमारुगवतमद्यविनदकायतथागगायाहंसमयुवृद्धाय॥ नमारुगवतमद्यनासायतथागगाया
हंसमयुवृद्धाय॥ नमारुगवतमद्यगर्कायतथागगायाहंसमयुवृद्धाय॥ कुं नमारुगवतमद्यनिनीदिना
यतथागगायाहंसमयुवृद्धाय॥ नमारुगवतमांस्वस्तिरुवगुसर्वसत्त्वानामेतीरुवगुसर्वरुतधरुयरुवगु
सर्वनिर्गर्गानां सामानुसर्वइर्गय॥ नमसर्वसिवनशविष्कमि॥ सिधत्वयसर्वतथागतविधि॥ सर्ववृद्धाव
लाकिरुविधि॥ नयथा॥ सुट्टखाहा॥ य॥ कश्चित्तिगिजसाग॥ हिक्वाहिइनिवा॥ उपागकावउपागिकावागु
चिवमुपाह॥ मेयुचिरु॥ मानि॥ नथागनामानिनिखिखागुचिनांसासमेनरु॥ यमित्तासफधपक॥ केकी

१७३

卷之四

22

गोतां महाचिन्तामनि हस्तनसागनगमनश्चाकर्षय २ कर्णयुधं २ मन्त्र २ न २ त्रिं २ त्रिं २ सुर्वतथागनसमयतिष्ठति
 पूमहाउनसागनसं २ यमांसर्वसत्वा नाचरुगवति सर्वपापविमननय २ जय लक्ष्म २ स्फुटय २ विगना
 वल ॥ शहयहननरुं रुं मनुद ॥ शुधनरुं रुं यपुद ॥ उषीषववतकिरुसमनमूष समनेवलोकिग ॥ महामाय
 महाकृताधन २ कृमाद्य विमनश्चाकर्ष २ वागदय २ हन २ समुन २ रुषितनु जमहामूठाविनाकिरुजय २ सिद्ध २
 वाधनि २ सवाधनि २ साधनि २ ससाधनि २ विगमधनि २ हन २ सर्वपाप सर्वतथागुगसमयबाधापुसननु समय
 ध्वनिन ॥ कुपापसर्वकिस्त्रिषहनमनिविसूद्ध ॥ गध २ विमनविकसिगप ॥ कवचि ॥ ननुजषघानमिगाप
 त्रिपुनिशि सर्वतथागनाकीषववलोकिरुस्वाहा ॥ ॐ पूषावतोकिरुस्वाहा ॥ म ॥ रुद्र ॥ निवान ॥ स्वाहा ॥ यमदधुयः
 स्वाहा ॥ यमइरुस्वाहा ॥ ॐ सहनतिस्वाहा ॥ ॐ समुनतिस्वाहा ॥ ॐ सधनतिस्वाहा ॥ ॐ पुत्रिजतिस्वाहा ॥ ॐ नडावतिस्वाहा
 ॐ यमइरुस्वाहा ॥ ॐ सहनतिस्वाहा ॥ ॐ समुनतिस्वाहा ॥ ॐ जयवतिय स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागनमूठाधिष्ठाताधिदिगस्वाहा ॥ ॐ

995

नमः क्रियध्वं सर्वं ध्यागन हृदयं कः क्लृप्त २ धर्म धातुगर्ह सहनममानुसमन २ सं ॥ धय २ मम सर्वपाप सर्वं ध्याग
नमः समना धीष विमन ५ धइं इं ॥ अं वं नृग ४ स्वाहा ॥ ॐ ति श्रार्थ गीचि नाम नितो क खल नाम धान निसमाफ
४ ॥ ॥ ॐ नमान त्रय या य ॥ नमा वृद्धाय ॥ महाको नृनिकायः रुत्रिकाल हृदया यपेन मात्म सम न ध्याग न चिखा
यवे धागु क मूर्त यं सर्वार्थ इ ४ ख क न का नि ॥ ॐ दं सर्व सत्त्वा नां च नृना या सम सुवृद्धाय ॥ दधि पुति धापयति ॥ ॐ
श ४ इं सुग न वज्र गुण ४ स्वाहा ॥ ॐ ति वृद्ध रक्षा न क स नाम धान निसमाफ ४ ॥ ॥ ॐ नमा रुग व न्म कार्य गी य
आरु म न ध्याग गार्ह न स मा सुवृद्धाय ॥ न य था ॥ ॐ प म् २ य आह व सुखा व नि म नृ ग च्छु नृ स्वाहा ॥ ॐ ति ग म् था ध
य कान ग न सु धार्थ अं अं अं रु न ग न ग्रा य न्वा प्र स च्छा र व नि ॥ ॐ ति श्रार्थ प म् आरु न न म धान निसमाफ ४ ॥
॥ ॐ नमा रुग व न्म ॐ न मा ४ श्री न त्र सि रि न ४ न ध्याग न स ॥ ॐ न म ४ श्री सु व न्म पृ षा ह ल न ग्मि क नृ नो म न ध्याग न
स ॥ ॐ न मा ४ श्री महा दि प न्ना ना न म न म न थ ग न स ॥ ॐ न म ४ श्री नृ चि न क नृ न म पा धि स त्व स ॥ ॐ न ४ श्री सु व
म

नाउगन्धर्वगनयन्प्रहृतनमस्तुदिति हृत् कानयन्कुपमर्दनी ॥ प्रहृतिदयदन्नामसिखिहाला कलहसे ॥ नमस्तु नमः
हाद्यात्तमात्तवित्रविनासनि ॥ हृत्कृतिहृतवेकोकसर्वसंगी ॥ निसूदनि ॥ नमस्तु नमस्तु मद्राष्ट्रहयागुति विरुषित ॥ हृषिता
गषदिक्कृति कनख कनारु ॥ नमस्तु मृदिता गोपमूकाद्रिफमात्रि निरुसत्पहसन्तु गात्रा मात्तला कवसकात्रि ॥ न
मस्तु मन्तुरुपात्त एत गोकर्षक ॥ मन्तुरु कटिहंका नमस्तु वापद विमन्वनि ॥ नमस्तु सितव ॥ पुष ॥ इ संमूकारुन ॥ हस्त ॥ अ
मिगात्रा जगत्तासून किन ॥ ध्रुवं ॥ नमस्तु कर्ण गगु कृका नामात्ता नमस्तु नमस्तु मृदिता वद्वत्रि एव कविना
गति ॥ नमस्तु कन गत्राद्या न चतु ॥ हन हन नरु कृगईका नमस्तु फपा गात्र हृदनि ॥ नमस्तु गी वगु रगम नमस्तु निर्वर् ॥ गम
चन ॥ स्वाह ॥ पुष ॥ वसूक मरुपा न नागमनि ॥ नमस्तु मृदिता वद्वत्रि एव मद्राष्ट्र हृदनि ॥ दगम मद्राष्ट्र पद न्या सविषाई कात्र
दिपित ॥ नमस्तु नेपा कापात्र हंका नवी जिगमह न ॥ मन्तु म ॥ केलाग मद्राष्ट्र वनय चात्रिनि ॥ नमस्तु नमस्तु नाका सहत्रि
॥ क कसि ॥ हन द्वि नृक हृत्कात्रा मद्राष्ट्र विरुषितासनि ॥ नमस्तु मन्तु गना यन्तु न किन नमस्तु विन नृवद्वम

अनमः
१७६

दिनाश्रितेति ४ स्वप्ननासति ॥ नमस्तुभ्यं कर्तुं सुखं नयनयुतिराखन ॥ तद्विद्रुक्तं गुह्यं विखसद्गलनासनि ॥ नली
नलीविन्याससिदगकि समन्वित ॥ ग्रहवतः यज्ञाद्यनागनियवनेन ॥ मनुमूर्तिमिदं स्मृतं नमोस्तु कविगति
यश्च ८० त्वायसाधिमानेदवाहकी समन्वित ॥ सायमापातनूत्वाय समननमर्वरययुहा ॥ सर्वपापमुसमनं
सर्वशक्तिनासन ॥ अश्लेषिका एवमुक्तं सफलितं नका निहि ॥ अस्मिन्महत्त्वमासायसेन बोधपदं व्रजत ॥
विखनस्यमहाध्यानं स्मृतं वार्थजंगमं ॥ स्मृतं अत्यन्तं यज्ञां किं स्वदिनं पितमववा ॥ उग्रहस्तविखेनानायनमोहि
विना ॥ गत ॥ ॥ अष्टमं चैव सत्त्वा नादी विस्फातिवर्हि ॥ पूयकामानरुत्तुधनकामानरुधनं ॥ सर्व
कामानवाप्तिमि नविद्येपुनिह न्यसा ॥ अतिगीसम्यक् वृद्धवेनाचनराखितं रगवत्ये न्यायना दवाय नमस्तु
कविगतिनामस्तु समाफ ॥ ॥ नमः श्रीमहाकालाय ॥ निलवर्णं समानुधं युत्वाली टंचगुर्जं कर्हि क
पालवर्णं चैव स्वर्णं धृतं स्वानं गमु रज्जुनमकुपुं संश्रामा यद्वन ॥ साधयमनुविधानेन महाकालमहामति ॥ ॥

१७६

32

नया जगत् कर्तुं मरुतु मंगलान्नमः कन्या गणेशस्य विग्रहः स बभूवुः स गणेशः सूर्यः ॥ ध्वजस्तु सिधयका दिनशत्रु-
लिलितं विष्णु महाविहाराववाचार्यः श्री कूलधनेन धनं धनं वायास्तु ॥ ॥ नयतिष्ठतु विनैः कृतं ॥
निःश्री कूलधने कायवाग्रीचक्रविलसा मश्रीगुरुलक्ष्मिः लनश्री धनथकः लनश्री रथकः सिधनथकः ॥
नललाक्ष्मि या धर्मचिर उत्पत्तिश्रीः नलसि संग्रहपुस्तकदय काशसंपूर्ण या नास्तु ॥ ॥ गंधवा मगुधवा-
ममदास्तु नदियः ॥ ॥ ६ गुदं वेगकस्तु कया श्रुमिस्तु कवास्तु कस्तु नकिंशाना नथ पतिस्तु नद कुला-
स्तु कनेन कनथ विनाश नथ संधिवा ककाशः ग्वगुलिया कन्या यकाशः ग्वाव नथिस्तु नाशः ग्वाव ॥ ॥ ककाशः चक्रविल-
दिन कानरवः कूलधनान्नमः कस्तुलाशः वांशनेन कस्तुलाशः कस्तुलाशः दद कान ककाशः ग्वाव लसं उग्र अगु-
रुन चासंगयाशः काननेन कनथ विनाशः कवस्तुलाशः सविष्टः ककाशः ग्वाव लयात न्य यकाशः ग्वाव लनस्तु कका-
वकुपिस्तु नूद व वृगविष्टः ककाशः ॥ ॥ स्वसिनेन न्य नमजि याशः ग्वाव लिनं नद वविष्टः ककाशः ॥ ॥ श्री

138

卷之六

असंख्य

विष्णुदेवेसाखरुपुयावतुषिमंगुवा ८ लक्ष नूतन
विविन्नविक्रमसाहसवयातनागालिषकविले ॥
इमहा नागपि नागसूयनाहनरुल ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

नामनन्दमहा नागपि नागसूयनाहनरुल ॥ ॥
॥ श्रीवेङ्कटेश्वरारिदारा नूतन ॥ ॥

॥ ॥ ॥

॥

सं. २०१
201
AGHA ARCHIVES

१०८



आम बम

201